श्री सच्चिदानन्दाय नमः

सन्त-वाणी विलास

जीवनराम गुसाईंवाल

इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध सन्त-महात्माओं के लोक प्रिय भजनों का संग्रह किया गया है। यह सभी धर्म सम्प्रदायों का भक्ति साहित्य सगुण, निर्गुण, द्वैत-अद्वैत आदि का संगम है।

"संत पीताम्बर दास जी महाराज"

1936 में स्थापित, विश्वविख्यात, चिर-परिचित, पुराना प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006
फोन : 3273220, 3261030, 3279417, 3264792

शोरूम व ब्रांच—जी-1, शक्तिदीप, 2, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-2,
फोन : 3266864

विषय-सूची

भजन	पृष्ठ

भजन	पृष्ठ

ॐ

श्री सच्चिदानन्दाय नमः

ज्ञान-वैराग्य-प्रकाश

वेदान्त शास्त्र

प्रारम्भः

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

श्लोक

ओ३म् ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य, गुरु, पुनि प्रणम्य सब सन्त।
करत मंगलाचरण इह, नाशत बिघन अनन्त॥
ध्यानमूलं गुरोः मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोः वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

दोहा

प्रथम गणपति सुमरता, दीज्यो बुद्धि और ज्ञान।
अनन्त करोड़ देवी देवता, धरें तुम्हारा ध्यान॥
जय जय श्री गणपति जय जय श्री गुरुदेव।
जय जय श्री पारब्रह्म दे अनुभव का भेव॥
मत अरु पन्थ अनेक हैं, जिनको मेरा प्रणाम।
मानव कल्याण के लिये 'राम जन' हुआ निर्माण॥

श्लोक

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षात्महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

आरती

ओ३म् जय सत गुरु देवा, स्वामी जय सत गुरु देवा।
सुर नर मुनि जन ध्यानी, ध्यान करत नित सेवा ॥१
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु शंकर देवा।
गुरु नारद गुरु शारद, गुरु गोरख देवा ॥२
गुरु द्रोणा गुरु कपिल, गुरु व्यास मुनि देवा।
गुरु मंगल गुरु बुधम्, गुरु सुरपति देवा ॥३
गुरु अष्ट ब्रह्म तप धारी, गुरु वशिष्ठ मुनि देवा।
गुरु वेद स्मृति गीता, गुरु नानक देवा ॥४
गुरु कबीर सत साहिब, गुरु दादु जन देवा।
गुरु रविदास परमहंस, गुरु देवन के देवा ॥५
गुरु जनों की आरती, करे नित कोई सेवा।
'जीवाराम' आरती गावे, मन वांछित फल देवा ॥६

भजन राग पुर्वोयुक्त चार

भज मन देव गणेश सदा, निज अनुभव ज्ञान बतावत है ॥टेक
गणपति सुमर सदा सुख पावे, विद्या बुधि बल पावत है ॥१
गणपति देव देवों का राजा, गीता ग्रन्थ सुनावत है ॥२
जिन पर कृपा करे निज स्वामी, ज्ञान सुधा वर्षावत है ॥३
'जीवाराम' कृपा सत गुरु की, चरण कमल चित लावत है ॥४

दोहा

गुरु है पारब्रह्म परमात्मा, गुरु है अलख गुसांई।
गुरु गति मुक्ति का दाता, गुरु बिन दूजा नाईं ॥

भजन राग लावणी

अब तुम दया करो गुरु देव जी, चौरासी मिटाने वाले ॥टेक
प्रथम नारद मुनि शरणे आये, उन्हें धीमर सत गुरु पाये जी।
सच्ची बुद्धि बताने वाले ॥१

गोपीचन्द गुरु जलन्धर पाया, उनका योग अमर करवाया जी।
यम फांस कटाने वाले ॥२
राजा जनक राय गुरु पाये, तब शुक देव सिद्ध कहलाये जी।
सत पन्थ बताने वाले ॥३
भजनानन्द गुरु पाया, वह 'जीवनराम' गुण गाया जी।
गुरु मुक्ति के दिलाने वाले ॥४

दोहा

गुर समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुर दीनी दान ॥
तीर्थ नहाये एक फल, सन्त मिले फल चार।
सतगुर मिले अनेक फल, कहै कबीर विचार ॥

भजन राग ध्रुपद

गुरु के समान दाता नहीं, सब जुग मंगन हारा रे ॥टेर
सप्त द्वीप नौ खण्ड में, सब जुग में बिस्तारा।
क्या राजा क्या बादशाह, सब ने हाथ पसारा रे ॥१
कागज की नाव बनाय के, बिच में लोहा डारा।
सतगुर पार उतार सी, पापी डूबे मझधारा रे ॥२
पत्थर ने पूजत फिरे, क्या पूजत पाया।
अड़सठ का फल एक है, द्वारे सन्त जिमाया रे ॥३
अपराधी तीरथ चला, क्या तीरथ नहाया।
कपट दाग धोया नहीं, कोरा अंग नहाया रे ॥४
अन्धा नै सूझत नहीं, क्या ढूंढ़त पाया।
कह 'कबीरा' धर्मीदास ने, गुरु से होय निस्तारा रे ॥५
दोहा—मात पिता मिल जायंगे, लख चौरासी मायं।
गुरु सेवा और बन्दगी, फेर मिलन की नायं ॥

भजन राग लावणी

मन सतगुरु शरणों जाय, नाम नित भजना, नाम नित भजना ॥
मन जगत जंजाल बुहार, बिषे रस तजना ॥टेक
मन मात पिता परिवार, नार सुख सहना ।
मन घर मन्दिर महलात, कोट सब ढहना ॥१
मन माया को तुम मान, फूल क्यूं फिरना ।
मन दोय दिनों के माय, अन्त तुने मरना ॥२
मन माया मुकाम सराय, जिसमें नहीं रहना ।
मन अपना करो विचार, मान ले कहना ॥३
मन चौदह भवन पर काल, जासे नित डरना ।
कहै 'मौजोराम' ब्रह्मानंदी, लेवे गुरु का शरना ॥४

दोहा

सन्त समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय ।
सुत दारा और लक्ष्मी, पापी के भी होय ॥
सत संगत में बैठ कर, हो जावो भव पार ।
खेवटिया सत गुरु सही, क्षिण में लगावे पार ॥
श्वास-श्वास पै नाम ले, बृथा श्वास मत खोय
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय ॥

सवैया

दूर है राम नजदीक है राम देश है राम प्रदेषु है रामे ।
पूर्व राम ही पश्चिम राम ही दक्षिण राम है उत्तर धामे ॥
आगे है राम ही पीछे है राम ही व्यापक राम बनहु ग्रामे ।
'सुन्दर' राम दसों दिस पूरण स्वर्ग है राम पाताल है तामे ॥

दोहा

घट-घट रहा बिराज, मुख से बोलो राम ।
रोम-रोम में बस रहा, नहीं और से काम ॥

जयपुर से दक्षिण दिशा, डिग्गी पुरी दरम्यान ।
फागी नगर के वासी हैं लेखक 'जीवन राम' ॥

दोहा

ब्रह्म ज्ञान गुण लेय के, सत गुर दिया छिटकाय ।
तुलसी ऐसा शिष्य तो, निश्चय नरक में जाय ॥

कुण्डली

गरजी चेला गुरु से गुण लेकर भग जाय ।
कृतघ्नता के दोष से, जग में धक्का खाय ॥
जग में धक्का खाय, मान दुनिया से जावै ।
भोगे कष्ट अपार, कष्ट फल निश्चय पावै ॥
'रामलाल' ऐसे शिष्य को मतना मुंह लगाय ।
गरजी चेला गुरु से गुण लेकर भग जाय ॥

दोहा

पतिव्रता को सुख घणां, जिसके पती है एक ।
व्यभिचारिनि को सुख कहां, जिसके पती अनेक ॥

भजन राग पारवा

जिस घर में करकसा नारी, वो सदा लूण से खारी ॥टेक
पति धर्म को वो नहीं जाने, भली-बुरी वो नहीं पहचाने ।
कहा किसी का वो नहीं माने, वो झगड़ा करनी नार ॥
वो अन्त नरक अधिकारी ॥१
प्रेम भाव से बातें न करती, जण-जण से वो लड़ती फिरती ।
सासु-सुसर देवर से अड़ती, वो है कलह करणी नार ॥
वो चले कुदुम्ब से न्यारी ॥२
सोवे तब तो नाक ठहरावै, सुपने मायं बहुत बरड़ावै ।
खावै मरोड़ा बहुत लगावै, नर तू ऐसी नार को ॥
तेरी उमर बिपत में जा रही ॥३

जीवारामजी सत गुर पाया, भिन्न-भिन्न कर मुझे ज्ञान बताया।
'चोथुराम' प्रेम पद पाया, अरे नर भरले भलाई अपार ।।
कर हरि भजन से यारी ।।४

दोहा

तरुण अवस्था फिरे गलियां, पांच भूत ले संग ।
यौवन मदमातो रहे, पीवे विषय का रंग ।।

दोहा

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मायं ।
मनुआ तो चहुं दिसि फिरै, यह तो सुमरिण नायं ।।

भजन

समझ मन जन्म जात ज्यूं रेल ।।टेर।।
[illegible] बनी दुख सुख की, काल कराल ढकेल ।।१
बरस बरस का है स्टेशन, मास मास का ज्यूं मील ।
रात दिना दोउ इंजन खींचत, ना घोड़ा ना बैल ।।२
नर शरीर उत्तम है, गाड़ी चले छबीली [illegible] ।
परम ज्योति सोई लालटैन है, बिन बाती बिन तेल ।।३
अ३म् शब्द होत निशिवासर, ज्यूं लांघत कुल सैल ।
नाड़ी तार की खबर देत है, दशों दिशा रही फैल ।।४
किसी ने टिकट लिया सुरपुर का, किसी ने यमपुर गैल ।
'विश्वानन्द' कहे गुरु कृपा से, देखत हूँ सब सैल ।।५

दोहा

बृथा भरोसा देह का, बिनस जात छिन मायं ।
श्वास श्वास सुमिरन करो, और जतन कछु नायं ।।

दोहा

होठ कंठ हाले नहीं, नहीं जिभ्या उच्चार ।
सहज ही सुमिरन होत है, कहै कबीर बिचार ।।
आ सतगुरु की शरण में, संशय दे सब छोड़ ।
राम मिलावे पलक में, जम की फन्दी तोड़ ।।
तुलसी काया खेत है, मनसा भया किसान ।
पाप पुन्य दो बीज हैं, बोये सो लुने निदान ।।

दोहा

रामजन मत प्रकट किया, बाणी कथी अनन्त ।
ऐसा इस संसार में, बिरला होगा पन्थ ।।
जीवन राम जी ने लिखे, धार्मिक अनेकों ग्रंथ ।
जिस भाई को चाहिए, मुक्ति का यह पंथ
शहर दिल्ली बड़शाहबूला, देहाती पुस्तक [illegible]
जीवनराम जी के ग्रंथ मिलें, जहां [illegible] ।।
पढ़े सुने हृदय धरे, पावे सत चित ज्ञान ।
कीर्ति कथा जिस घट नहीं, सो नर पसू समान ।।

कवित्त

कारीगर कुम्हारजी ने चाक को तैयार किया ।
वो ही है करतार घड़े माटी के खिलौने हैं ।।
माटी के ये पुतले जान चेतन का चमतकार ।
रंग और बिरंगे देखो सांवले सलौने हैं ।।
माटी का संसार देख मिथ्या अंहकार देख ।
यह सब विकार देख झूंठे बिहोने हैं ।।
पिंड ब्रह्मण्ड ना सप्तदीप नौ खन्ड न सत है ।
ब्रह्म है अखण्ड 'बुन्दूराम' कहै यको सन्त माने हैं ।।

दोहा

पांच तत्व गुण तीन हैं पच्चीस प्रकृति जान ।
दस इन्द्री पांचों तत्व की, पांच कर्म पांच ज्ञान ।।
पांच तत्व के महल में नौ तत्व का है भौर ।
नौ तत्व के ऊपर सुन्न शिखर कर गौर ।।
दया करी गुरुदेव ने, काट सकल कलेस ।
बांह पकड़ कर ले गये पारब्रह्म के देस ।।
सतगुरु 'जीवनराम', जो सांचा दिया उपदेस ।
शरण गुरु की जब लई मिट गये सभी कलेस ।।
भजन वाणी और वार्ता, कथ कें रचे ग्रंथ ।
पढ़ने से कल्याण हो कहता, 'राम जन' पंथ ।।

भजन राग गजल

सत गुरु चरणों का दास बनाले मुझे ।
यम दुनियां में देंगे न जीने मुझे ।।टेक
भव सिंधु के बीच में मैं घणा दुख पा रहा ।
काम क्रोध कछ मछ को देख कर डर रहा ।।
सतगुरु भव से ए पार लगा दे मुझे ।।१
कैसे उतरूं पार मैं किश्ती नाव है नहीं ।
सत्संग जहाज में बिठाने खेवटिया सतगुरु सही ।।
सतगुरु बांह पकड़ कर बिठाले मुझे ।।२
सतगुरु भरोसे जहाज में परिवार ले संग बैठिया ।
विश्वास है गुरु का मुझे इस भवसे पार लगायगा ।।
सतगुरु अपने ही देश में बुला ले मुझे ।।३
जीवनराम सतगुरु सही जीने मुझे चिता दिया ।
'बुन्दू' को निर्बल जानकर भवसे पार लगा दिया ।।
सतगुरु अपने ही धाम बसा ले मुझे ।।४

दोहा

मन जोड़ो हरि चरन में साधु संत समझाय ।
जिसने मन बस में किया, स्वर्ग में आनन्द पाय ।।
एक बैरी मन आपना, दूजे घुसा शैतान ।
तीजे बैरी निन्द्रा, नहीं भजन दे राम ।।
चौथे बैरी माल है ये राखे सदा अरमान ।
पांचवी बैरी स्त्री मेरा तोले सत ईमान ।।
छठे जो बैरी काल है मेरे सिरपर खड़ा है आन ।
काल के हाथ कमान है ये बूढ़ा गिने न जवान ।।

भजन राग आसावरी

मन रे, करले भजन हरी का ।
करना है सो करले बन्दे सौदा बराबरी का ।।टेक
मन है राजा मन है प्रजा, जम है बजीर नगरी का ।
इनके फन्दे में जो फंस गया, भूला राह डगरी का ।।१
मोह माया के बंधा बन्धन में, माने बचन स्त्री का ।
ये क्या तेरा जीव बचावे, चढ़े हुक्म डिग्री का ।।२
मनको मोड़ जोड़ हरिचरनों बासा ले अमरपुरी का ।
मन ही हार मन ही से जीत शकुन ये सरासरी का ।।३
जीवन राम गुरु सैन बतावे, हृदय मायं धरी का ।
'बुन्दूराम' समझ मन मेरा, कहता बचन खरी का ।।४

दोहा

कलिकाल के मनुष्य की, चर्चा कहूँ समझाय,
सच्चे को झूठा करे, झूठे को सच्चा ठहराय ।।
यह कलयुग आयो यामें, साधू न माने कोय ।
कामी क्रोधी मसखरा, तीन की पूजा होय ।।

भजन पद

भाइयो सुनलो चतुर सुजान, कलयुग चढ़ा शीश परवाना ।।टेर
साधू करने लगे हैं चोरी, तकते फिरें पराई गोरी ।
ऐसे हो गये साधू अघोरी, सही वचन लो मान ।।
इस भेख की लाज रखाना ।।१।। भाइयो सुनलो चतुर सुजान०
अबके लोग बड़े इतवारी, हृदय भीतर चले कटारी ।
उनकी मति गई है मारी, कुंवारी चाबें नागर पान ।।
यूं बिगड़ा सभी जमाना ।।२।। भाइयो सुनलो चतुर सुजान०
पिता पुत्र में बैर है रहता, शिष्य गुरु संग धोखा करता ।
स्त्री पुरुष में द्वेष है बढ़ता, घट गई सभी की शान ।।
लिया बेशर्मी का बाना ।।३।। भाइयो सुनलो चतुर सुजान०
इस कलयुग में भक्ति प्यारी, मुक्ति होय करो नरनारी ।
'बुन्दू' जाये सत बलिहारी, जाके घट में है भगवान् ।।
उनका बैकुण्ठ मायं ठिकाना ।।४।। भाइयो सुनलो चतुर सुजान०

दोहा

जीव नहीं तू ब्रह्म है, अविनाशी निर्वान ।
नि[illegible] न्यारा तू देह से, देह कर्म सब जान ।।

भजन राग परज ताल

मैं महरम हुआ सब हाल का, परख करना था कर चुका मैं ।।टेर
गुरु पारखी परख बताई मिट गई भूल भरम सब जाई ।
स्वयं स्वरूप दिया लखाई, फंद कट गया धर्म जाल का ।।
भरम धरना था धर चुका मैं ।।१
मैं ही करता मैं ही धरता, मैं ही जिन्दा कभी न मरता ।
जन्म मरण काया डण्ड भरताये कर्म गति के ख्याल का ।।
डण्ड भरना था भर चुका मैं ।।२
वायु सुखा सके ना बलकर, शस्तर चला सके ना मुझ पर ।
डुबा सके ना मुझे समन्दर, भय मिट गया तीनों काल का ।।
जो जरना था जर चुका मैं ।।३
पिंड ब्रह्मण्ड को खोज लिया मैं, यह सब खंडित सोच लिया मैं
'बुन्दू राम' अखंड हो लिया मैं, यह पद कथा है कमाल का ।।
जो गिरना था गिर चुका मैं ।।४

दोहा

यह तन काया कोठड़ी, यामें हीरे लाल ।
सन्त जौहरी परखते, जो जानें इस का हाल ।।
जो तुम में सो ही मुझमें, बरसे अमृत फुहार ।
जिनको सत गुरु पूरा मिला, वही करें दीदार ।।

भजन राग आसावरी

साधो भाई काया अजब नगर है ।
सैर करे कोई गुरु का प्यारा, क्या कोई करे फिकर है ।।टेर
सात द्वीप इक्कीस ब्रह्मण्ड, नौ खण्ड काया अन्दर है ।
नौ सौ नदियां सुभर भरिया, या में सात समुन्दर है ।।१
भाई जाप अजपा जपते, ये तन रत्न मन्दिर है ।
याही में ध्यान धरे नभ माहीं, बंक दिश पकड़ी डगर है ।।२
चौदह लोक बसे यम चौदह, याही में धरती अम्बर है ।
धौले धौले तारे दमकें याही में, सूरज अम्बर है ।।३
त्रिकुटी सागर अथाह जल भरिया, बिरला नहाये चतुर है ।
दस प्रकार के बज रहे बाजै, सुनते नारी नर है ।।४
याही में नरक स्वर्ग कहीजै, याही में सवन शिखर है ।
बिन पानी के छुटे फुवारे, बरस रहा बादर है ।।५
पारब्रह्म अविनाशी साहिब, का वहीं निराला घर है ।
'बुन्दू' कहै जो वस्तु बाहर है, सो ही काया भीतर है ।।६

दोहा

फँसा कुटुम परिवार में, भूल्यो सिरजनहार ।
अन्त समय कोई काम न आवे, जमड़ा मारे मार ॥

भजन राग पारवा

सत्संग बड़ा संसार में कोई बड़ भागी ने पाया ॥टेक
संगत से सुधरे बाल्मीकी जग की प्रीति लगी सब फीकी ।
रामायण रच दीनी नीकी, साठ सहस्त्र विस्तार में ॥
निर्भय हो हरि गुण गाया ॥१
पूर्व जन्म नारद ऋषिराई, दासी पुत्र थे सेवा ठाई ।
सत्संगत से विद्या पाई, लागे ब्रह्म विचार में ॥
फिर जन्म ब्रह्म घर पाया ॥२
घट से प्रगट अगस्त मुनि ज्ञानी, सत्संगति की महिमा जानी।
तीन चुल्लू सागर पानी, पिया एक ही बार में ॥
सो सुयश जगत में छाया ॥३
सन्तों की संगत नित करिये, हरदम ध्यान हरी का धरिये ।
'रवीदत्त' कुकर्म से डरिये, दिन बीते जायं करार में ॥
सिर काल बली मँडराया ॥४

भजन राग चलत सोरठ

मनवा नायं बिचारी रे ।
थारी म्हारी करता उमर बीती सरो रे ॥टेर
गर्भवास में रक्षा कीन्हीं सदा बिहारी रे ।
बाहर भेजो नाथ भक्ती करस्यूं थारी रे ॥१
बालपणा में लाड़ लड़ायो माता थारी रे ।
तरुण भयो जब लागन लागी तिरिया प्यारी रे ॥२
पाछे सूं माया से लिपट्यो जुड़े हजारी रे ।
कौड़ी कौड़ी खातिर लेवे राड़ उधारी रे ॥३

जो कोई बोले बात ज्ञान की लागे खारी रे ।
जो कोई बोले भजन करो यों देवै गारी रे ॥४
वृद्ध भयो जब कहन लगी यूं घर की नारी रे ।
कबसी मरसी ढेड़ छूटे गैल हमारी रे ॥५
रुक गया कंठ दसूं दरवाजा मड गई ध्यारी रे ।
पूंजी थी सो भई बिरानी हुयो भिखारी रे ॥६
कालूरामजी सीख दई सो लागी खारी रे ।
अब चौरासी भुगतो बन्दा करणी थारी रे ॥७
पाछे तो मन सोच करयो कुछ बने न हमारी रे ।
पार लगाओ नाथ 'धानू' शरण तुम्हारी रे ॥८

भजन राग सोरठ

मनवाँ तू दुख वासी रे ।
क्यों बिसरायो हरिनाम सांगे के ले जासी रे ॥टेर
कुटुम कबीलो सुख सम्पति धन यहां रह जासी रे ।
निकल जायगा हंसा काया काम न आसी रे ॥१
दान पुण्य कर लेसी तो जग भलो बतासी रे ।
घोर नरक में जाय भजन बिन मुक्ति न पासी रे ॥२
आगे पूछे धर्मराय जद के बतलासी रे ।
पड़सी मुग्दर मार जाय कर कौन छुड़ासी रे ॥३
सतगुरु कालूराम कृपा कर ज्ञान बतासी रे ।
हीन जान 'धानू' ने साहब पार लगासी रे ॥४

भजन

कैसे सोय रहे गफलत में, जागो भारत के नर नार ॥टेक
भव धन्धों में फंसे राम को दीन्हों नाम बिसार ।
कोई न आवे काम समझ लो, सब झूठा संसार ॥१

अन्त समय का टोसा करलो क्या रहे सोच विचार ।
राम नाम को जपो आपका होगा बेड़ा पार ।
यो तेरा ये मेरा कहता है सब ही बेकार ।
बिना प्रभु के भजन आपका होय नहीं उद्धार ।
करलो प्यारे याद गर्भ में क्या कर चुके करार ।
चेत करो हरि भजो कहें कथ 'छीतर' जीमन यार

भजन राग आसावरी

आद पंथ निवण पद मोटा, सन्त महात्मा करिया
हरिजन बिना निवण, कुण तरिया ।।टेक
मूल कमल दिल चार चौकी, गणपति आसण करिया
आसण मार अडग हो बैठा, ध्यान उनों का ही धरिया
नमो-नमो म्हारी मात पिता ने, उत पुत पालन करिया
नमो-नमो म्हारी धरती मातने, जिनके ऊपर फिरिया
नमो-नमो म्हारा आद गुरु ने, नाम नाभि बिच धरिया
नमो नमो म्हारा भायांकी संगत ने, तामें बैठ सुधरिया
नमो नमो म्हारा पूर्ण ब्रह्म ने, हो अन्दर ओलरिया
ऊंच नीच में बराबर भरिया, तां का सुमरण करिया
भरग्या ज्यां का भर्मभय भाग्या, खालो खड़बड़ करिया
भेला हुवा, बराबर हुवा, काल जाल से टलिया
बिना पाल भवसागर भरिया, कोई डूबा कोई तरिया
गुरु खिवण वणे 'माली लखमो' प्रेम पियाला फिरिया

भजन

राम रट लागी-लागी अब कैसे छूटे ।।टेक
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समान
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चन्द चकोर
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोत जरै दिन रात

प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने ही मिलत सुहागा ।।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा' ।।

भजन

सांची प्रीत हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ी औरसंगतोड़ी ।।
जो तुम बादर तो हम मोरा जो तुम चन्द हम भए चकोरा।।१
जो तुम दीपक हम हैं बाती जो तुम तीरथ तो हम जाती ।।२
जहां-जहां जाऊं तहां तुमरी सेवा, तुम सों ठाकुर और न देवा।।३
तुमरे भजन से कटे यम फांसा, भक्ति हेतु गावे 'रैदासा' ।।४

भजन

चरणों में तेरे आन पड़ा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।टेर
तुम तो हो मेरे दयालु पिता, करुणा के सागर हे स्वामी ।
मैं महा नीच हूँ दास तेरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।१
पापी पतितों पर सदा दया, करते हो लोग यही कहते हैं ।
मैं भी तो पापी पतित खड़ा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।२
जब मुझे सहारा और नहीं, तो कैसे छोड़ूं द्वार तेरा ।
मैं खोटा हूं या खरा तेरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।३
तुम मार भी देते हो पल में, और तार भी देते हो पल में ।
विष अमृत का भंडार भरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।४
है दास 'रमन' की यह बिनती, अपनालो नाथ दया करके ।
तुम टारो तो नहीं जाऊं टरा, कब दया करोगे हे भगवन् ।।५

दोहा

राम नाम निज सार है, सब सारन में सार ।
कोटी कला प्रकाश पूर्ण, ऐसा सकल संसार ।।

सवैया

अष्ट कमल दिल मेल साहिब हरदम खेल अनूप है ।
रहता रमता आप साहिब ना छाया ना धूप है ।।

नाभि कमल स्थान जांका तुरी तत्त्व निज धाम है।
चल हंसा उस धाम पर सो बाह बड़ना ऐसा गाम है॥
गगन मण्डल गलतान गैबी सोहंग रूप अपार है।
'नेकीराम' उस धाम पर पावै अवगत का दीदार है॥

भजन

जागिये गोपाल लाल जननी बलि जाई ॥टेक
उठो तात भयो प्रात रजनी को तिमिर गयो।
खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥१
उठो मेरे आनन्द कन्द किरण चन्द मंद मंद।
प्रकटियो आकाश भानु कमलन सुखदाई ॥२
सखी सब पूरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु।
उठो लाल तजो सेज सुन्दर रघुराई ॥३
मुख ते पट दूर कियो, यशुदा को दर्श दियो।
माखन दधि मांग लियो, विविध रस मिठाई ॥४
जैमत दोऊ राम श्याम सकल मंगल गुण निधान।
जूठनि रहि थार में सो 'मानदास' पाई ॥५

भजन

राम भज गुजरिया ऐसा दही बिलोर ॥टेर
मनकर मटकी तनकर मथनियां पाले प्रेम की डोर ॥१
राम नाम का माखन काढ़ ले छाछ छाछ दे छोड़ ॥२
यह बेला तेरे हाथ न आवै खरचेगी लाख करोड़ ॥३
'धुन्नीदास' बड़ भागन गुजरी, साध संगत नहीं छोड़ ॥४

भजन

शंकर, मैं आधीन तुम्हारा ॥टेर
गोरे गौर तन पर भस्म बिराजे और सोहे रुण्ड माला।
बैल चढ़े शिव नाद बजावे, पारबती का प्यारा ॥१

सेवा कर भागीरथ गंग ल्यायो, बहे जटा बिच धारा।
कई कई पापी पार उतर गये, मेरा करो निस्तारा ॥२
आक धतूरा भोग लगत है, बिष का करत अहारा।
नील कंठ पर नाम बिराजे, ऐसे दीन दयाला ॥३
भोले नाथ मोपे कृपा कीजे, मैं हूँ दास तुम्हारा।
'तानसैन' हरि का गुण गावे मेरा करो उपकारा ॥४

भजन

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥ टेक
क्रोध न छोड़ा झूंठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया।
झूंठे जग में दिल ललचा कर, असल वचन क्यो छोड़ दिया॥
जिहों सुमरिन ते अति सुख पावे, सो सुमरिन क्यों छोड़ दिया।
'खलिक' इक भगवान् भरोसे, तन धन क्यों न छोड़ दिया॥

भजन प्रभाती

भोर भयो पक्षी गण बोले, उठो अब हरिगुण गावो रे ॥टेक
लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बारबार हरषावो रे॥
प्रभु की दया सुमिर निज मनमें, सरल स्वभाव उपजावो रे।
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहावो रे॥
ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबावो रे।
'जीवन' शीतल लहरें ले ले, आतमा ताप बुझावो रे॥

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देवः॥

भजन

भोले बाबा बसो मोरी नगरी ॥टेर
तुमरे बैल को मेवा मंगाद्दू, तुमको पिलाऊं भंग भरी गगरी॥१

जो गिरजापति जानत नाहीं, तिनके करम धर्म गये बिगरी ।।२
'देवीसहाय'मगन निशिवासर, शिव शिव नाम जपत पगपकरी ।।३

भजन

मोहे प्रभु राखो अपनी शरण में ।।टेक
अपरम्पार पार नहीं तेरो कहो कह्यो क्या करना ।
मन क्रम वचन आस एक तेरी होऊ जन्म या करना ।।
अविरल भक्ति के कारण तुम पर है बचन देऊ धरना ।
जन 'अभिलाषिदास' कहै चाहो मुक्ति गत तरना ।।

भजन

आज सब मिल गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिनका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनि जन धन्यवाद ।।टेक
मन्दिरों में कंदरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद ।।१
करते हैं जंगल में मंगल पक्षी गण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ।।२
कूप में तालाब में सागर की गहरी धार में ।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ।।३
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वर में चाहिए करें नारी नर सब धन्यवाद ।।४
गान कर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता उस प्रभु के धन्यवाद ।।५

भजन

में उनके दर्श की प्यासी ।।टेक
जिनका ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं योगी योगाभ्यासी ।
जिनको कहते अजर अशोकी आश्रय जिनके हैं त्रिलोकी ।।१

वह जन्मे न वह मरे, अकाल पुरुष अविनाशी ।
द अच्छेद अनंत अवर्ण है अक्षर और अनादि ।।२
ल अमूर्त और अनुपम प्रभु सर्व निवासी ।
ल बल जा का अटल राज है सृष्टि सकल है दासी ।।३
मींचन्द' जिनसे होत प्रकाशन रवि शशि अग्नि प्रकाशी ।।४

प्रार्थना

शरण अपनी में रखलीजे दयामय दास हूं तेरा ।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितू कोई और नहीं मेरा ।।१
भकटता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं ।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डूबता बेड़ा ।।२
सताया राग द्वेषों का तपाया तीनों तापों का ।
दुखाया जन्म मृत्यु का हुआ तंग हाल है मेरा ।।३
दुखों के मेटने वाले तुम्हारा हाल सुन कर मैं ।
शरण में आ गिरा अब तो भरोसा नाथ है तेरा ।।४
क्षमा अपराध कर मेरे फकत अब आश है तेरी ।
दया 'बलदेव' पर करके बनाले नाथ अब चेरा ।।५

शब्द

जपो रे मन मूल मन्त्र ओंकार ।। टेक
ओंकार ते वेद प्रकट भये विद्या का भंडार ।।१
ओंकार को ध्यान धरे जो हो जाये भवपार ।।२
वेद के आदि अन्त और मध्य में ऋषि करें उच्चार ।।३
निरंकार और ज्योतिस्वरूपा आप में आप निहार ।।४

भजन

मातु सहायक स्वामी सखा तुम ही एक नाथ हमारे हो ।
के कछु और आधार नहीं तिनके तुम ही रखवारे हो ।।१

सब भांति सदा सुखदायक हो दुख दुर्गुण नाशन हारे हो
प्रतिपाल करो सगरे जग को अतिशय करण उर धारे हो
भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो हमरी सुधि नहीं बिसारे हो
उपकारन को कछु अन्त नहीं छिन हो छिन जो विस्तारे हो
महाराज महा महिमा तुमरी समझे बिरले बुधवारे हो
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन मन्दिर के उजियारे हो
यही जीवन के तुम जीवन हो इन प्रानन के तुम प्यारे हो
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरि केहि के अब और सहारे।

भजन

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किस्ती है ॥
तुम अविनाशी अजर अमर हो सारे भू मंडल के घर हो
सब के भीतर अरु बाहर हो कारीगर बड़े भारी हो।
रचो अजब सकल सृष्टि है ॥१
सबका न्याय करो तुम न्याई बिन वजीर अरु बिना सिपाही
करो फैसला कलम न स्याही ऐसे न्यायकारी हो।
नहीं गल्ती पड़ सकती है ॥२
हमने दुःख भोगे हैं भारी बहुत हुई दुर्दशा हमारी।
अब हम आये शरण तुम्हारी तुम लग मेरी दौड़ है।
तारो तो तर सकती है ॥३
बिन कृपा करुणा निधि तेरी कुछ नहीं पार बसाती मेरी
कहै 'तेजसिंह' भारत को बेड़ी काट सभी दुख टारियो।
जो हृदय कुमति बसती है ॥४

भजन राग असावरी

प्रभुजो मैं शरण तुम्हारी आया, गंजन गर्व भक्त भय भंज
दूर करो मोह माया ॥टे

लख चौरासी बहु दुख रासी, जन्म मरण भटकाया।
चार खाण बाण संयम का, लम्बा फेर फिराया ॥१
आप दयानिधि अधम उधारण, अगम निगम यश गाया।
अजामिल गज गनिका सबरी, परम गति पहुँचाया ॥२
कृपा भई तुम्हारी तब तो, मिली मनुष्य को काया।
झूठी प्रीत विषय रस फंस के, ध्यान तेरा बिसराया ॥३
मैं बल हीन अधीन तुम्हारे, करो दीन पर दाया।
'ज्ञानस्वरूप' को बक्सो, निज पद आवागमन मिटाया ॥४

उपासना

ॐ है करता विधाता ॐ पालन हार है ॥
ॐ है दुख का विनाशक ॐ सर्वानन्द है।
ॐ है बल तेज धारी ॐ करुणा कन्द है ॥
ॐ है सबका पूज्य हम ॐ का पूजन करें।
ॐ ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें ॥

भजन

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा, तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा।
ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतंगा, आनन्द घन तुम हो मैं बन का मोरा॥
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति, आकर्षण करें मोही लगातार तोरा।
पानी बिना जैसे ही मीन व्याकुल, ऐसे ही तड़फाया तेरा बिछोड़ा॥
इक बूंद जलका मैं प्यासा हूं चातक, अमृतकी करो वर्षा हरो ताप मोरा

भजन ईश्वर स्तुति

आनन्द रूप भगवन् किस भांति तुम को पाऊं।
तेरे समीप स्वामी मैं किस तरह से आऊं ॥टेर
सुख मूल भवित रूपम् मंगल कुशल स्वरूपम्।
घड़ियाल शंख को क्या सन्मुख तेरे बजाऊं ॥१

अनुपम परम छबीले बिनराग रंग रसीले ।
कंटक सखा है फुलवा क्या सिर तेरे चढ़ाऊं ॥२
कोटानुकोटि भूमि उस पर असंख्य प्राणी ।
जगदीश अपना नम्बर मैं कौनसा गिनाऊं ॥३
श्री लक्ष्मी हैं तेरी निश दिन चरण की दासी ।
तांबे का एक पैसा मैं किस तरह चढ़ाऊं ॥४
गंगा है तेरी दासी सेवक है इन्द्र तेरा ।
तेरे शरीर पर क्या दो चुल्लू जल चढ़ाऊं ॥५
छोटे से दास तेरे रवि चन्द्र हैं उपस्थित ।
करते हैं नित उजाला घृत दीप क्या जलाऊं ॥६
विनती 'किशोर' की है निश दिन यही दयामय ।
हृदय में लौ हो तेरी आँखों में समाजाऊं ॥७

गजल

ओ नर भजन कर हर का समझ है थोड़ी जिन्दगानी ।
तू आया था भजन करने लगा करने यहाँ मन मानी ॥टेर
करोड़ों बन्द से छुट कर मनुष्य का जन्म मिलता है ।
भूल गया बात तू पिछली करन लगा है शैतानी ॥१
तेरी मिट्टी की काया है ये मिल मिट्टी में जाये जी ।
जमेगी घास इस तन पर चरेंगी गाय मस्तानी ॥२
नींद में सो रहा पागल भूल कर कौल तू अपना ।
भजन की कह के आया था गया क्यों भूल अभिमानी ॥३
'किशोरी लाल' कर भक्ति उमर तेरी बीत है जानी ।
ढलेगा नूर यह जोबन ढले जणु ओस का पानी ॥४

भजन

विधाता तू हमारा है तूही विज्ञान दाता है ।
बिना तेरी दया कोई नहीं आनन्द पाता है ॥टेक
तितिक्षा की कसौटी पर जिसे तू जांच लेता है ।
उसी विद्याधिकारी को अविद्या से छुड़ाता है ॥१
सताता जो न औरों को न धोखा आप खाता है ।
वही सद्भक्त है तेरा सदाचारी कहाता है ॥२
सदा जो न्याय का प्यारी प्रजा को दान देता है ।
महाराजा उसी को तू बड़ा राजा बनाता है ॥३
तजे जो धर्म की धारा कुकर्मों की बहाता है ।
न ऐसे नीच पापी को कभी ऊंचा बिठाता है ॥४
स्वयम्भू 'शंकरानन्दी' तुझे जो जान लेता है ।
वही कैवल्य सत्ता की महत्ता में समाता है ॥५

भजन

अजब हैरान हूं भगवन् तुम्हें क्यों कर रिझाऊं मैं ।
नहीं वस्तु कोई ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥टेर
करूं किस तौर आवाहन कि तुम सर्वत्र व्यापक हो ।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टा बजाऊं मैं ॥१
तुम्हीं हो मूर्ति में भी तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् को भगवान् पर क्यों कर चढ़ाऊं मैं ॥२
लगाना भोग कुछ तुमको ये इक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं ॥३
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं सूरज चाँद अरु तारे ।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक जलाऊं मैं ॥४
भुजायें है न गर्दन है न सीना है न पेशानी ।
तू है निरलेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं ॥५

बड़े 'नादान' हैं वह जन जो गढ़ते आपकी मूर्त में ।
बनाया विश्व को तुमने तुम्हें कैसे बनाऊं मैं ।।६

भजन

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेके आया हूँ ।।टेक
पिलादो प्रेम का अमृत पिपाला लेके आया हूँ ।।१
रतन अनमोल लाने वाले लाते भेंट को तेरी ।
मैं केवल आंसुओं की मंजुमाला लेके आया हूँ ।।२
जगत के रंग सब झूठे तू अपने रंग में रंग ले ।
मैं अपना ये महा बदरंग बाना लेके आया हूँ ।।३
'प्रकाशानन्द' हो जाए मेरी अंधेरी कुटिया में ।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आया हूँ ।।४

भजन

भगवान् तुम्हारी दुनिया का यह कैसा अजीब नजारा है ।।टेर
कहीं रेत के ऊंचे टीले हैं, कहीं गंगा यमुन की धारा है ।
एक ओर समुन्दर के जल का नहीं आता बारा पारा है ।।१
छोटे-छोटे पक्षी प्रातः मस्तानी बोली बोल रहे ।
और कोयल ने मीठे स्वर में प्रभु तेरा नाम उचारा है ।।२
तू जाने कितना सुन्दर है जब इतनी सुन्दर माया है ।
इस 'जीवन' का तू जीवन है भक्तों का एक सहारा है ।।३

दोहा

कबीरा सोता क्या करे जागो जपो मुरार ।
एक दिना है सोवना लम्बे पाँव पसार ।।

भजन बतर्ज फिल्म-हर-हर महादेव

शिव शंकर भोले भाले तुमको लाखों प्रणाम ।
कैलाश बसाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ।।टेर

जूट जटा सिर गंग बिराजे, डमरु डम-डम डमरु बाजे ।
चन्द्रकला मस्तक पर राजे, वाम विभागे शिवा विराजे ।।
गल भुजंग हैं काले ।।१
शीश पै सोहै गंग की धारा, जै करुणा सागर करतारा ।
महिमा तुमरी अगम अपारा, जय महेश जय भव भय धारा ।।
भस्म रमाने वाले ।।२
रुद्र माल गले भुजंग माला, कर त्रिशूल सोहै कर ताला ।
जय देव जय जयति कृपाला, नील कंठ कटि में मृगछाला ।।
कानन कुण्डल डाले ।।३
वृषवाहन अंग विभूत, देवन के देव निर्गुण रूप ।
निगम अगम शांतिमय स्वरूप, त्रियलोचन त्रिपुरारी अनूप ।।
कष्ट मिटाने वाले ।।४
शिवनाथ जय-जय शिव शंकर, 'केदारनाथ' करुणा के सागर ।
बंब-बंब भोले जय हर-हर, निराकार जय विश्वम्भर ।।
भक्तों को अपनाने वाले ।।५

भजन राग कव्वाली

पल भर में भर भण्डार दिया शिव शंकर भोले बाबा ने ।।टेर
सब भक्तों को भव पार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।
भक्तों को बुद्धि ज्ञान दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।।१
हिरनाकुश तप से अमर हुवा, देवो को भारी खतरा हुवा ।
पृथ्वी का राज्य विस्तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।।२
लंका गढ़ पाया रावण ने, कैलाश उठाया रावण ने ।
भुज बल ताकत उन्हें डाल दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।।३
बल परसुराम ने पाया था, वीरों का मान घटाया था ।
पर शक्ति उनको अपार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ।।४

अर्जुन को पशुपति प्राण दिया, रणजीत उन्हें वरदान दिया ।
रण में खल गण संहार किया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥५
मानुष अनेक कंगाल हुए, सेवा से मालामाल हुए ।
कहे 'निगम' कष्ट कुल तार दिया, शिव शंकर भोले बाबा ने ॥६

(दोहा) छन्द

ओ३म् अक्षर अलख आवाज है अवनासी निराकार ।
पांच तत्व की झलक से समा रयो करतार ॥
शिव शक्ति की उत्पत्ति प्रथम नाम गणेश ।
चार कोट चौदह भवन में तेरा ही प्रवेश ॥
पर उपकारी संसार को पूर रयो दिन रात ।
'भगवानदास' विनती करे उगते ही प्रभात ॥

भजन

तू तो उड़जा पंछी यार तेरा कौन करे इतवार ! टेक
नौ खिड़की का बना पींजरा तेरे खुले पड़े सब द्वार ॥
आना जग में मुश्किल तेरा जाना सहल सम्हार ।
तेरे कारण महल बनवाए सच्चे सुत धन यार ॥
सबको छोड़ जात इक पल में निरमोही निरधार ।
सुन्दर भोजन नित्य खिलाऊं पहनाऊं श्रृंगार ॥
मल-मल इतर फुलेल लगाऊं बाधूं बंध हजार ।
रोका रहै ना निकर जायगा घोड़े का असवार ॥
सकल अर्थ का यही अर्थ है सकल बाल की बात ।
दरिया सुमिरन राम नाम का कर लीजे दिन रात।

भजन

तुम्हें नाथ दर्श दिखाना पड़ेगा, गिरा देश फिर से उठाना पड़ेगा ॥
हुवा भाई-भाई का दुश्मन यहां पर, हमें प्रेम प्याला पिलाना पड़ेगा
बंधे एक धागे हिन्दू ये जाती, इन्हें ज्ञान गीता का बताना पड़ेगा ॥

पड़ा नीद में सो रहा भारत, प्रभू आपको आ जगाना पड़ेगा ॥
अगर आप अवतार लेकर पधारो, तो फिर धर्म का डंका बजाना पड़ेगा
इस 'जीवन' की इक यही है तमन्ना, विजय का झंडा लहराना पड़ेगा

भजन

शरण प्रभू की आवो रे यही समय है प्यारे ॥टेर
छल कपट और झूठ को त्यागो सत्य में चित्त लगावो रे ॥१
उदय हुवा ओ३म् नाम भानूं आवो दर्शन पावो रे ॥२
पान करो इस अमृत फल को उत्तम पदवी पावो रे ॥३
मनुष्य जन्म अमोलख है यह वृथा न इसे गंवारो रे ॥४
करलो नाम हरि का सुमिरन अन्त को न पछतावो रे ॥५
धन्य दया जो सबको देवे पल मत तुम बिसरावो रे ॥६
छोटे बड़े सब मिलकर खुशी से गुण ईश्वर के गावो रे ॥७

भजन राग आसावरी

धन गुरां हमें तुम्हारी आसा ।
तारण तरण अभय पद दाता तुम स्वामी हम दासा ॥टेर
बाजीगर ने बाग लगाया नैना किया तमाशा ।
जल की बूंद से पिण्ड बनाके भीतर मेली स्वांसा ॥१
देह में रूम-रूम में चमड़ी, चमड़ी में है मासा ।
मास में हाड़ हाड़ में गुदा गुदा में बिंद प्रकाशा ॥२
बिंद में पवन पवन में प्राणा प्राणा में पुरुष निवासा ।
बोलत आप और न दूजा रूम-रूम में बासा ॥३
यह सब खेल रचा धन गुरु ने मन धरिया विश्वासा ।
'कल्याण भारती' संता के शरणे सत सोहंग प्रकाशा ॥४

दोहा

रति फिरे जब आन के शत्रु होते यार ।
निर्धन से लाला बने नौकर डोले द्वार ॥

भजन टेक राग पारवा

जिनके घर में हो कंगाली कोई नहीं आदर करता है ।।टेर
मात पिता मित्र सुत भ्राता, सभी कहें कुछ नहीं कमाता ।
बैठा नाज मुफ्त का खाता, दे नारी गाली हजार है ।।
कहीं क्यों न जाय मरता से ।।१।। कोई नहीं०
स्त्री कहे भाग मेरा खोटा, तेरे घर में आ गया टोटा ।
बेच लिया मेरा फूल का लोटा, गिरवी धर दई थाली ।।
नहीं जब भी पेट भरता है ।।२।। कोई नहीं०
लोग कहें मूर्ख नादान है, लुच्चा गुण्डा बेईमान है ।
सुख का साथी सभी जहान है, मिल मिल पीटत ताली ।।
कोई धीर नहीं धरता है ।।३।। कोई नहीं०
बहन भानजी मारे ताना, कभी न सीखे बीर कमाना ।
'शंकर' ने लिया देख जमाना, जद यह कथन निकाली ।।
दिल सुन-सुन के डरता है ।।४।। कोई नहीं०

दोहा

हरि सा हीरा छोड़ कर करे अन्य की आस ।
तें नर यमपुर जायेंगे सत भाखे रैदास ।।

भजन टेक

दुनियां फंसी भर्म के जाल में दिल रहता नहीं ठिकाने ।।टेर
कोई कहे म्हारे ढुके रामदे, कोई कहे हमारे ढुके श्यामदे ।हरे
किसी-किसी को मोड़ा कामदे, चित्त ने दीनदयाल में ।।
ईश्वर को नहीं पहिचाने ।।१।। दिल रहता०
हनुमान भैंरु को मनावे, देवी चण्डी पीर मनावे ।
सुलतान और सैयद को ध्यावे, और कूदे है चौपाल में ।।
कोई बाबा जी को माने ।।२।। दिल रहता०

कोई मनावे दादी गारी, कोई-कोई नौत जिमावे छोरी ।
कोई करावे डन्डा डोरो, जा मोड्या के पास में ।।
घर कां के ओले छाने ।।३।। दिल रहता०
मुण्डी मावली ललता माई, सेढ़ शीतला ईंट पुजाई ।
नेत खेत गण गौर ढुकाई, 'हरीसिंह' ने खूब बताई ।।
सच्चो को कोई नहीं माने ।।४ दिल रहता०

दोहा

कलयुग में देखे कई कपटी भक्त सुजान ।
ज्ञानी ध्यानी बन रहे बुगले के समान ।।
भगवां रंग जोगी बने जुगति से खाली ।
ज्ञान ध्यान की परख नहीं यूं ही काया घाली ।।

भजन टेक

कई जोग जुगत समझाय के, कोई जटा रखाने वाला ।।टेर
मूंड मुंडाए हो ना जोगी, जटा रखाए हो ना जोगी ।
भस्म रमाए हो ना जोगी, देखी हमने भी रमाय के ।।
जोगी का देश निराला ।।१।। कोई०
शीश जटा कर चिमटा लीना, धेले में भगवां भेष कीना ।
मार्ग नहीं जोग का चीना, गांजा चरस उड़ाय के ।।
अवधूत बना मतवाला ।।२।। कोई०
महिमा वही जोगी की वरणी, उसमें एक मिले ना करनी ।
नाहक में बहकाई धरनी, विरथा अलख जगाय के ।।
कानों में मुन्दरा डाला ।।३।। कोई०
दिन भर जुते बैल की नांईं, उनको मस्ती व्यापे आई ।
योग क्रिया है अति कठिनाई, कोई बिरला जाने लगायके ।।
जाने नाग खिला लिया काला ।।४।। कोई०

पड़े जोहड़ पर सेवे भूतड़ी, खा खा गुटके सूजी थूथड़ी।
पूजे मूर्ख नार ऊतड़ी, बैठे ध्यान लगाय के ॥
बन रहा मेहनती मतवाला ॥५॥ कोई०
सीख सीख नर ठगी पुरानी, भोगे लड़के नार बिगानी।
कहै सभा में सच्ची बानी, 'बस्तीराम' बनाय के ॥
डाबर के रहने वाले ॥६॥ कोई०

भजन टेक

बिन भेद भर्म नहीं टूटा, मैंने सारे जतन बना लिए ॥टेर
किस्से झूलने और कहानी, कवि गिरधर की कुण्डली जानी।
गाय सीख राड़ बहु ठानी, रांझा ढोला गा लिए ॥
यूं ही मोंक भोंक सिर फूटा ॥१
पिंड भरा लिए कुरुक्षेत्र के, नहाए से पाप कटे न अन्तर के।
जल स्थान दर्श पत्थर के, जहां गया वहां पा लिए ॥
यों ही फिरा जगत में रूठा ॥२
चारों धाम फिरा में ठाली, हिंगलाज कलकत्ते वाली।
पुष्कर प्रयाग गया में काली, गंगा यमुना नहा लिए ॥
खाया जगन्नाथ पर झूंठा ॥३
काशी जाय फिरा पचकोसी, कटे न पाप हुवा निर्दोषी।
राखे व्रत आंता मासी, बहुत कष्ट सहै ॥
मन्दिरों में पीतल कूटा ॥४
जैनी कुरानी ईरानी सारे, वेद विरोधी बाजी हारे।
मस्जिद गिरजा ठाकुर द्वारे, सभी समझ समझा लिए ॥
मन हठ गया सबसे पूठा ॥५
मोड़ों का भी कर लई संगत, झूंठी देखी उनकी रंगत।
बने फिरे घर घर के मंगत, बहुते मूंड़ मुंडा लिए ॥
धोखा दे सब जग लूटा ॥६

जापों की क्या कहूं गति जी, बहुत पुजा लिए नार सतीजी।
जब थी मेरी मूंढ मती जी, बिन समझे धक्के खा लिए ॥
अब मिल गया वैद्य अनूठा ॥७
जब से सुनी वेद की वाणी, तब से हो गया आत्म ज्ञानी।
'दाताराम' कहैं सुन ध्यानी, मतलब थे सो पा लिए ॥
गढ़ गया सत्य का खूंटा ॥८

भजन

सब पैसे का खेल जगत में और नहीं कोई नाता ॥टेर
जिसने पैसा खूब कमाया, सो नर मरद मन भाता।
बिन पैसे की नारी भी, कहे मेरे वर सुहाता ॥१
पैसा हो तो आगे डोले, बिन पैसा कोई मुख न बोले।
दूध पिलावे पंखा दुलावे कहे तात और मात ॥२
पैसा होय बहन कहै भाई, सास सुसर कहै जवांई।
करे लाड़ चाव चाची ताई, हंस हंस बोले भ्राता ॥३
पैसा हो कन्या दे घर की, गुण अवगुण देखे न वर की।
आज तड़के में ही मर जावे, पैसा ही पैसा मन भाता ॥४
काशी जी से पंडित आवे, पैसा हो तो वेद सुनावे।
वेश्या नाचे गाना गावे, चला गुणी है आता ॥५
पैसे से है चतुराई आवे, बिन पैसे मूर्ख कहलावे।
'रामजीलाल' करी का गुण गावे पैसा देगा दाता ॥६

भजन राग बहर जकड़ी

विद्या बिन नैया कैसे होगी भव पार,
विद्या सीख जगत में जागो हो जाए उद्धार ॥टेक
विद्या बिन नर करे मजूरी, ढोये टोकरी करे बेगार।
नीच गंवार भोंदू कहें सारे, सभी जगह मिलती धुत्कार ॥
घास खोद नित करे गुजारा, सिर पर काठियों का भार।
सभी ठौर ठुकराया जावे, कोई न करता है प्यार ।१

नाजिम साहिब तहसीलदार, डिप्टी कलक्टर जागीरदार ।
विद्या सीख नर बने डाक्टर, वैद्य हकीम करे उपचार ॥
थानेदार हवलदार दरोगा, अधिकारी बन बैठे यार ।
कोई न्यायाधीश प्रधानमन्त्री, कानून मन्त्री बने अपार ॥
कोई गवर्नर सबके ऊपर, करता है सब पर अधिकार ।
देश विदेशों में विद्या पुजती, कामधेनु सम है करतार ॥
विद्या भूषण नर का सारा बता गये सब शास्त्र सार ।
बिन विद्या के पशु समान है, कर देखा है विचार ॥
विद्या के बल बना वकील, बैरिस्टर बन करे है न्याय ।
विद्या के बल शक्ति उपजे, खेती करे और व्यौपार ॥
डिप्टी कमिश्नर चीफ कमिश्नर, बन चमका दे यह संसार ।
विद्या से विज्ञान खोज कर, करे देश उपकार ॥
नये नये आविष्कारों से, करदे सभी ओर घमसान ।
शिरोमणि बन चमके देश में, करे देश विदेशों नाम ॥
खेतीहर और कलाकार बन, चमका दें निज भान ।
'कंवरसैन' ज्ञान विज्ञान बिना, सूना सब संसार ॥५

आरती

हर हर हर हर होय रही आरती, जय जय बोलो श्री आलम ।
निर्भय नगारा बाजे अगड़ बम्म बम्म ॥टे
सुख भर बैठा बाबा डोर हिलावे, तेरी सेवा में बाबा रहता हरदम ।
हर हर हर हर होय रही आरती ॥
तुम ही पेट तुम्ही पटवारी, मेरे तो हाल की तुझे ही मालूम ।
हर हर हर हर होय रही आरती ॥
चार कूंट और चौदह भवन में, सांची फिरे म्हारी सांई की कलम
हर हर हर हर होय रही आरती ॥
चार चरणजती 'गोरख बोले, भेख बाना की राखो नी कलम ।
हर हर हर हर होय रही आरती, जय बोलो बाबा श्री आलम

दोहा

पूरण शान्ति उसको मिले पढ़े जो ग्रन्थ विचार ।
लोहा से कंचन होवे छूटें सभी विकार ॥

भजन

काम क्रोध मद लोभ मोह ने, हे गुरु इनने मेरी मत मारी ॥टेक
केवल ब्रह्म रूप था मेरा, पंच तत्व में लिया बसेरा ।
इन्द्री आदि कर्म से लागी, बुद्धि है सबसे न्यारी ॥१
आदि जन्म का हूं अधिकारी, दुःख में याद आई बुद्ध सारी ।
नुवा खोज खोज के देखा, बिगड़ रही केशर क्यारी ॥२
शून्य समाधि में जाय समाया, चेला गुरुवा कुछ नहीं पाया ।
आप ही आप पुकारत आया, अब समझा मूर्ख सारी ॥३
धुन ही आसन अमर सिहासन, धुन में प्राण करे सुख वासन ।
रण मछन्दर 'गोरख' बोले, जान जान हुआ हितकारी ॥४

भजन

र हर हर हर होय हिया में, और वार्ता सब झूंठी ॥टेर
मेघ घटा म्हारे सतगुरु लाये, अमृत बूंदां हद मीठी ।
त्रिवेणी के रंग महल में, साधां लालां हद लूटी ॥१
णझुण रुणझुण बाजे बाजा, जगमग झलक रही ज्योति ।
सोहंकार के सोहंकार में, हंसा चुग रहा निज मोती ॥२
ांच चोर तेरी काया नगर में, इनकी पकड़ो शिर चोटी ।
ांचों को मार पचीसों को बसकर, जब जानूं थारी मजबूती ॥३
त् सुमिरन का सेल बनाले, ढाल बनाले धीरज की ।
काम क्रोध मद मार हटाले, जब जानूं तेरी रजपूती ॥४
क्की धड़ी का तोल बनाले, काण न राखो एक रत्ती ।
रण मछंदर जती 'गोरख' बोले, अलख लिखे सोई खरा जती ॥५

भजन

बावला झुक आया भीजे म्हारी काया रो चीर ॥टेक
प्रेम घटा चढ़ आई गगन से, तन मन भीज गया हरे रंग से ।
बरसे निर्मल नीर इन्द्र ज्यों लहराया ॥१
जहां बरसे वहां बिजली चमके, घन गरजे दामिनी दमके ।
बरसे अमृत धार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥२
बस्ती बसो चाहे बन उठ जावो, तीरथ जावो चाहे मल मल न्हावो
जिनका तन मन हो गया फकीर शब्द में चित्त लाया ॥३
'नाथ गुलाब' दिया गुरु हेला, भवानी नाथ सुनो निज चेला ।
उल्ट पवन की डाट गगन थारे घर छाया ॥४

भजन

मेरे सत गुरु मन ऐसा बनजारा । टेर
कच्चा कोट चौफेरे, कारीगर चेजारा ।
पांच तत्व की ईंट बनाई, तीन गुणों का गारा ॥१
देखा बाग बाग बिच माली, सींच बनाया क्यारा ।
भंवर वासना ले फुलवन की, कली कली रस न्यारा ॥२
डुंगर ऊपर बनी डूंगरी, उस पर भंवर गुंजारा ।
उस भंवरा में तपसी तापे, देख होय दीदारा ॥३
गंगा न्हाय गोमती न्हाया, न्हाया था बिच धारा ।
उस धारा की ज्योति जगत में, परले परसन हारा ॥४
मात पिता बन्धु सुत दारा, झूंठा जगत पसारा ।
साधु सन्त से मिल कर चलना, और जगत से न्यारा ॥५
नाथ गुलाब मिला गुरु पुरा, दीना ज्ञान अपारा ।
'भवानीनाथ' शरण सत गुरु की अमर नगर है म्हारा ॥६

भजन

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे राम भरम ने छोड़दे ॥टेर
पलकों के आगे अलख बावड़ी, नीर भरा भरपूर ।
अन्दर बाहर सहबस भरिया, क्या नेड़े क्या दूर ॥१
शिर से सकत उतार चूंदरी, हरदा भरम हटाया ।
तब तोही बरसे नित्य बावड़ी, रोम राम रहा छाया ॥२
पुस्तक लिखी न जाए बावरी, रेख खिंचे ना लीक ।
दृष्टि ना मुष्टि न आवे सजनी, पवनहूं से बारीक ॥३
दरिया लहर भेद ना बोरी, जीव ब्रह्म ना दोय ।
एक ही ब्रह्म सकल घट वासी, दिल की दुरमति खोय ॥४
हाथ में कंगन बांध सुहागिन, काहे लिया दुहाग ।
हाथ में मेंहदी नयन में सुर्मा, सारो नाथ 'गुलाब' ॥५

भजन

सुख सोवे नगरिया लोग, साधु जन कोई बिरला जागे ॥टेक
ब्रह्म आवाज हुई घट भीतर, शंख पखावज बाजे ।
शब्द विवेकी बिरला साधु, अगम निगम से आगे ॥१
मान बड़ाई ईर्षा ममता, सुगरा हो सोही त्यागे ।
बिन त्यागे हरि कबहु न मिलसी, भ्रम भूत उठ लागे ॥२
खोटा वक्त पहरुवा ठाडे, जाने न दे आगे ।
मान सरोवर हंसा सोवे, बिन सत गुरु नहीं जागे ॥३
अम्बर बरसे धरती भीजे, बिन बरसे झड़ लागे ।
'भवानीनाथ' शरण सतगुरु की, ब्रह्म ज्योति मांहि जागे ॥४

भजन

मेरा राम मिल्या मेरा पीव मिल्या,
सन्तो तन मन खोजीराम मिल्या ॥टेक
जबलग मैं तब लग हरि नाहीं, मैं जब मिटी हरि आप हुआ ।
सपना में सखो दो जणा सुत्या, खुला नयन सब एक हुआ ॥१

जन जन हमसे प्रीत करी थी, साहिब मुख से ना बोल्या ।
जन से छोड़ करी सत गुरु से, साहिब परदा तब खोल्या ।।२
अचरज ऐसो सुणों भाई साधो, बुंदिया में समद समाय रह्या।
अड़सठ तीरथ घट ही में गंगा, हरदम मनुवा नहाय रह्या ।।३
बिना बीज का बिरछा देख्या, चौदह लोक में छाय रह्या ।
धरण गगन जन दोनों छांड़ि, सबसे आगे जाय रह्या ।।४
रहम नाथ गुरु धरिया दस्तक, मोह भ्रम सब दूर कह्या ।
'नाथ गुलाब' मिट्या दुःख तेरा, अमरापुर में बास हुवा ।।५

दोहा

साध सती अरु सूरमा, जो जन लेसी जाण ।
अभिमानी उस जीवका कबहुं न होय कल्याण ।।
परवाना परतीत ले, समझे सुरत लगाय ।
बना नाथ वे प्राणियाँ, सहज ही मुक्त हो जाय ।।

भजन राग मंगल

आज दिहाड़ो गरुवा देवरो, गांवां मंगलाचार । टेर
सन्त द्वारे चालो सखी, सज सोलह सिणगार ।
लघुता का लंगर पहर लो, धन आज रो दिन वार ।।१
पांच सखी भेली हुई, मिली पचीसों आण ।
अर्ध सुर्ध आसन किया, कर रही पवन पिछाण ।।२
तन केरो दीपक करूं, बाती करूं मनसार ।
तेल सिचाऊँ प्रेम रो, जाग्यो ब्रह्म विचार ।।३
इड़ा पिंगला सोझ कर, सुषमण कियो निहार ।
रिम झिम करती कामनी, आई त्रिवेणी द्वार ।।४
दशवें में दरशन भया, अनहद घुरिया निसाण ।
जोत झला मिल हो रही, यह सांचा सै नाण ।।५
झड़ी हथाई हरि नाम री, कर रिया सन्त विलास ।
बीज बिराजे गुरु आपण, करोड़ भानु प्रकाश ।।६

जीयाराम गुरु भेटिया, भागा भ्रम अंधियार ।
'बनानाथ' चरणों रहो, नित प्रति करो दीदार ।।७

भजन राग आसावरी

साहिब थारी कुदरत पर कुरबानी ।
अगम बिरला जानी, परम गुरु कुदरत पर कुरबानी ।।टेर
पल में राव रंक कर डारे, रंक करे सुलतानी ।
तेरी गति तू ही जाणे कर्त्ता, मैं हेरत रह्यो हैरानी ।।१
तें गज सिन्धु डूबतो त्यारो, चीर द्रोपती रानी ।
भारत में भंवरी रा अण्डा, राख लियो हरि जानी ।।२
हरि चंद कंवर तारांदे रांनी, जा भरियो नीच घर पानी ।
संकट दे सन्त सहाय करी जद, दर्शन दिया हरि आनी ।।३
केताई सन्त हुआ धरनीपर, ज्यारी विगत करे कई बानी ।
'बनानाथ, कहे अरज हमारी, सुण साहिब निर्वाणी ।।४

भजन

फकीरी यह रमज निरन्तर जाण ।
वेद किताब वाणी नहीं खाणी रहता आप अवाण ।। टेर
चले न अचल गिरे न त्यागे, लीना पद निर्वाण ।
फुरे न अफुर करे न अकरता, अलख उनमनी पिछाण ।।१
सत्य न असत्य दिवस नहीं रजनी, अनुभव एक रस भाण ।
भर्म न कर्म अहं कई पारा, बुद्ध की थकत पिछाण ।।२
दोय न एक ज्ञेय नहीं ज्ञाता, ध्येय ध्याता की हाण ।
परा न अपर दृश्य नहीं दृष्टी, आप ही आप समाण ।।३
जीव ब्रह्म की कहुँ न कल्पना, कल्पन हार विलाण ।
'नवलनाथ' निरन्जन मिलिया मनु किया उलट पियाण ।।४

भजन

पूरण करिये सोही नारी है, पूरे सो पुरुष कहाय ।
नारी पुरुष मिल जग रचा, कहूं भेद समझाय ।।टेर

नवलनाथ गुरु कृपा करके, भ्रम भूल मिटायो ए।
'उत्तमनाथ' स्वरूप समझ के, निज निश्चय थायो ए ॥५

भजन (हेली)

अब मन गोबिन्द गुण गावो ए।
ऐसी रमज समज से ही जीवो परम पद पावो ए ॥टेर
अघु मृदु राजी होय के, सत्संग में नहावो ए ॥
मान गुमान मद मत्सर, सब दूर बहावो ए ॥१
सुर दुर्लभ ये नर तन पायके, विरथा न गंवावो ए।
स्वांसो स्वांस शिव सुमिर के, जग जीत ही जावो ए ॥२
जल थल अनल अनिल, गभ में कर ब्रह्म ही भावो ए।
द्वैत भर्म काम कर्म सब, अविद्या कूँ ढावो ए ॥३
नवल नाथ गुरु शब्द सुनायो, जामें लिव लावो ए।
'उत्तमनाथ' सोही समझ के, भव भाव मिटावो ए ॥४

दोहा

गुरु देवन के देव हैं, रटत शेष अरु महेश।
शुद्ध स्वरूप लिखाय के, भ्रम न छोड़े लेश ॥
कर चल करना होय सो, क्यों यह समय गंवाय।
नहीं भरोसो काल को, प्राण रहे या जाय ॥

कुण्डलियां छन्द

सतगुरु साखी जीव को, जानत मन की बात।
डूबत ही को त्यार दे, मेटत यम की घात ॥
मेटत यम की घात, दास के सब दुःख हरता।
भेद भर्म सब टार के, पार भव सिन्धु से करता॥
वेद ग्रन्थ में गावते, साखी सन्त बखान।
'करणनाथ' कहे सत गुरु, सामर्थ सिन्धु समान॥

पृथ्वी प्रथम नारी भई, जल जाको भरतार।
उभे खेत अन्न ओखती, सब रचना आधार ॥१
अन्न रस मांही एक पुरुष, रज बीरज नर अरु नार।
दोनों मिल रचना शरीर की, अन्न रस पुरुष आधार ॥२
पवन मांहि एक पुरुष है, अन्न रस पुरुष के पार।
सर्व रसों को पूर्ता, पवन पुरुष भज सार ॥३
मन मांहि एक पुरुष है, रहे पवन पुरुष कूं धार।
ता करि पूरण पवन होय, मन पुरुष सचियार ॥४
विज्ञान पुरुष ता ऊपरे, मन कूँ पूरे सोय।
पूरण करे विज्ञान कूं, पुरुष आनन्दमय जोय ॥५
आनन्द पुरुष का रूप है, पुरुष ही आनन्द अपार।
'नवलनाथ' परे कोई नहीं, जिण पूर्यो संसार ॥६

दोहा

बार बार विनती करूं, दीज्यो ज्ञान सवाय।
ऐसे नवल नाथ के, चरणों में शीश नवाय ॥

भजन बधावा

भव तरने को अवसर आयो ए।
बहुत जन्म के पूर्व पुन्य से मानुष तन पायो ए ॥टेर
ईश्वर कृपा सन्त समागम, गुरु चरणों में आयो ए।
प्रेम के पुष्प ध्यान को धूप, दे चित्त चंदन चढ़ायो ए ॥१
शील सन्तोष अमान अहिंसा, दम दया उर लावो ए।
काम क्रोध मद लोभ मोह को मार भगावो ए ॥२
त्याग वैराग श्रद्धा को धार के, विक्र भाव हटावो ए।
अनेक युगों के मैल त्याग के, ज्ञान गंगा में नहावो ए ॥३
गुरु देव पायो नहीं जब, बाहर घूमण धायो ए।
सतगुरु शब्द सुनाय के, मोहे आत्म ज्ञान बतायो ए ॥४

भजन राग मधु माधवी

आवो ए सहेलियो मिलकर मंगल गावो ए।
मंगल गावो ए अपनो देव मनावो ए ।।टेर
सतगुरु आया पांवणा, म्हारे घणों उमावो ए।
बालद लाया ज्ञान की, सेवा कर पावो ए ।।१
पाँच सखी रिलमिल कर चालो, गुरुन ल्यावो ए।
जाजम चौकी डाल चौक में, सतगुरुन बिठावो ए ।।२
भोजन भाव छत्तीसों ला, गुरु भेंट चढ़ावो ए।
पान फूल वर्षाय के, शिर चरण नवावो ए ।।३
कंचन थाल चौमुखो दिवलो, कपूर जलावो ए।
मिल-जुल करो आरती, गुरां री गावो बधावो ए ।।४
गुरु से कपट रखो मत राई, जो सुख चावो ए।
'करणनाथ' कर गुरु की सेवा, मौज उड़ावो ए ।।५

भजन राग पहाड़ी

दुनियां में बाबा कोई किसो का नाहीं ।।टेर
क्या रोवे नर देख मृतक को, मेरो-मेरो करे भाई।
तू भी इक दिन नहीं रहेगा, आखिर चलना वांहीं ।।१
कौरव कंस हिरणाकुश रावण, हो गये बली घणाई।
ऐसे-ऐसे बली गए धारण पर, जिनकी खाक न पाई ।।२
उगा सो छिपता नित्य देखो, फूले सो कुमलाई।
पदा हुवा सो अन्त मरेगा, चिन्ता मत कर भाई ।।३
त्याग कल्पना झूंठे जग की, राम भजो मन मांही।
'करणनाथ' कहे सब दुःख नाशे, आनन्द रहो सदाई ।।४

दोहा

बहुत गये बहु जा रहे, बहु हो रहे तैयार।
सदा कोई थिर ना रहे, देखो नयन पसार ।।

भजन राग आसावरी

अब नर चेत समझ चल भाई।
काची कायो रो भाई कांई भरोसो, कागज ज्यूं गल जाई ।।टेक
चौरासी दुःख भरतां-भरतां, अब मानुष देही पाई।
अब तो जाग त्याग मोह मद, कर कुछ सुफल कमाई ।।१
जैसे मोती होय ओस को, ये तन ऐसो कहाई।
बिन सत देर लगे नहीं पलकी, तन की झूंठी बड़ाई ।।२
गर्भ वास ही नरक वास है, यामें फर्क कुछ नाहीं।
चौरासी से बचनो चाहे तो, नित सुमरो सत सांईं ।।३
नवलनाथ गुरु पूरा मिलिया, पल पल रहे चिताई।
'करणनाथ' कहे सुनो भाई साधो, करो हरि भजन सदाई ।।४

दोहा

क्यों रोवे अरु शिर धुने, देखत जग की रीत।
कोई किसी का है नहीं, झूंठी जग की प्रीत ।।

भजन राग सोरठ

मन तू अब भी चेत मेरा वार।
पल पल छिन छिन घटत उमरिया ज्यों अंजली को नीर ।।टेर
पूर्व भाग पुन्य कोई जाग्या, पायो मनुष्य शरीर।
अबहू चेत सुमर सत सांई, तोड़ कुटम्ब को सीर ।।१
यो संसार जाण मतलब को, भाई बन्धु सुत हीर।
सम्पति देख सज्जन बन लूटे, भगे देखकर भीर ।।२
तज प्रपंच विषय मोह मन से, दिल बिच धारो धीर।
सबसे तोड़ जोड़ नेह हरि से, हो जाए परली तीर ।।३
यह तन बार बार नहीं पावो, मानो बचन आखीर।
'करणनाथ' कहे सुमिर नर हरि को, मिट जाय यम की पीर ।।४

कुन्डलियां छन्द

मान बड़ाई बैर छल निन्दा और अहंकार।
जिस तन यह लक्षण बसे, वो शठ मूंढ गंवार ॥
वो शठ मूंढ गंवार, वचन मीठा नहीं बोले।
सोही बुद्धि मतिहीन, स्यान ज्यों भटकत डोले ॥
सन्त सभा में बैठ कर, वाद-विवाद बढ़ाय।
'करणनाथ' उस दुष्ट को, मुख देखयां पत जाय ॥

भजन राग खम्माच तीन ताल

राम भजले उमरिया बीती चली, बीती चली देखो यों ही चली ॥टेर
भाग पुण्य कोई जागा, जब यह मानुष देह मिली ॥१
भूले राम कामवश होके, इसमें बताओ बात क्या है भली ॥२
एक दिन काल पकड़ खा जावे, तोड़ मरोड़े सब नली नली ॥३
यम के दूत पकड़ ले जायेंगे, जाय छिपोगे कौनसी गली ॥४
'करणनाथ' कहे जो सुख चाहे, तजदो विषय मोह विष की डली ॥५

दोहा

जतन बिना संसार में कोई न उतरे पार।
हे प्रेम जतन से बांध के खींच ले करतार ॥

भजन

चल हंसा उस देश, देश की शोभा न्यारी रे।
तूने मिल जा लाल अमोल, अमोल की कीमत न्यारी रे ॥टेक
नहीं वहां अभिमान पाप नहीं, रात दिन भाई रे।
करोड़ भानु प्रकाश लिखा है, वहां फूल हजारी रे ॥१
ना वहां कर्म नहीं वहां धर्म, ना आचार बिहारी रे।
उसी देश का रास्ता ऐसा, जिण मकड़ी तार की डोरी रे ॥२
हद में निरंजन पैर पसारा, बेहद में जंजीर जड़ाई रे।
हद का ताला बेहद की जंजीर, तोड़ दे लेके ज्ञान कटारी रे ॥३

अड़ा उड़द से पार जा, सतगुरु से सैन लिखाई रे।
कहे 'रामनाथ' सुनो भाई साधो, काल जीतकर मिल गयो।
तखत हजारी रे ॥४

दोहा

सात द्वीप नौ खण्ड में सतगुरु आया दातार।
क्या राजा क्या बादशाह मंगत भई संसार ॥

भजन

कर भजन छोड़ संसार के झगड़े नहीं दुःख पायेगा ॥टेर
ना तू किसी का ना कोई तेरा, पक्षी तरवर रैन बसेरा।
जिस घर को कहता घर मेरा, झूंठे दावे दिन चार के ॥
तज दे नहीं पछितावेगा, ॥१॥ झगड़े नहीं दुःख पावेगा।
इस घर में कितने ही रह गए, वो दिन अपना अपना कह गये।
काल अग्नि में सबरे बह गये, तज मार्ग यह अहंकार का ॥
नहीं नरकों में जावेगा ॥२॥ झगड़े नहीं दुःख०
दुश्मन साहू सगा न कोई, अन्त साथ में लगा न कोई।
इससे ज्यादा दगा न कोई, तात मात सुत नार के ॥
इस प्यार में भरमावेगा ॥३॥ झगड़े नहीं दुःख०
कुछ नेकी कर बदी ना कर तू, बदी बुरी है बदी से डर तू।
'गंगादास' पद चित्त में धर तू, कर दावे उस दरबार को ॥
फिर काल नहीं खावेगा ॥४॥ झगड़े नहीं दुःख०

भजन

भजन बिन सब जग भरत तबाई हो ॥टेर
मात पितु पुत्तर परिवारा, जिनसे प्रीत लगाई हो।
उस दिन कोई होय ना साथी, तात मात सुत भाई हो ॥१
जो कुछ करना करी थी पहले, सो अब आगे आई हो।
अबके कर्म जन्म अगले में, देंगे फेर दिखाई हो ॥२

ना मालूम तेरे सिर ऊपर, कजा कोप के छाई हो ।
तू भवौ विकल मोह सागर में, बह्यौ थाह न पाई हो ॥३
अजहूं चेत हेत कर बन्दे, हरि से जन्म सुखदाई हो ।
'गंगादास' कहे मन मेरे, मत कर आस पराई हो ॥४

दोहा

शब्द शब्द कहते फिरें मुंह के बहुत लबार ।
पर नहीं जानत तनिक भी शब्द शब्द का सार ॥
पिंगल छुवा न हाथ से गुरु से लिया न ज्ञान ।
ऐसे कवि क्या करेंगे कविता का रस पान ॥
आकार उकार मकार से बना एक ओंकार ।
अलग-अलग इनका अर्थ करो तब समझूं हुसियार ॥

भजन

सुनो साधो भाई सन्देशा चित्त धर के ।
बिन बादल बरसे बूंदां भर के ॥टेर
धरती बरसे अम्बर भीगे, मेह आयो खूब उभर के ।
ताल तलैया सभी फूट गये, समुन्द्र चले उलझ के ॥१
काटे पेड़ फूल फल आवे, सींचत जाय कमल के ।
मछली फल को चढ़कर तोड़े, मेंढक लाये भरके ॥२
शाल दुशाले कुतिया ओढ़े, सोवे पांव फैला के ।
बिल्ली चली अपने सुसराल, आंखों में कजरा भरके ॥३
भैंस पदमनी सिंगार बनायो, नौ सर हार पहन के ।
कहै 'रामनाथ' सुनो भाई साधो, जाना उत्तर देके ॥४

भजन

टिकसिया काट दो स्वामी, हमें बैंकुण्ठ जाना है ।
हरि की शरण में जाकर, प्रभु का दर्श पाना है । टेर

कोई जन राम के प्यारे, राम की शरण में पहुँचे ।
देर हमको हुई भारी, माफ जाकर कराना है ॥१
फंसा माया के झंझट में, कुटुम्ब परिवार में मिल के ।
निकलना हो गया मुश्किल, हुवा यह दिल दीवाना है ॥२
काम घर के लगे हैं ऐसे, बात जाने की बिसराई ।
समय अब रह गया थोड़ा, विनय उनसे सुनाना है ॥३
यह गाड़ी आपकी चलती, चलाते आप ही इसको ।
हो मालिक आप स्टेशन के, दया करके चढ़ाना है ॥४
न बोझा पास है मेरे, न कोई बिल्टी करानी है ।
टिकट एक प्रेम का देकर, सिर्फ गाड़ी बिठाना है ॥५
सुनी बिनती यह स्वामी ने, टिकट निज नाम की देकर ।
बिठाया तुरन्त गाड़ी में, हुआ निर्भय रवाना है ॥६
माफ कर राह का चक्कर, ब्रह्म के धाम में पहुँचे ।
मिले बैंकुण्ठ के मालिक, दास अपना पहचाना है ॥७
माफ. अवगुण किये सारे, दयालु दीनबन्धु ने ।
शरण में रख लिया अपने, रूप अपने समाना है ॥८
'नाथ कवि' के हृदय बासी, चराचर में समाये है ।
राम सबके पिता माता, पतित पावन सुवाना है ॥९

भजन (आरती)

मन्दिर चालो जी, बैंकुण्ठनाथ का दर्शन करस्यांजी ॥टेर
आमा सामा बण्या तिबारा, मन्दिर की छबि न्यारी जी ।
कवांड़िया की बहार सांवरा, म्हाने लागे प्यारी जी ॥१
जामो प्रभुजी के सोहे केशरियो, दुपट्टा की छबि न्यारी जी ।
कलंगी की बहार सांवरा, म्हाने लागे प्यारी जी ॥२
रतन जड़ित कंचन को गहनो, सर्व सोना को सोहे जी ।
ठोड़ी मैलो हीरो सांवरा, म्हारो मनड़ो मोहे जी ।३

श्री देवी और लीला देवी, दोनों तरफ से सोहे जी ।
शेष नाग को बहार सांवरा, म्हारो मनड़ो मोहे जी ।।४
'जमुनादासी' यों उठ बोली, एक अर्ज म्हारो मानो जी ।
जन्म जन्मको चाकर नरसी, सांवरा म्हाने शरणा राखोजी ।५

आरती श्री रामदेवजी की

रामा धणी थारी करूं आरती नित पूर्ण दातार ओ ।
सांचा धणी थारी करूं आरती ।।टेक
पहलो जन्म लियो दशरथ के राम लखन अवतार ओ ।।१
दूजो जन्म लियो साधु के देव कला अवतार ओ ।।२
तीजा जन्म लियो नन्दजी के कान कुंवर अवतार ओ ।३
चौथा जन्म लियो तंवरां के रामा कुंवर अवतार ओ ।।४
हरि शरणे भाटी हीरानंद बोल्या पत बानाकी राखोओ ।।५

आरती भोलेनाथजी की

धन धन भोले नाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे बीराने में ।।टेर
जटा जूट का मुकुट शीश पर, गले में मुन्डों की माला ।
माथे पर छोटा सा चन्द्रमा, कपाल का कर में प्याला ।।
जिसे देखकर भय व्यापे, सो गले विच लपटा काला ।
और तीसरे नेत्र में तुम्हारे, महा प्रलय की है ज्वाला ।।
पीने को हर वक्त भांग, और आक धतूरा खाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे बीराने में ।।१
चर्म शेर का वस्त्र पुराना, बूढ़ा बैल सवारी को ।
तिस पर तुम्हारी सेवा करती, धन-धन गौरा बिचारी को ।।
वो तो राजा की पुत्री है और व्याही गई भिखारी को ।
क्या जाने क्या देखा उसने, नाथ तेरी सरदारी को ।।

सुनी तुम्हारे ब्याह की लीला, भिखमंगों के गाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे बीराने में ।।२
नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सब से उत्तम है नंगा ।
याही से शोभा पाई है जो बिराजती शिर पर गंगा ।।
भूत प्रेत बैताल साथ में, यह लश्कर सब से चंगा ।
तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यूं भिख मंगा ।।
अलख मुझे बताओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे बीराने में ।।३
यह तो सर्गुण का स्वरूप है निर्गुण में हो आप ।
पल में प्रलय छिन में रचना तुम्हें नहीं है पुन्य पाप ।।
किसी का ध्यान नहीं है तुमको अपना ही करते हो जाप ।
अपने बीच में आप समाये आपही आप में रहेहो व्याप ।।
हुवा मेरा मन मग्न ये प्रभु, ऐसा नाथ कहाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये, आप बसे बीराने में ।।४
कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन ।
अपने तन पर खाक रमाई, नागों के पहने भूषण ।।
भक्ति मुक्ति के दाता हो मुक्ति भी तुम्हारे गहे चरण ।
'देवीसिंह' कहै दास तुम्हारे हित चित्त से नित करे भजन ।।
बनारसी को सब कुछ बख्सा अपनी जबां हिलाने में ।
तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे बीराने में ।५

दोहा

प्रत योनि को पाय के दुःखी भये अज्ञान ।
आप दुःखी दुःख देत है उठ गई सब पहिचान ।।
देह छूटे मन में रहे सहजो जैसी आस ।
देह जन्म वैसे ही मिले, जैसे ही घर बार ।।

चौपाई पद

जाकी रहे आस मन्दिर में होकर घूंस फिरे घर घर में
रहे वासना द्रव्य मंझारा जन में नाग बने वह कारा।
रहे वासना तिय के वर की कुतिया होय चूहरे घर की
रहे वासना तिरिया मांही कोढ़ी श्वान धरे तन यांही।
जाकी रहे पुत्र में आशा सूअर जन्म नीच घर बासा।
जाके मन रहे राज द्वारा हस्ती होय शिर में ले छारा॥
रहे वासना वाहन संगा होय जन्म ले बावन अंगा।
जहां वासना जित ही जाही यह मत वेद पुराण में गाई॥
चरण दास गुरु मोहि बताई तजो वासना 'सहजो बाई'।
बूढ़ा बालक के हो तरुण अकाल मृत्यु इक काल बताई।।१
शस्त्र मौत मरे जो कोई यह भी मौत अकाल ही होई।
बिगड़े रोग पक्ष नहीं कीन्यों यह भी मौत अकालही चीन्यों॥
जो कोई भांति विष खा मरे और पावक में कूद मरे।
जल में डूब जाय कोई कैसे लागे प्रेत मरे कोई ऐसे॥
सांप डसे छूटे जो काया महलात के नीचे दबि जाना।
कोई ठग फांसी दे मारे जंगल पशु तोड़ जो डारे॥
अकस्मात जो मृत्यु होई अकाल मृत्यु कहै सहजोबाई।
यह सब मृत्यु अकाल बताई यूं कहती है 'सहजोबाई' ॥२

भजन राग कामोद

सखीरी आज आनन्द देव बधाई।
सतगुरु ने अवतार लियो है रिलमिल मंगल गाई ॥टेर
अवधूत लीला कहा बखानों मोपे कही न जाई।
बहुविधि बाजे बाजन लागे सुनत हिया हुलसाई ॥१
धन्य भादो धन्य तीज सुदि है जा दिन प्रकटे सांईं।
धन्य धन्य कुंजो भाग तिहारे चरणदास सुत पाई ॥२

कलियुग में हरि भक्ति चलाई जन की करी सहाई।
श्री सुकदेव करी जब कृपा गावे 'सहजोबाई' ॥३

भजन राग ताल त्रिताला

बाबा काया नगर बसाई।
ज्ञान दृष्टि सूं घट में देखो सुरती निरती लौ लाई ॥टेर
पांच गारी मन बस कर अपने तीनों ताप नसाई।
सत्य संतोष गहे दृढ़ सैती दुर्जन मारि भगाई ॥१
शील संतोष धीरज कूं धारो अनहद बम्ब बजाई।
पाप बतियाँ रहन ना दीजे धर्म बाजार लगाई ॥२
सुबस बास जब होवे नगरी बैरी रहै ना कोई।
चरणदास गुरु इल्म बतायो 'सहजो' संभलो सोई ॥३

मनहर छन्द

चाहे भगवां भेष धर, केश हू जटायें राख।
गुरु बिना विवेक ज्ञान, वैराग नहीं पायगा॥
भावें ऋषिकेश जाय, काशी हरिद्वार नहाय।
गुरु बिना भटकत, फिरता ही तू धायगा॥
चाहे दिन रात पढ़, वेद हू पुराण रट।
गुरु बिन नहीं गति, वोही तुझे तरायगा॥
'चुन्नीलाल' गुरु शरण, जाय कुछ सीख ले।
तब ही कल्याण सुख, शान्ति थिर थायेगा॥
दोहा—तन पवित्र सेवा किये धन पवित्र दिये दान।
मन पवित्र हरि भजन से इस विधि हो कल्याण॥

आरती भजन—तर्ज मारवाड़ी

श्री चार भुजा महाराज मेड़ता रा बासी।
मेरी इतनी अर्ज सुन नाथ काट जम फांसी ॥टेर

थारो गौर वदन है रूप भुजा है चारी ।
थारे शंख चक्र गदा पदम विराजे न्यारी ॥
थारे जरकस जामो सोहे गले बिच मोती ।
दुःख हरो द्वारकानाथ पुरी के बासी ॥
थारे तुरला चार हजार का जगमग ज्योति ।
थारे ध्यावे नर और नार मेड़ता बासी ॥
थारे मोर मुकुट में बीच जड़ाऊ हीरा ।
थारे गल वैजन्ती माल मुख में है बीड़ा ॥
थारे केशर तिलक ललाट कुण्डल थाने साजे ।
थारे मुख की शोभा देख चन्द्रमा लाजे ॥
थारे लाडु जलेबी रो भोग कलाकन्द साजे ।
थारे दूध रबड़ी का भोग ठाकुर जी लागे ॥
पंडित को लड़को 'चन्दर' रागनी गावे ।
जो करे भजन दिन रात मोक्ष पद पावे ॥
थारे शिव सनकादिक नारद वीणा बजावे ।
थारी इन्द्र बोले जयकार अप्सरा गावे ॥
मेरी इतनी अर्ज सुन नाथ……

भजन राग आसावरी

ऐसा मेरा सत गुरु शब्द सुनाया ।
सोहं-सोहं कहे समझाया, बिन जिह्वा गुण गाया ।।टेक
मूल कमल से पावन रोका, षट चक्कर पर लाया ।
नाभि कमल मध्ये नागिन सूती, जांको जाय जगाया ।।१
नागिन मार नाभि से चलिया, मेरू दण्ड चढ़ाया ।
बंक नाल की घाटी होकर, दशवां जाप समाया ।।२
दशवां देव दीदार दरसिया, जगमग जोत जलाया ।
अष्ट पहर आनन्द सुख पाता, हंसा निर्भय थाया ।।३

सच्चिदानन्द मिलिया गुरु पूरा, अचल मार्ग बताया ।
'दास गोपाल' शरण सतगुरु की, फेर काल नहीं खाया ।।४

दोहा

हद बेहद दोनों नहीं पिण्ड ब्रह्मण्ड नायं ।
आद अन्त मद्ध है नहीं मम आत्म के मायं ।।

भजन राग आसा व गौड़ मल्हार

साधो बेगम देश हमारा, जन्म मरण वहां है नहीं ।
नहीं लागे यम का सारा ।।टेक
धरन गगन पवना नहीं, नहीं अग्नि जल धारा ।
चन्द्र सूर्य तारे नहीं, नहीं तां भाण उजारा ।।१
सोवन शिखर के ऊपरे, सप्त भूमि के पारा ।
पिण्ड ब्रह्माण्ड है नहीं, चौदह सुन्न से न्यारा ।।२
राम खुदा दोनों नहीं, ब्रह्मा शिव ओ३म्कारा ।
लखणी भखणी तां है नहीं, नहीं कोई लिखने हारा ।।३
भाव अभाव जहां है नहीं, नहीं म्हारा नहीं थारा ।
'गोपाल' कहे मोई जाणासी, आप ही में आप दीदारा ।।४

भजन राग सोरठ मल्हार

हेली मैं वासी उस धाम का, जहां नहीं धूप न छांय ।टेक
हेली चन्द्र सूर्य दोनों नहीं, धरन गगन भी नाय ।
हेली तारा गण दामिन नहीं, नहीं मेघ बरसाय ।।१
हेली चारूं खाणी है नहीं, नहीं तां पवन पसार ।
हेली जीव ईश दोनों नहीं, नहीं पावक जल धार ।।२
हेली योग यज्ञ तप है नहीं, नहीं कोई जाप अजाप ।
हेली सर्व आतमा एक है, भरियो माप अमाप ।।३
हेली पाला गल पाणी भया, त्यों चैतन ब्रह्म अपार ।
हेली जहाँ माया का चिन्ह नहीं, नहीं कोई वेद उचार ।।४

हेली सच्चिदानन्द सत गुरु मुझे, सो निज दिया लिखाय ।
हेली 'दास गोपाल' निर्भय भया, आपूं आप के माय ।।५

कुण्डली

शब्द स्पर्श रूप रस गंध चित मन बुद्ध अहंकार ।
इनका स्वभाव सुधार के कर सुमिरन हर बार ।।
कर सुमिरन हर बार तार त्रिकुटी लागे ।
खुले भर्म का पाठ जोत दशों दिश जागे ।।
पांच विषय अन्त करण इन्द्रियां बैठे हार ।
'जीवादास' निजस्वरूप का तब पावे दीदार ।।

दोहा

पांच तत्व का पूतला मनुष्य ताको नाम ।
जाति मनुष्य में है नहीं व्यापक जीवाराम ।।
रजो गुण से इन्द्री भई तमो गुण से तत्व पांच ।
सतो गुण से भये देवता चरण दास कहै सांच ।।
पांच पच्चीसों देहा संग गुण लीनो है लार ।
चारों अन्तः करण ये चित मन बुद्ध अहंकार ।।

भजन राग छन्द जकड़ी

तुम योग युक्त चित धार के, अब काया नगर को देखो ।।टेर
अष्ट कमल अष्ट कुम्भ, अष्ट योग अष्ट साध ।
दस मुन्द्रा दस इन्द्र, ओम् नाम ले अराध ।।
दस पवन कबज कर, प्रकृति ले इनके बाद ।
दसवें माहीं ध्यान धर, सुनेगा तू दसों नाद ।।
कूड़े माहीं लाल छुपी, वहीं तुझे रहे लाद ।
रोग निद्रा दूर होय, दूर होय पर माद ।।
वही पद पाया जाका, अन्त होय नहीं आद ।
जीव जेल फँस रहा, वह भी हो जाय आजाद ।।
सब कर्म भ्रम को मार के, फिर छुट जाय यम लेखो ।।१

अष्ट जोड़ छः चक्कर, नौ सौ ही नाड़ी मान ।
सप्त द्वीप नव खण्ड, चौदह लोक सही जान ।।
सात ही समुन्दर जामें, इक्कीस स्वर्ग पिछान ।
चार अन्तःकरण वामें, मन है बड़ा शैतान ।।
अमी रस कुण्ड भरा, वाही में जा करले पान ।
गंगा जमुना बह रही, जा ही में जा कर स्नान ।।
वर्ण आश्रम तोड़ छोड़, कुम कुटुम्ब कान ।
अखण्ड समाधी धार, भूल सब देही मान ।।
जब सम दृष्टि शुध सार के, सर्व एक आत्मा पेखो ।।२
पांच कोस पांच देह, पांच ही हथियार देख ।
पांच दासी पांच फांसी, पांच ही क्लेश पेख ।।
पांच ख्याति तीन नारी, तीन ही कर्म लेख ।
सत्य वस्तु सत्य जान, झूंठ को दे दूर फेंख ।।
तीन काल तीन जाल, तीन ही अवस्था देख ।
विवेक वैराग्य आदि, साधनों के मन को टेक ।।
कई कई मत चले, कई चल रहे भेख ।
सच्चे गुरु बिना दूर, होय नहीं यम रेख ।।
तन मन धन गुरु पे वार के, सब काम क्रोध को फेंको ।।३
सत गुरु दया कर, यह सैन हमें दीनी ।
श्रद्धा राख शरण जाय, प्रेम कर हम लीनी ।।
वही सन चित्त धार, काया गढ़ लिया चीनो ।
श्रुति स्मृति निर्ति, या को पकड़ एक कीनी ।।
विषय त्याग एक हरि, नाम रस बूटी पीनी ।
गुरु नम ज्ञान जामें, रहूँ सदा मम भीनी ।।
सच्चिदानन्द गुरु देव, चादर ओढ़ाई झीनी ।
दास यूँ 'गोपाल' नित, वाही में मस्त रहनी ।।
गुरु मुख से वेद विचार के, मन ज्ञान अग्नि में सेखो ।।४

भजन राग आसा व गौड़ मल्हार

साधो भाई पोल में ढोल बजावे ।
भेद वादी गीदड़ सम जानो अपनी गावे ।।टेक
माया जोड़ महन्त बन बैठे, साधु संग नहिं भावे ।
केल को छोड़ बबूल को पकड़े, भव जल गोता खावे ।।१
ले तंदूरा गावण लागे, परा बोल चिल्लावे ।
मध्या भेखरी को सुध नाहीं, झूँठी बात बतावे ।।२
बाणी करे अर्थ नहीं जाणें, चल साधु ढिग आवे ।
सन्त यथार्थ अर्थ बतावे, सो तो मन नहीं भावे ।।३
सांची बात सन्त जब कहै, भेद वादि भड़कावे ।
सिंह केशरी गर्जन लागे, गीदड़ खोज ना पावे ।।४
सांचे गुरु बिना भ्रम न जावे, दृग बिन पुरुष कहावे ।
दास 'गोपाल' कहे भाई साधो सूर्य नजर नहीं आवे ।।५

भजन राग आसावरी

साधो भाई गौ सिंह को खाया, मोय अचम्भा आया ।टेक
चिड़िया जाय बाज को झपटा, अग्नि मायं झुकाया ।
लागत अगिन शीतल हो गया, बार-बार सुख पाया ।।१
मछली उल्ट कीर को पकड़ा, लीना जाल फंसाया ।
खाकर मांस मगन भई मछली, कीर मेरे मन भाया ।।२
उस मछली के पुत्र जन्मिया, रूप रंग बिन काया ।
निर्भय होय रहे सब जग में, काल को नाच नचाया ।।३
सच्चिदानन्द मिल्या गुरु पूरा, इस विधि मन समझाया ।
'दास गोपाल' गुरु कृपा से, उल्ट बोध कथ गाया ।।४

भजन राग आसावरी

साधो भाई सत गुरु अति कृपाला ।
कर्म भ्रम सब दूर हटावे, मार शब्द का भाला ।।टेक

सत गुरु चरण शरण जब लागा, तत्त्व किया उजाला ।
अगम अगोचर खिड़की खोली, तोड़ द्वैत का ताला ।।१
सोहं शुद्ध स्थिति कीनी, बिन कर फिरती माला ।
ज्ञान ध्यान की गंगा बहती, चलत-सत्व गुण नाला ।।२
जहाँ पर होय महर सत गुरु की, यम दे जावे ताला ।
काल जाल फिर व्यापे नाहीं, नहीं माया का चाला ।।३
गुरु गोपाल दया के सागर, पल में करे निहाला ।
'जोहरीराम' आत्म जग जान्या, जैसे पानी पाला ।।४

भजन राग आसावरी

ऐसा मेरे गुरु सम नजर न आया ।
चार खूँट और तीन लोक में फिर-फिर चक्कर खाया ।।टेक
भेद भ्रम में भटकत मुझको, गुरु गोपाल जब पाया ।
पूर्व जन्म की प्रीत पिछाणी, सीता आन जगाया ।।१
शान्तिस्वरूप दया के सागर, कृपा सिन्धु थाया ।
पर उपकार जीव भव तारण, मानुष तन प्रकटाया ।।२
गुण युत विद्या सदन उजागर, ब्रह्मनिष्ठ आप कहाया ।
प्रतिपाल नाथ नित जानो, तारन जहाज कहलाया ।।३
गुरु गोपाल पाया मैं जब से, ज्ञान गंगा में नहाया ।
'भूरा राम' कहै भाई साधो, ऐसा गुरु कर भाया ।।४

भजन राग गजल ताल ३

मिल सांवरा बिहारी, मुझे आस तेरी भारी ।।टेर
माता पिता तज साथी, सुत बन्धु नार नाती ।
तज संग के संगाती, लगी आस तेरी भारी ।।१
प्रीति जगत की झूंठी, मेरी आस इनसे टूटी ।
हरि नाम की पी बूटी, मैं जान के सुखकारी ।।२
दे दर्श का प्याला, होय ज्ञान का उजाला ।
टूटे भ्रम का ताला, हरो चिन्ता को यह सारी ।।३

दर्शन जभी मैं पाया, गोपाल गुरु ध्याया ।
आनन्द 'सूवा' को आया, मुझे आ मिले मुरारी ॥४

भजन राग बहर झकड़ी

हलकारा खड़ा सरकार का, क्या नींद नचीता सोवे ॥टेर
मोह तो माया में प्यारे, प्रभू जी को गया भूल ।
ऐसा तो व्योपार किया ब्याज में डुबोया मूल ॥
बन्दगी बिना तो तेरे, सिर में पड़ेगी रे धूल ।
मेरी मेरी करता तुने, भूल के करार पाया ॥
एक दिन ऐसा आवे, काल का बाजे नंगारा ।
पकड़ लेजा जम तेरा, धड़ से करदे शीश न्यारा ॥
मिलान–वश चले न ब्याही नार का, क्या पल्ला पकड़कर रोवे ॥१
प्रभु जी को गया भूल, जिन्होंने रची है काया ।
पांच रे तत्वों से, यह शरीर बना आया ॥
गर्भ अति बीच प्यारे, बहुत कष्ट दुख पाया ।
तज दे मेरी मेरी अब, चलने की करलो सलाह ॥
हाथ पैर पसार चालो, झाड़ चालो चारूं पल्ला ।
माया में न कौड़ी लेनी, हाथ में न छोड़े छल्ला ॥
गेरेंगे चिता में जब, कुटुम्ब मचावे हल्ला ।
मिलान–कित गया पलंग निवार का, कांई की सेज बिछावे ॥२
टूटी सी टपरी में प्यारे, सूता पड़ा था कंगाल ।
सुपने मांहि राजा हो गया, बहुत पाया धन माल ॥
हाथी घोड़े बहुत देखे, पल मांहि हो गया निहाल ।
पराई विभूति देखी, देख कर बजाये गाल ॥
नैन खोल देखन लगा, चूला में न पाई राख ।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, रुपिया जोड़े कई लाख ॥
मिलान–फंस मोह माया परिवार में क्यूं बीज बदी का बोवे ॥३

मनखा देवी रे बन्धा, मिलती नहीं बारम्बार ।
जीती बाजी क्यूं खोते हो, कर चालो उपकार ॥
भव सागर की चौड़ी धार, उतर चलो परली पार ।
कहै 'सुखी' ब्रह्मचारी, यह है तेरी ही मौज ॥
छः सौ इक्कीस हजार, स्वांस है जो नित रोज ।
इतना ही जांसू, कैसे जीतो यमपुर ।
मिलान–तेरा आ गया दिन इकरार का, क्यूँ कागज को खुलवावे ॥४

दोहा

दान करा था नाथ ने तीनों लोक लुटाय ।
पल्ले कौड़ी रखी नहीं देवों को दिया बंटाय ॥
दान दिये धन ना घटे नदी न घटे नीर ।
अपनी आंखों देख ले यूँ कहते दास कबीर ॥

भजन राम टेक व छन्द पारवा

नर क्या कारण आया था, इस मनुष्य जन्म संसार में ।
क्या झक मारण आया था ॥टेक
न कोई जग में कुंवा बनाया, न कोई ब्राह्मण साध जिमाया ।
गरीब लुटा उजाड़ में, क्या बांध पोट लाया था ॥१
वेद किताब सुणी नहीं गीता, रह गया मूर्ख अनाड़ी रीता ।
संग चल्यो नहीं जाय, पीछे से भया पछेता ॥२
एक दिन पकड़ ले जावे जालिम, खड़ी तमाशा देखे आलम ।
त्रिया रोवे संसार में, पति बांध मोड़ लाया था ॥३
एक दिन तुमको जाना पड़ेगा, बीता हाल सुनाना पड़ेगा ।
गुरां के शरणे जाय के, यूँ 'सुखीराम' गाया था ॥४

भजन पद राग हरियाणा

नर तेरा चोला रतन अमोला विर्था खोये मत न ॥टेर

भाई तेरी देह बनी से नर की, भक्ति करले न ईश्वर की।
शुद्ध बुद्ध भूल गया उन घर की, प्रभु न भूले मत न ॥१
भाई तेरी पहले की करनी है, यहां अब होगी तुझको भरणी।
वेदों में भी है बरणी, विपत में रोवे मत न ॥२
देखे ऋषि मुनि फिकर में, फंस रहे माया के चक्कर में।
किस्ती आन फंसी टक्कर में, इसे डिबोवे मत न ॥३
'बदरी' बांध कमर होजा तगड़ा, यह सब झूंठा जग का झगड़ा।
सीधा पड़ा मुश्क का दगड़ा, काफिर होवे मत न ॥४

भजन राग कसूरी ताल

नहीं मानत है जग अन्धा देखो जड़ राख्या फन्दा ॥टेर
मान मान नर मूर्ख अन्धा क्यों गरब्यो नर गंदा।
धन जोवन तेरा यूँ छिप जायगा ज्यूँ बादल में चन्दा ॥१
जीवन मरण सदा नित परले, अरहठ नाल फिरन्दा।
[illegible] प्रभु भजन न थिर होवेगा गोल माल का धन्धा ॥२
मात पिता तेरा कुटम्ब कबीला कोई न लावे सन्धा।
दिन चार का चमत्कार है क्यूँ छावत है छन्दा ॥३
स्वांसों स्वांस सांस न बिसरे हृदय जाय जयन्दा।
भूल्यो फिरे भ्रम को मारियो कहै 'बिहारी बन्दा' ॥४

भजन आरती

आरती कीजे सुन्दर वर की ॥टेर
नन्द किशोर यशोदा नन्दन, नागर नवल ताप तम हर की ॥१
बन विलास मृदु हास मनोहर, श्रवण सुधा सुख मोहन करकी ॥२
'बिहारी दास' लोचन चकोर नित, अंश प्रिया भुज धर की ॥३
दोहा—निराकार निर्वाण का नहीं पाया है किसी ने अन्त।
वेद शास्त्र थकित भये कहते साधु सन्त ॥

भजन राग खड़ी चलत

धर हर धर हर गगन गर्जे रहा सोहं सोहं है झनकारा ॥टे
अगड़ बम्ब अगड़ बम्ब बाजे नगारा ओंकार का घर न्यारा ॥टेक
रंग महल में देखले अवधू निराकार इक निरधारा।
सोहं शिखर घर अटल जोत है पहुँचेगा हर को प्यारा ॥१
धन कारीगर तेरी कीमत का पार न पाया किण थारा।
सभी बात में ब्रह्म थरप दिया चेतन कर दिया चै जारा ॥२
अटल तखत पर औघड़ तापे निराकार इक निरधारा।
सूरत न मूर्त न रूप न देखा इक रंगी सब से न्यारा ॥३
'जालिम गिरि' सतगुरु के शरणे में चेला तुम गुरु म्हारा।
ममता मार भरम गढ़ तोड़ा जीत लिया जम का द्वारा ॥४

भजन

मेरे सत गुरु जैसा बिरला न पाया।
बाहर भीतर भटकत क्या डोले सत गुरु आन चिताया
गौरी पुत्र गणेश मनांवां, रिद्ध सिद्ध भरे भण्डारा।
चोरी चोरी फिरत महल, में खोजी न खोजन पाया ॥१
जरी मसाल संग लिया, खोजा अगलीसे पेंड मिलाया।
नौ दरवाजा बंधा दशवें, खोंजी ने खोज निकाला ॥२
हुई आवाज नगर सब उल्टा, लोग तमाशे आया।
सीढी लगा कर ढूंढन लाग्या, राम नाम लव लाया ॥३
खुल गया चश्म देव सब दर्शा, सुन्दर रूप दिखाया।
चढ़ा त्रिवेणी देखन लाग्या, एक अखण्डो ध्याया ॥४
मूल चक्कर धर शोधन बैठा, गंध सुगन्ध मिलाया।
दोउ कर जोड़ 'शाली शोभो' गावे, गुरु रामनाथ पाया ॥५

भजन

क्यूँ भूल्यो नर सरजन हार, अब छोड़ जगत की लार ॥टेर

गर्भवास में कौल किया था, भजन करन का वचन दिया था।
मुक्ति के हित जन्म लिया था, बिगड़ गयो सब कौल करार ॥१
बाल समय बालक संग लाग्यो, जवान भयो धन के हित भाग्यो।
विष भर निद्रा से नहीं जाग्यो, सिर पर धर्‌यो कुटम्ब को भार ॥२
वृद्ध भयो तब गर्दन हाले, सब ही थारे लैर के साले।
तो भी मुख में राम न बोले, हाय हाय कर रह्यो पुकार ॥३
बाल युवा वृद्ध तीन बताई, अब चलने की लग गई भाई।
कई 'पुजारी' बिना कमाई, बहुत पड़ेगी जम की मार ॥४

भजन

सोई जन मस्ताना जिन पाया पद निर्वाना ॥ टेर
मग्न होय चढ़ गये गगन को, अधर धार धर ध्याना।
लगन लाय बिसराय विश्व को, अनहद शब्द पिछाना ॥१
लक्ष कला ले चन्द्र प्रकाशा, सहस कला ले भाना।
जगमग लगी महल के भीतर, देखे दर्श दिवाना ॥२
प्रेम शून्य में परचा हुवा, चेतन चरण समाना।
निर्गुण सेज तेज की नगरी, वह अवगति स्थाना ॥३
खिल गये कंवल नवल बरसाये, नित्य प्रति अमृत पाना।
अमर कंद भव बन्धन व्यापे, जिस घट भ्रम भगाना ॥४
पांच पच्चीस सभी तज भागी, जीत लियो मैदाना।
'नित्यानन्द' गोबिन्द गुमानी, अब निश्चय करि जाना ॥५

दोहा

जीव ब्रह्म दोऊ एक हैं, कहते बेद पुरान।
वही खुदा वही अल्लाह हैं, वही राम भगवान् ॥

भजन राग बसन्त बहार

मन तू क्यूं पछतावे रे, सिर पर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावे रे।

निज करनी को याद करूं जद जीव घबरावे रे।
थांकी महिमा सुन सुन चित में धीरज आवे रे ॥१
जो कोई तन मन से हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को क्षेम हरि आप निभावे रे ॥२
जो मेरा अपराध गिनो तो अन्त न आवे रे।
ऐसो दीन दयाल चित्त पर एक न लावे रे ॥३
तीन लोक को नाथ लाज हरि नांहि गवावे रे।
पतित उधारण बिरद वाको वेद बतावे रे ॥४
मोय गरीब के काज बिरद वह नहीं लजावे रे।
महिमा अपरम्पार तो सुरनर मुनिजन गावे रे ॥५
ऐसो 'नन्दकिशोर' भक्त को त्रास मिटावे रे।
तू मत होवे उदास भक्त की ओड़ निभावे रे ॥६
झूंठा तज अभिमान भजन में चित्त लगावे रे।
कालूराम भंवर से साहिब पार लगावे रे ॥७

भजन राग छन्द पारवा

महा सून्य कमल कैलाश में एक जती पुरुष होता है ॥ टेर
गंगा जमुना सरस्वती तीन नार उसके घर बसती।
बिना इन्द्री करे गृहस्थी,, मौसम बारह मास में ॥
बिन मुख हँसता रोता है ॥१
सत्तर बहत्तर संग में दासी, लिये फिरे मत समझे हांसी।
तू जो इनकी करे तलाशी, पावे गहरे आकाश में ॥
जहां ब्रह्म चक्कर गोता है ॥२
निर्गुण झूल पड़ी तरुवर में, सर्गुण होय झूले सरवर में।
नदी पालणा पड़ी अम्बर में, भूमीं जमो आकाश में ॥
मुझे सुन अचरज होता है ॥३

महादेव न शिव कैलाशी, न विष्णु हृदय के वासी ।
कहै 'ऋषि झम्मन उदासी, रहता जंगल बीयाबान में ॥
ना पुत्र पिता पोता है ॥४

स्तुति

गुरु स्तुति मेरे मन भाई, सुर नर मुनि मिल के गाई ।
गुरु बिन धर्म करे सो फीका, सोच समझ कर देखो नीका ॥
गुरु भ्रंग शिष्य कीट कहावे, कव्वा से हंस गुरु बनावे ।
वेद ग्रन्थ सब साख सुनावे, गुरु मिले तो ब्रह्म लिखावे ।
भदुरामजी सत गुरु पाई, 'नानक राम' स्तुति गाई ॥
हम पर हरि की कृपा कीजै, पाप कर्म मेरा सब हर लीजै ।
हम नालायक आप हैं लायक, आप कृपालु सर्व दुख दायक ॥
हो दयालु दया कर दीजै, भव सागर से पार कर दीजै ।
यह स्तुति सुत हरि करतारा, 'नानकराम' जान जंन तेरा ॥

हरि कीर्तन

जय जय सीता राम मुख से बोलो रे ॥टेर
बड़े भाग्य मानुष तन पाया, सुर दुर्लभ सद ग्रंथन गाया ।
राम भजन करा सुमरिन बाबा, तज दे खोटे काम ॥
व्रिथा मत डोलो रे ॥१ जय जय०
राम नाम है रत्न अनमोला, एक रत्ती और बावन तोला ।
सन्त जनों ने खूब टटोला, पूर्ण करदे काम ॥
हृदय बिच तोले रे ॥२ जय जय०
अष्ट प्रकार काम को त्यागो, भगवत भक्ति में नित लागो ।
सोये बहुत दिन अब तो जागो, कौड़ी लगे न दाम ॥
तैयार तुम होलो रे ॥३ जय जय०

इष्ट धर्म आश्रम का राखो, मुख से झूंठ कभी न भाखो ।
गांव गांव और नगर नगर में, बने 'रामजन' धाम ॥
जाय पाप को धोले रे ॥४ जय जय०

भजन

प्रभु ने कैसी रेल बनाई ॥टेक
तन की गाड़ी मन का इंजन क्रोध की आग जलाई ।
पानी रुधिर अपार भरियो है मन के वेग ले आई ॥
श्वास की सीटी बजाई ॥१
नाड़ी खबर तार देने को दशों ओर फैलाई ॥
इन्द्रियन के बने हैं स्टेशन ज्ञान की घण्टी बजाई ॥
धर्म की खूब लदाइ ॥२
बाल युवा वृद्ध तीन हैं दर्जे नम्बर से बैठाई ।
कर्म अकर्म को टिकट बटत है पाप पुण्य पहुंचाई ॥
सुनिए कान लगाई ॥३
जीवन आनन्द' बैठ्यो इसमें अपनी टिकट दिखाई ।
खने वाला वह जगदीश्वर जिसने यह रेल बनाई ॥४

भजन

र्म मत हारो रे जग में जिन्दगी है दिन चार ॥टेर
गम लोक से चलकर आया, पल्ले खर्ची कुछ नहीं लाया ।
हां आकर गढ़ कोट चिनाया, यों ही जाता है संसार ॥१
र्मराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा ।
र पीछे पछताना होगा, करलो न सोच विचार ॥२
ब तो चेत करो मेरे भाई, तैंने व्रिथा उमर गंवाई ।
ने धोके काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥३
र-बार सतगुरु समझावे, मनख्या जन्म बहुर नहीं पावे ।
या वक्त फिर हाथ न आवे, श्री 'जीवन' कहै हर बार ॥४

भजन

जिन्वा रहकर या मर मिटकर,
हम तुमसे मिलेंगे कभी न कभी ।टेर
आखिर हम आंखों वाले हैं, तुम्हें देख ही लेंगे कहीं न कहीं ॥
लाखों ही तुम पर मरते हैं, दम तेरे प्रेम का भरते हैं ।
जो सौ-सौ इरादे करते हैं, एक बार मिलेंगे कभी न कभी ॥
परदे का न होगा नाम कहीं, बन जायेंगे बिगड़े काम सभी ।
तुम बात करोगे कहीं न कहीं, हम बोल ही पड़ेंगे कहीं न कहीं ॥
काशो न सही मथुरा में सहो, काबा न सही बुतखाना सही ।
अगर हम सच्चे आशिक हैं तेरे तो ढूंढ ही लेंगे कहीं न कहीं ॥
आफत देखी और गम देखा, गंगा देखी जमुना देखा ।
राम जब तुम हमसे मिलते नहीं, हम डूब ही मरेंगे कहीं न कहीं ॥
दाना न सही नादान सही, अमीरी नहीं तो फकीरी सही ।
जिन्दा रहकर या मर मिटकर,
'जीवन' तो मिल लेगा कभी न कभी ॥

कुन्डलिया छन्द

पार ब्रह्म परमात्मा पूरण विश्व अनूप ।
नमो चराचर जीव सब राव रंक जग भूप ॥
राव रंक जग भूप आप त्रिलोकी दाता ।
लई आपकी शरण धर्म नोति कहूं गाथा ॥
कहे जीवन कविराय यूं तूही विश्व अधार ।
तेरी कृपा से लगे जीवन नैया पार ॥१
शब्द गुरु का सत्य है कभी अन्त न होय ।
शब्द पारखी परखते दिल का धोखा खोय ॥
दिल का धोखा खोय होय आनन्द हमेशा ।
नाशे विघ्न अनेक नाशे सर्व कर्म कलेशा ॥

कहै जीवन कविराय करावे दर्शन हरी का ।
परखे मुक्ति होय सत्य है शब्द गुरु का ॥२
मन की चाल कुचाल है तजिए मन की बात ।
छिन में मन राजा करे छिन में करे कंगाल ॥
छिन में करे कंगाल बड़ो ऐसो मन पाजी ।
छिन में चढ़े तुरङ्ग लड़े लोहा की बाजी ॥
कहे जीवन कविराय चाल जो चले पवन की ।
छिन में मुक्ति होय जीते जो बाजी मन की ॥३
धन की तृष्णा जगत में दिन-दिन दूनी होय ।
सौ होवे दो सौ करे कहै हजारों होय ॥
कहै हजारों होय ढोय बोझा दिन राती ।
खाय न खर्चे सूम अन्त संग में नहीं जाती ॥
कहे जीवन कविराय लगन कर हरि भजन की ।
कर मन में सन्तोष-झूठी तृष्णा तज धन की ॥४

भजन राग गजल

निराली शान तेरी है, निराला तू खिलारी है । टेर
रचाया विश्व सब तुमने, रचाई चारों खानी को ।
सर्व शक्ति में तू व्यापक, तू ही जग प्राणधारी है ॥१
पड़ी जब भीड़ भक्तों पर, पधारे पांव नंगे हो ॥
बचाया डूबते गज को, ग्राह जल में पछारी है ॥२
सभा में द्रोपदी टेरी, बढ़ाया चीर तुमने ही ।
कौरवों का मान भंग कीना, हारे अन्यायकारी है ॥३
ध्रुव प्रहलाद प्रतिज्ञा, अनेकों जन की तुम राखी ।
जीवन हरि नाव निज जन की, सदा तुमने उभारी है ॥४

दोहा

सुमिरन से मन लाइए जैसे कामी काम ।
एक पलक बिसरो मती निशदिन आठों याम ॥

दुख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करें तो दुःख काहे को होय ॥

दोहा

जीव ज्योति है मनुष्य में तब तक सम्बन्ध जान ।
जीव ज्योति जाती रहे नहीं सम्बन्ध सन्मान ॥
दुर्लभ मानुष जन्म है पावे न दूजी बार ।
पक्का फल जो गिर पड़ा लगे न दूजी बार ॥

दोहा

तीन नाम है ब्रह्म का सोहंग सोहंग राम ।
इष्ट भेद कर जपत है न्यारा-न्यारा नाम ॥
ज्ञानी सोहंग कहत है योगी कहत ओंकार ।
भक्त कहत है राम ही तीनों एक बिचार ॥
सुरति निरत को एक कर पहूँचे सोहन शिखर ।
जगर मगर वहां हो रही करते सैल चतर ॥

भजन राग जोगिया ताल

कर लिया भगवां भेष छोड़ दिया देश भरथरी ज्ञानी ।
तज दिया राज और पाट पिंगला रानी ॥टेक
एक तपसी सभा में आया, वह हाथ अमरफल लाया ।
राजा को करे प्रणाम होय आधीनी ॥१
यह फल देवों से पाया, ले राज काज में आया ।
इसे खायेगा उसकी होगी अमर जिन्दगानी ॥२
राजा ले फल महलों में आया, फल रानी के मन भाया ।
रानी ने राखी बात मन में छानी ॥३
रानी नौकर को फल दीना, नौकर यह कौतिक कीना ।
फल वेश्या को जा दिया खावो मेरी रानी ॥४

वेश्या ने किया विचार मैं कितनी अधम हूं नार ।
यह फल राजा के काबिल है लासानी ॥५
जुड़ पांच पच्चीसों नार किया सिणगार बधावा गाया ।
वह फल राजा को जाकर भेंट चढ़ाया ।
राजा को यह फल देख हुई हैरानी ॥६
राजा को हुआ बैराग फकीरी धारी,
साहेब मिलने की मन में बात बिचारी ।
राजा दई जगत को पीठ भजन चित ठानी ॥७
वह हुआ गुरु का चेला बांध लिया बेला,
इसका मन मन्दिर में हुआ साहिब से मेला ।
पद गावे 'जीवाराम' भावपुरा ग्राम अमर ये बानी ॥८

भजन बारामासी राग सोरठ

मोये दे दर्शन भगवान् जीव म्हारो क्यों तरसावे रे ।
मोहे बिन दर्शन नहीं चैन बिरहन बहुत सतावे रे ॥ टेर
भक्त वत्सल प्रभो आप हो सबका सरजन हार,
जो जन शरणे गये तुम्हारी सहज हुआ भव पार ।
लार जम डाण चुकावे रे ॥१
...त से चेतन भया खुलिया नैन विचार,
...व जल बहता जीवड़ा हरि से करे पुकार ।
पार भव धार लगावे रे ॥२
...शाख में बिसरु नहीं पलकां रहा निहार,
...ह तो दर्शन देय दे नहीं मरूं कटारी खार
और दिल धीर बन्धावे रे ॥३
...ठ महीना लागिया झट पट लागी डोर,
...सुमरूं नित पीव को जग ध्यावत है और ।
और ना मेरे मन भावे रे ॥४

साढ़ महीना लागिया और सब बांधिया धीर,
जग जाणे पिन्ड रोग है तुही जाणे मेरी पीर।
दूजो कोई भेद न पावे रे ॥५
सावन महीना लागिया तीजां भया त्यौहार,
जग झूलन को जात है हिवड़ो करे उल्लार।
धार अमृत की चूवे रे ॥६
भादों महीना लागिया वो बादल का जोर,
जल हल चमके बीजली गर्ज रह्यो घन घोर।
सारे मोर नृत्य दिखावे रे ॥७
आसौज महीना लागिया आस लगी भरपूर,
दे दर्शन विपता हरो करो कल्पना दूर।
उर में आनन्द बढ़ावे रे ॥८
कार्तिक महीना लागिया कन्त मिलन का जोग,
दीप दीवाली त्यौहार है भाग गये सब सोग।
रोग अब नहीं सतावे रे ॥९
मंगशिर महीना लागिया मंगल गाऊं रोज,
जग जंजाल मैं लगाऊं खोज।
सांवरो कहीं तो पावेरे ॥१०
पौष महीना लागिया जाड़ा पड़े विपरीत,
लग आवे लख जावते यही जगत की रीत।
अमर कोई नहीं कहावे रे ॥११
माघ महीना लागिया महर भई मुझ मांई,
भेद मिटे भ्रम का हरि हमें दिया चीताई।
सर्व सुख जाल समावे रे ॥१२
फागुन महीना लागिया फरक रहा कुछ नाहीं,
अब फगवा खेलूं कौन से दूजो दरसे नाहीं।
शब्द यह 'जीवानन्द' सुनावे रे ॥१३

भजन राग चौपाई ताल मेवाती

मैंने धरी तोप भरपूर किला तेरा किस बिध ठहरेगा ॥टेर
अभिमान राव बलकारी, संग में मोह दल फौजांभारी।
धर धर मार भगाई सारी, झंडा निज पद का रोपूंगा ॥१
कर्म दल फौज किला के माहीं, भर्म बादशाह की फिरे दुहाई।
सबको दिया छिन में भगाई, किला अब पलमें तोडूंगा ॥२
इस विधि किला तोड़ दिया पक्का,
अभयजीत का लगा दिया डंका।
काल बली की मेंट दी शंका निसान भय का फोडूंगा ॥३
भदुराम जी सत गुरु पाई, 'जीवादास' यूं कथके गाई।
चौदह लोक पर चक्कर चलाई,पता अब सबका तोडूंगा ॥४

दोहा

और ज्ञान सब ग्यानड़ी, आत्म ज्ञान सो ज्ञान।
जाको आत्म की परख हुई सोही ब्रह्म समान ॥

भजन राग आसावरी

साधो भाई सुण लटका निर्गुण का।
जो तू भेदी होय निर्गुण का करो अर्थ अक्षर का ॥टेक
सत लोक पर चार धाम है नाम बताना उनका।
एक फूल गुल चार कहिये करो अर्थ अक्षर का ॥१
अगम पुरी के चार चरण हैं नाम बतावो उनका।
अनहद की तो माता कौन है पिता बतादो उनका ॥२
बिन पिन्ड का पुरुष कहिये श्वांस बिना अक्षर का।
पहले मेरा उत्तर देना पीछे करना खुड़का ॥३
साज बाज तो यहां रख देना करो अर्थ बाणी।
'जीवाराम' का प्रश्न चार है मेटो इनकी शंका ॥४

श्री रामदेवजी के भजन

हालो मारा सायबा नजार मारे घर हालोनी ।
थारी गैरी करूं मनुहार म्हारे घर हालोनी ।। टेर
भैंस दुवाऊं भूरड़ी जी, जाकी गुड़ली रंधाऊं खीर ।
म्हारे घर हालोनी ।।१।। हालो मारा०
चावल रंधाऊं उजलानी मारे नहीं छै बाजरी रो खान ।
म्हारे घर हालोनी ।।२।। हालो मारा०
कसरा ढोलूं धणी बीजणां जी थारे लुल लुल लागूं पांव ।
म्हारे घर हालोनी ।।३।। हालो मारा०
'हरजी भाटी' री विनती थी थे मारा मायर बाप ।
म्हारे घर हालोनी ।।४।। हालो मारा०

भजन राग माझ गजल ताल

जाऊं मैं राम रुणीजा में मेरो मन लाग्यो मेला में ।। टेर
पिछम घरां को पूजूं राम दे धूप खेऊं धूपेड़ा में ।।१
भगत उभारण कारण जग में प्रकट भयो रुणीजा में ।।२
राक्षस मार बाबो भोम बसाई द्वैत पछाड़ो पलंका में ।।३
बादल भर बणजारो आयो लुण बणां दियो गूणां में ।।४
बाई बदवत को मर गयो बालको ऊंने जीबा दियो गोरियां में।।५
डूबत जहाज बांणया बोयता की त्यारी हाथ पसारो समुन्दर में।।६
शरण पड़े का सब दुःख मेटे दया धारी है बाबो कलजुग में ।।७
'जीवादास' अलख थारे शरणो ध्यान धरूं मन मन्दिर में ।।८

भजन तर्ज--खंमा खंमा

खमा खमा खमारे भक्त भव त्यारी निकलंक नेजा धारी ज़ीओ।।टेर
तंवरा न त्यारा डाली बाई ने त्यारी, त्यारी रूपां दे रानी जीओ।।१
सोढां न त्यार सोढाणी ने त्यारी, सोढा भाग सवायो जीओ ।।२

हरजी न त्यार बोयता ने त्यारो,त्यारो खाति स्वार्थि जीओ ।।३
बबबतन त्यार भाणजा ने त्यारो,प्रचा अनन्त पुगाया जीओ ।।४
ग्राम भावपुरा प्रकट कीनो, हरि भक्ति फैलाई जीओ ।।५
'जीवदास' को त्यारण कारण, चरण सेवा फरमाई जीओ ।।६

भजन राग मांझ व मेवाड़ी

दाता अजमल घर अवतारी ओ ।
कलजुग मांही घर घर भक्ति फैली थारी ओ ।। टेर
राम होय रावण ने मारियो, विभीषण त्यारी ओ ।
केश पकड़कर कंस पछार्‌यो, कृष्ण मुरारी ओ ।।१
द्वारका से आप पधारिया, अलख नीजारी ओ ।
अजमल जी की आशा पूरी, भव से त्यारी ओ ।।२
राजा सुमरे प्रजा सुमरे, बारम्बाबारी ओ ।
सुमरे ज्यां का संकट मेटे, भक्त बिहारी ओ ।।३
संकट मेटो दोष निवारो, पर उपकारी ओ ।
'जीवाराम' शरण में थारी, अर्ज पुकारी ओ ।।४

दोहा

थे म्हारा माता पिता रावत रामा पीर ।
मान दियो मोटो कियो पड्यो समुन्दर सीर ।।
हरजो हरी का नाम को जपता अजपा जाप
सुर नर देवांको बन्दगी मारे धणी की छाप ।।

भजन राग लावणी व कव्वाली

अब तुम दया करो श्री रामदे, अजमल के कहाने वाले ।। टेर
अजमल जी ध्यान लगाया, समुन्दर में दर्शन पाया ।
वचनों का बंधिया आयाजी, अवतार कहाने वाले ।।१

पोहकरण पालणे आया, कूं कूं का चरण मंडाया।
घर-घर में मंगल गाया जी, बांझ के पुत्र कहाने वाले ॥२
गेंद के दो टो लगायो, धुणी बाली नाथ गुरु पायो।
भेरुं राक्षसने मार हटायो जी, ऐसी भोम बसाने वाले ॥३
जहाज बणिया की त्यारी, समुन्दर में भुजा पसारी।
मिश्री को करदी खारीजी, ऐसा डाण चुकाने वाले ॥४
धारु के घर आया, रुपां ने निवत बुलाया।
मालोजी खड़ग समायाजी, थाली में बाग लगाने वाले ॥५
थां के बद वंत बाईजी ने पंडीयारां के परणाई।
रतना न मार हटायीजी, ऐसा सगा कहाने वाले ॥६
कांकण बन्धिया चाल्या, पुंगल में डेरा गाल्या।
ब्याही करे छे ताल्या बेल्याजी, ऐसी फौज बनाने वाले ॥७
कितना ही भक्त बचाया, जुगजुग अवतार कहाया।
तेरा 'गोकुलदास' गुण गायाजी, मेघ वंश कहाने वाले ॥८

आरती

पिछ्म चरां सूं मारा पीरजी पधारिया,
घर अजमल अवतार लियो।
लाछां सुगना बाई करे हरि री आरती,
हरजी भाटी चंवर ढोले ॥ टेर
वीणा रे तंदूरो धणी रे नौबत बाजे,
झालर री झंकार पड़े ॥१
घृत मिठाई हरि रे चढ़े चूरमा,
धूपां री महकार उड़े ॥२
गंगा जमुना बहेरे सरस्वती,
राम देव बाबो स्नान करे ॥३

दूरां रे देशा सूं बाबा आवे जात्री,
दरगा आगे निमण करे ॥४
हरि शरणां में 'भाटी हरजी' बोले,
नवां रे खंडा में निशान घुरे ॥५

भजन राग बहर हंस ठेका

रामदे सा कंवर बीरम दे सा भाई ओजी।
या तो धन मेलां दे माई ओ महाराज ॥
छोटा रामरे बड़ा ओ बीरमदे ओ जी ॥ टेर
देवरे जाऊं तो बिगड़ भुहारूं ओजी।
मैं तो कुम्भ कलश भर ल्यावां ओ महाराज ॥१
रामा कपिला गाय को मर गयो बाछड़ो ओजी,
या तो गाय गुवाड़ा में रामे ओ महाराज ॥२
हाड़ गौंडा बांका रेवड़ा पड़ा है ओ जी।
यातो खाल भामीड़ा लेग्या ओ महाराज ॥३
दांतुन फाड़ सपाड़ा ऊपर बैठाया ओ जी।
यातो कुंजर ज्यूं कुरलाई ओ महाराज ॥४
हाड़ गोडा ऊंका भेला कराया ओजी।
यातो खाल भाम्या के सूं ल्याया ओ महाराज ॥५
दीनी दो छांट मया कर दीनी ओजी।
या गऊ बछड़ा रा मेला महाराज ॥६
बाई बदवंत रो मर गयो बालको ओजी।
ऊंका बाला में सांसा मेलो ओ महाराज ॥७
पकड़ डोर पालण में हिलायो ओजी।
यातो बालको पालणां में खेले ओ महाराज ॥८
रामा अर्जैसिंह का 'विजयसिंह' कंवर तंवर बोल्या।
मेरा बाना की लज्जा राखो जी महाराज ॥९

आरती

रुमझुम बाजे घुंघरा घोड़ा रा बाजे पोड़ जी ।
लीलेरी असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥ टेक
पंचरंग नेजा फरे जठे, रमिया रामा पीरजी ।
लीलेरा असवारी बाबो राम दे पधारिया ओजी ॥१
अरज करूं अजमालरा आ सोधो तणी पुकार जी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥२
राम सरोवर आप रो अलख तणी उपकार जी ।
लीलेरा असवारी बाबो राम दे पधारिया ओजी ॥३
दूरां देशां से आवे यात्री मेलो मंडयो भरपूरजी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥४
दुखियां ने सुखियां करो मारे घट में बरसे नीरजी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥५
पिछम घरां से पारगां अलबेला असवार जी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥६
लीलो हांसे धरती धूजे असुर गया है भागजी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥७
लीलो घोड़ो नवलखो मोतियां जड़ी लगाम जी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥८
रेवत चढ़िया राम दें भल हल उगयो भान जी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥९
'जालिमधर' जी री वोनती थे मारा मायर बापजी ।
लीलेरा असवारी बाबो रामदे पधारिया ओजी ॥१०

भजन

क्यों रूस गया भगवान खाले खीचड़लो ॥ टेर
थाने दादा बिना नहीं आवड़े, दादो गयो दूसरे गांवड़े ।

जाणे पाछो कद बावड़े, मैं मन्दिर लियो संभाल ॥१
मैं करमा बेटी जाट की, थाने घी घालूं भर बाटकी ।
मांसु प्रभू क्यों नाटकी, थाने खाटो दीनो घाल ॥२
लेर थाल आगे धरयो, थां रुस्या माने कद सरयो ।
तू क्यां खातिर भूखां मरियो, थारा भूखांरा चिपक्या गाल ॥३
खोल मन्दिर प्रभु से लड़े, आंख्यां सूं आंसू पड़े ।
तू क्या खातिर भूखां मरे, थारी कर रही मैं मनुहार ॥४
जब धाबड़रो पड़दो कियो, झट ठाकुर न भोजन कियो ।
तब करमा ने परचो दियो, दर्शन दिया दियाल ॥५

दोहा

मीरां ने सुन यूं कही सुन राणा मेरी बात ।
साधु तो माई बाप है सखियां क्यों घबरात ॥

भजन

मीरां साधां से संग छोड़ो ए,
लाजे थारो मैड़तो मेवाड़ सारो ए ॥ टेर
मीरां बाई री झूपड़ी दीखे चारूं कूंट ।
समझायो नहीं ले जाती बैंकूट ॥१
मीरां उतरी महल से कर सोलह सिंगार ।
डावूं छोड़ो मैड़तो वह पुष्कर नहावा जाए ॥२
सर्प टिपारो राणों भेज्यो दो मीरां न जाय ।
लेर टिपारो मीरां खोज्यो बण गयो नौसर हार ॥३
जहर पियालो राणो भेज्यो दो 'मीरां' न जाय ।
लेर पियालो पी गई थे ही जाणो रुघनाथ ॥४

भजन राग पूर्वोक्त चार

गुरु दर्शन को चाल सखो,दुःख जन्म मरण मिट जावत है ।।टेक
चार धाम सब तीर्थ नहावे, गुरु बिना बृथा जावत है ।।१
जप तप भजन करो भरपूरा,गुरु बिना निष्फल जावत है।।२
गीता ग्रन्थ वेद और बानी, या विधि सबही सुनावत है ।।३
'जीवनराम' कहे पद बानी, चरण शरण पद पावत है।।४

भजन राग पूर्वोक्त चार

गुरु की महिमा गाय सखो, भव बन्धन फन्द छुड़ावत है ।। टेक
गुरु की महिमा शेष मुख भाखे,शिव ब्रह्मादिक ध्यावत है ।।१
गुरु की महिमा हरी मुख गावे, गीता ग्रन्थ सुनावत है ।।२
गुरु गोविन्द से अधिक कहावे, जीवत मोक्ष बतावत है ।।३
गुरु की महिमा अपरम्पारा, 'जीवानन्द' पद गावत है ।।४

भजन राग विहाग

सुरता गुरु दर्शन की प्यासी ।। टेक
निरख नैन सुफल भई काया, मिटे मन की उदासी ।।१
भव जल बहते आये चिताया, अमरापुर का बासी ।।२
गुरु बिन ज्ञान मुकत नहीं पावे,चाहे सब तीर्थ कोई नहासी ।।३
कहे 'जीवाराम' गुरु कृपा बिन, कटे ना जम की पासी ।।४

भजन राग विहाग

सुरता गुरु चरणों में लागी ।।टेक
अनन्त जुगा से सूती सुरता, सतगुरु शब्दां से जागी ।।१
इत उत की छोड़ भटपना, कुबुधि कल्पना त्यागी ।।२
सतगुरु मिल्या सैन समझाई, ले ली चरणों में आगी ।।३
कहे 'जीवाराम' प्रेम पीवे पायो, भई सुरत अनुरागी ।।४

भजन राग आसावरी

समझ मन गुरु बिना भर्म न जावे ।
कलह कल्पना कभी न छूटे, निज स्वरूप नहीं पावे ।।टेक
पढ़े पुराण भागवत गीता, चाहे तीर्थ सब नहावे ।
दुरमत दुविधा कभी न भागे, नहीं मुक्ती पद पावे ।।१
भूल्या जीव चौरासी में भटके, नर तन मुश्किल पावे ।
नर तन पाय गुरु नहीं भेंटे, बंधे भर्म में जावे ।।२
चौरासी में गुरु नहीं पावे, गुरु बिन कौन चितावे ।
सहे दुःख कष्ट भव भारी, अनन्त जनम भटकावे ।।३
सतगुरु स्वामी अन्तर्यामी, स्व-सरूप लिखावे ।
कहे 'जीवनराम' कृपा सतगुरु की, आनन्द रूप समावे ।।४

भजन

को जाना दम कोई रे बाबा ।। टेक
चिट्टी चादर उतारदे बंदिया पहर फकीरां दी लोई ।
चिट्टी चादर नूं दाग लगेगा लोई नूं दाग न कोई ।।१
जब लग तेल दिवे बाती सूझत है सब कोई ।
जल गया तेल निबट गई बाती लेचल लेचल होई ।।२
जब लग जीव पिंजरे के मांही लागू है सब कोई ।
जब प्राणी ने त्यागी काया काढ़ो काढ़ो होई ।।३
भाई बन्धु अरु कुटुम्ब कबीला मात पिता सुत जोई ।
खावन पीवन नूं सब साथो संग चले ना कोई ।।४
कोई जावे कोई आवे निशदिन अस्थिर रहे न कोई ।
रुदन करत क्या होत प्राणी कर्म लिखा सोई होई ।।५

भजन

वाह वाह रे मौज फकीरां दी ।। टेक

कभी चबावे चना चबीना कभी लपट ले खोरां दी ।
कभी तो ओढ़े शाल दुशाला कभी गुदड़ियां लीरां दी ।।
कभी तो सोवे रंग महल में कभी गली अहीरां दी ।
मंग तंग के टुकड़े खान्दे चाल चले अमीरां दी ।।

दोहा

एक सितम्बर उन्नीससौ पैंसठ पुस्तक भई तैयार ।
चार भाग इस पुस्तक के हैं पढ़े कोई सचि यार ।।

भजनः

उल्टी देखो घट में ज्योति पसार ।। टेक
बिन बाजे तंह धुनि सब होवे, विगसि कमल कचनार ।।१
पैठि पताल सूर शसि बांधो साधो त्रिकुटी द्वार ।
गंगा जमुना के बार पार बिच भरत है अमिय करार ।।२
इंगला पिंगला सुख मन सोधी बहुत शिखर मुख धार ।
सुरति निरति ले बहु गणिन पर सहज उठे झनकार ।।३
सोहं डोरी मूल ताहि बांधो मानिक बटत लिलार ।
कहै 'गुलाब' सत गुरु वर पायो, भरो है मुक्ति भंडार ।।४

भजन

बंगला भला बना महाराज, जामें नारायण बोले ।। टेक
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा ।
तीसों की छान बनाकर चिन्ह गया चिनने वारा ।।१
इस बंगले के दस दरवाजे बीच पवन का खम्भा ।
आवत जावत कोख न जाने देखो बड़ा अचम्भा ।।२
इस बंगले में चौपड़ मांडी खेले पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चुका है कोई चला जग जीत ।।३

इस बंगले में पातर नाचे मनुवा ताल बजावे ।
सुरत निरत के पहर घुंघरू राग छत्तीसों गावे ।।४
कहै 'मछन्दर' सुन बाला गोरख जिन यह बंगला गाया ।
इस बंगले का गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ।।५

भजन राग खम्माच ताल

सन्तों सत गुरु आया ये, पूर्ण प्रकटौ भाग ।
पूर्ण प्रकटौ भाग, म्हारे मन भयो अनुराग ।। टेक
गुरु दर्शन को बलहारी, गुरु भव दुःख भंजनहारी ।
म्हारी डूबत जहाज उभारिये, गाया भरम भय भाग ।।१
ब्रह्मा विष्णु मुरारी, गुरु गीता कहे पुकारी ।
सत गुरु की महिमा भारी ये, सुनकर हो बैराग ।।२
दर्शन से दुविधा छूटे, भव बन्धन जीव का टूटे ।
फिर अनुभव आनन्द लूटे, ये बुझे जमों की आग ।।३
गुरु देव द्वारे आया, सब कुकर्म दूर हटाया ।
'जीवाराम' शरण सुख पाया ये, भयो अपर बल भाग ।।४

दोहा

राम जन मत प्रकट किया ग्रन्थ रचे अनन्त ।
ऐसा इस संसार में बिरला होगा पन्थ ।।

ईश्वर स्तुति

हम पर हरिजी कृपा कीजे, पाप कर्म मेरा हर लीजे ।।
हम नालायक आप हैं लायक, आप कृपालु सर्व सुखदायक ।।
हो दयालु दया कर दीजे, भव सागर से पार कर दीजे ।।
यह स्तुति सुन हरि करतारा, नानक रामदास जन तेरा ।।

भजन राग ठेका ताल

देखी सूरत आपकी, दूजो न आवे दाये हो ।
मेटी मन की कल्पना, प्रेम प्यालो पायो हो ॥
चौरासी को जीवड़ो, चौरासी में जाये हो ।
दया करी गुरु देवजी, बहते की झेलो बांह हो ॥१
बांहे गहि बाहर लियो, गोदी में बैठाये हो ।
जड़ से चेतन कियो, हिरदे लियो लगाये हो ॥२
पतिव्रता ने पीव पायो, बाला ने मिलगी माये हो ।
भूखां ने भोजन मिल्या, यूं मिल्या गुरु आये हो ॥३
निर्धन ने धन मिल्यो, प्यासा पाणी पायो हो ।
पूर्व पुन्न से सतगुरु भेंट, दियो ज्ञान बताये हो ॥४
मैं हूँ बालक बुद्धिहीनों, काहे बिरद बधाये हो ।
शेष महेश रु ब्रह्मा विष्णु, थाके महिमा गाये हो ॥५
'मान मुनि' गुरु भेटिया, चित चरणों में लिपटाये हो ।
साधु समरथ नर भया, सनसुख दर्शन पाये हो ॥६

दोहा

सात जनम भक्ति करें, सदा भजे भगवान ।
गुरु सेवा पल एक में, करते महा कल्यान ॥

भजन राग गजल लावनी

सत गुरु सच्चे देव हैं, शुद्ध राह बताने वाले ॥ टेक
तोड़े भर्म किले का कोट, मेटे काल बली की चोट ।
रखले जीव चरण की ओटजी, जम फांस मिटाने वाले ॥१
भव सागर की चौड़ी धार, जिनसे मुश्किल होना पार ।
सतगुरु डूबत लेवे उभारजी, भव पार लगाने वाले ॥२

करदे अमर देश में डेरा, मेटे चौरासी का फेरा ।
खोले निज मुक्ति का सेराजी, सत्य स्वरूप लिखाने वाले ॥३
जड़ माया की खोले पोल, दरसे आत्म अखंड अतोल ।
'जीवादास' कहे सत बोल जी, आनंद रूप समाने वाले ॥४

भजन राग गजल लावनी

सत गुरु भवसागर दरियाव में, दिल धीर बंधाने वाले ॥ टेक
रखते ज्ञान जहाज निज सार, जिनसे खेव उतारे पार ।
फिर लगन जम का वार जी, तट पार लगाने वाले ॥१
दूजा न कोई और उपाय, जिनसे भवसागर तर जाये ।
करलो लाखों कोई उपाय जी, वृथा आयु गंवाने वाले ॥२
देखा काजी पंडित पीर, रह गये सागर उरली तीर ।
मिटी न जनम मरण की पीर जी, भ्रमफांस फंसाने वाले ॥३
पकड़ी ओं सोहं की डोर, चढ़ गये चेतन चौकस होर ।
'जीवाराम' मिटे डर और जी, भवबंध छुड़ाने वाले ॥४

भजन राग पीलू ताल कव्वाली, लावनी

मेरे सत गुरु सैन बताई मुझे ॥ टेक
प्रथम आसण पदम शुद्ध कीना, दुविधा भार दूर धर दीना ।
मूल महल शुद्ध आई मुझे ॥१
शाधिष्ठान शोध शुद्ध नाभी, हृदय कमल पें अनुभव छागी ।
कंठ कमल कलियां पाई मुझे ॥२
बंक नाल का मारग झीना, भंवर गुफा में डेरा दीना ।
परम जोति का दर्शन पाया मुझे ॥३
'जीवनदास' कहे समझाई, बिन सतगुरु पहुँचत नाहीं ।
सत्य आनन्द स्वरूप सुहाई मुझे ॥४

भजन राग पीलू ताल कब्वाली, लावनी

गुरु आनंद रूप लखाया मुझे ।। टेक
सत्य मिथ्या का भेद बताया, जनम मरण का भ्रम मिटाया।
असली ब्रह्म बोध समझाया मुझे ।।१
जड़ चेतन का किया निमेड़ा, जीव इसका मिटे बखेड़ा ।।
गुरु व्यापक रूप बताया मुझे ।।२
निराकार निर बन्धन न्यारा, शुद्धस्वरूप नहीं मैल विकारा ।।
गुरु आत्म अचल दर्शाया मुझे ।।३
'जीवाराम' परम पद पाया, निर्मल हंस स्वरूप समाया ।।
गुरु घट मांहि अलख लखाया मुझे ।।४

कुण्डली

गुरु मूर्ति हृदय धरे, चित चरणों लपटाय,
सहस्त्र मुक्त आगे खड़ी, करोड़ विघ्न टलजाय।
करोड़ विघ्न टल जायं ताप तीनों हट जावें,
होय अखंड सुख, संयम स्वरूप समावे ।।
ब्रह्मरूप ब्रह्मनिष्ठ हैं, सत गुरु सन्त सुजान,
'जीवाराम' गुरुदेव जी, करलें आप समान ।।

दोहा

गुरु पूजा सब से बड़ी, गुरु परे नहिं कोय।
रामकृष्ण ने भी करी, तू क्यों पीछा होय ।।
मस्तक धर गुरु चरण में, लाज शर्म दे खोय।।
जीवन बीता जा रहा, गफलत में मत सोय ।।

भजन राग पारवा श्याम कल्याण

त करले जतन अपारा, एक दिन जाना होगा जरूर ।। टेक

राजा रंक फकीर बादशाह, ढल गया सबका नूर।
सबकी तोड़ी काल नाक शाह, ढल गया सबका नूर ।।१
गुफा खुदा कर गया रसातर, निर्भय बैठा स्वास चढ़ाकर।
वहां भी काल खागया आखिर, अन्त भये मजबूर ।।२
किला कोट बनवाये खाई, शस्त्र सेल की अणी झुकाई।
सब पर पड़ गई काल की छाई, हो गये चकनाचूर ।।
राम नाम को हरदम रटले, गुप्त खजाना डटके भरले।
'जीवादास' भव पार उतरले, कर गर्भ शर्त को मंजूर ।।४

भजन राग गौड मलार

नर कर सुमरन नित मन में, क्या लेगा जग छल पल में ।।टेक
बालपना सब खेल गंमाया, मस्त भया जोबन में।
बुड्ढा भया जम आय दबाया, त्यारी भई शमशान में ।।१
कुटम्ब कबीलो सब ही झूखे नीर बहै नैनन में।
राजपाट और माल खजाना, नहीं चले कोई संग में ।।२
यारा प्यारा मिन्तर सारा, ममता फंसी सबन में।
अन्त सब ही से होय निराला, चला जायगा पल में ।।३
भव बन्धन से बचना चाहे तो राम सुमर छिन छिन में।
'जीवन राम' स्वरूप समावे, निर्भय पद आनंद में ।।४

भजन राग गौड़ मलार

कर राम भजन भरपूरा, होवे जनम मरन दुःख दूरा।
एक दिन जन्म लिया जननी के, बाजे अनहद तूरा ।।
सुखी भया सब नाती भाई, सोच भया सब दूरा ।।१
बालपना सब खेल गमाया, कर कर फैल फतूरा।
आई जवानी काम सताया, मोहलिया कामन हूरा ।।२
बूढ़ा भया तन भया पुराना, ढलगया नर तन नूरा ।।
जीती बाजी हार चला सब, कौल वचन हुआ पूरा ।।३

पशु ज्यों जनम लिया नर जग में, जैसे कूकर सूरा ।
'जीवानंद' भजन बिना, प्रभो के घर के जन्म नर धूरा ॥४

भजन राग गजल

बचपन का जोहवर, जवानी का आलम,
बुढ़ापे की आंधी चली आ रही है ।
आया बुलावा प्रभू जी के घर का,
खयालों में कजा बनके चली आरही है ॥टेक
कजा सिरपै खंजर को ताने खड़ा है,
इधर हम तो दम को संभाले खड़ा है ।
आये फरिश्ता प्रभुजी के घर का,
कन्धों पै डोली चली जा रही है ॥१
बागे जहां में हर फल देखा,
कोई सुवादी कोई गम का भरा देखा ।
हर डाली डाली डाली के ऊपर,
बुलबुल चमन में लुटी जा रही है ॥२
होगा किनारा न करना बुराई,
इस ही में तेरी होगी भलाई ।
बदी क्या करेगी नेकी के आगे,
बाकी उमरिया ढली जा रही है ॥३
मुहम्मद मंजिल से अदा हो रहा है,
मेरे दिलके सजदे बेवफा हो रहा है ।
आज की आंधी समुन्दर में किश्ती,
किनारे आकर डूबी जा रही है ॥४

भजन राग भैरू

सहस्र नाम की क्या पड़ी तुझे, एक नाम भजले भाई ।
एक नाम से पार उतरगये, सिला तरी समुन्दर माहीं होजी ॥टेक

हद बेहद की क्या पड़ी तुझे, अखंड ज्योति जग के माहीं ।
उसी ज्योति का सकल उजाला, समझ देख आया मांही होजी ॥१
अगम निगम से तुझे क्या पड़ी, वहां सांई यहां यहां भी सांई ।
पारब्रह्म का खेल अपारा, बिना भेद गम है नाहीं होजी ॥२
गम बेगम से क्या पड़ी तुझे, जब जहां देखे वाहीं सांई ।
खंड ब्रह्माण्ड बाहिर भीतर, हरी बिना जगह नाहीं होजी ॥३
कथा भागवत शास्त्र गीता, वेद सन्त सब ही गाई ।
''जीवादास' नाम की महिमा, जुगा जुगा चलती आई ॥४

भजन राग सोरठ

रेल शरणाटै चालै रे, रेल दरणाटै चालै रे
या काया रंगीली रेल ॥ टेक
नव दस मास घड़ते लागे, घड़के करी तैयार ।
श्वांसा सिंगल रोपिया, नौ नाड़ी का तार ॥
खबर जामें आवे जावे रे ॥१
सोलह डिब्बा रेल के, इंजन दशवां द्वार ।
गर्भ घमंड गार्ड है, हम दम रहे हुशियार ॥
यार वह झण्डी दिखावे रे ॥२
कई मुसाफिर रेल में, चित्त मन बुद्धि अहंकार ।
समय समय का टिकट है, अन्त होये बेकार ॥
रेल तो चलती ही जावे रे ॥३
तीन इनका टेसन है, बाल जवानी बृद्ध ।
इतनी इनकी चाल है, फेर होवत है रद्द ॥
गरद में आप मिलावे रे ॥४
'जीवादास' इस रेल में, बैठा कियो बिचार ।
सत गुरु सोटी दे रहा, क्यों न हो हुशियार ॥
समय तेरा होता ही आवे रे ॥५

भजन राग जिज्ञासा वा परज ताल

राम भज हरी राम भज श्रीराम भज श्रीराम रे ।
छुनी संकट काल नाटे पूर्ण हो सब काम रे ।।टेक
पतित पावन देख जग में ऐसा प्रभु का नाम रे ।
जो सुमरे नित नामको, तो पावे मुक्ति धाम रे ।।१
गणिका थी महा मलिन नारी, अवगुण भरा तमाम रे ।
नाम से निरवान पहुँची, पाई स्वर्ग धाम रे ।।२
अनंत पापी तरगये, जिन लिया प्रभो का नाम रे ।
नाम से शिला तरी यह निश्चय दिल में धाम रे ।।३
श्रीमद् रामजी गुरु मिले, जिन्हें यह दिया विश्राम रे ।
'जीवादास' नित चरणों में, जपते राम ही राम रे ।।४

दोहा

काल ग्रसत हैं बावरे, चेतन क्यों न अजान ।
सुन्दर काया कोट में, क्यों हुये सुलतान ।।

भजन राग जिज्ञासा परज ताल

ओ३म् भज हरी ओ३म् भज श्री ओ३म् भज श्री ओ३म् रे ।
कर्म बन्धन टूटे फन्दन, पावे आनन्द भोग रे ।। टेक
चौरासी भव धार मांही, सही दुःखों की धोम रे ।
नर नारायण देही पाई, अब तो चेतो सोम रे ।।१
गर्भ समय का कौल यह ही, नित भजु नित ओ३म् रे ।
गर्भ से तू बाहर आयो, हो गयो डामाडोल रे ।।२
नर नारायण देही प्यारी, देखो रतन अमोल रे ।
शीश ऊपर काल बली का, बाजे अनहद ढोल रे ।।३
श्री भद्गूरामजी गुरु मिले, जिन पायो अमृत बोल रे ।
'जीवनराम' नित चरण में, सुमरे ओ३म् ही ओ३म् रे ।।४

भजन राग मंगल ताल

झूठा गर्व बिचारा साधो, झूठा गर्व बिचारा रे ।।टेक
राजा रंक फकीर बादशाह, सिद्ध साधक सरदारा रे ।
लंकपति सा रावण खप गया, सबने काल सहारा रे ।।१
चांद सूरज दो चक्कर चलत हैं, नभ-मंडल में तारा रे ।
अन्त नाश सभी का होवे, हम तुम कौन बिचारा रे ।।२
जग मिथ्या सपने की काया, वृथा जग भरमाया रे ।
क्षण मात्र में चला जायगा, झूंठा ढंग जमाया रे ।।३
भव सागर की भंवर धार में, डूब रहा जग सारा रे ।
'जीवानन्द' भजन कर बन्दा उतरे परली पारा रे ।।४

भजन राग मंगल ताल

करलो जनम सुधारा साधो, करलो जनम सुधारा रे ।।टेक
लख चौरासी जीव जून में, भोगे कष्ट अपारा रे ।
नर तन मिला जगत के माहीं, कर पुरुषार्थ प्यारा रे ।।१
मात पिता कुटुम्ब के नाती, और सभी परिवारा रे ।
दोये दिना के साथी सारे, अन्त सभी से न्यारा रे ।।२
जप-तप-व्रत करो विधि नाना, कर सत्संग सुख धारा रे ।
सहज होय भव पार किनारे, छूटे यम की लारा रे ।।३
हरी नाम भव तारण जग में सुरति सन्त पुकारा रे ।
'जीवाराम' मिटे सब व्याधा, सुमरो सिरजन हारा रे ।।४

दोहा

सदा अखण्ड सुख दीजिये, पारब्रह्म भगवान् ।
यही प्रार्थना दास की, करो मोक्ष मम दान ।।

भजन राग पहाड़ी ताल

इसी जग में बाबा लख आता, लख जाता ।।टेक

बालू का रंग महल बनाया, जिसमें मौज उड़ाता।
क्षण मात्र में टूट फूट जाय वृथा गर्भ जमाता ॥१
जाति नाति कुटुम्बी सारा, मात पिता सुत भ्राता।
राज पाट और माल खजाना, सभी पड़ा रह जाता ॥२
राजा रंक फकीर बादशाह, जोगी जती कहाता।
कर कर जतन हार गये सबही, ठहरन कोई नहीं पाता ॥३
राम नाम की माला जपलो, जो कोई मुक्ती चाहता।
'जीवानन्द' मिटे भव बन्धन, भव-सागर तर जाता ॥४

मनहर छन्द

माया जोर जोर नर, राखत जतन कर,
कहत हैं एक दिन मेरे काम आई है।
तोहि तो मरत कछु, बेर नहीं लागे शठ,
देखत ही देखत बबूला सो बिलाई है ॥
धन तो धर्‌यो ही रहे, चलत न कौड़ी गेह,
रीते हाथन से जैसो आयो तैसो जाई है।
करले सुकृत यह बेरिया न आवे फेर,
'सुन्दर' कहत नर पुनि पछिताई है ॥

स्त्री उपदेश

भजन राग खड़ी गजल

बायां सुनो तो सही, ये बायां सुनो तो सही।
रामजी दयाल ज्याने, भूल क्यों गई ॥टेक
घर में बातां आंगण बातां, बातां पाणी जातां।
ये बातां थारी जद ही मिटेंगी, जम मारेगा लातां ॥१

लड़वा में तो सूरी पूरी, राम भजन में मांटी।
ब्याई जवांई नै गाल्या गावे लाज शरम सब छूटी ॥२
पांच भाई भेला होवे तो, लागे घणां पियारा।
जद बाया का दाव लगे, तब करदे न्यारा-न्यारा ॥३
अरण की चोरी करें, करें सूई को दान।
ऊंची चढ़ चढ़ बायां देखे, कब आवे बीमान ॥४
ऐडां नरखे चालां नरखे, यह बायां का चाला।
कहत,'कबीर,सुनो भाई साधो,जम करसी मुंह काला ॥५

कुण्डली

घर पै आवे पांवणो नाक चढ़ावे फूड़।
सब घरकां से लड़ पड़े मन में व्यापे कूड़ ॥
मन में व्यापे कूड़ दांत खाविन्द पै पीसे।
घूंघट के बिच बहुत करकड़ी भींचे रीसे ॥
'रामवक्स' कथ कहे पावणों रहे किसी दरपै।
दोनों कुल का नाश फूड़ कर दीना घरपै ॥

भजन राग खड़ी गजल

देबियो मन करो बिचार, देबियो मनमें करो बिचार।
बार-बार नहीं पाओगी, यह मनखा दे अवतार ॥टेक
मत पूजे तू देवी देवता, मत साधे आचार।
पतिदेव की सेवा करले, उतरे भव जल पार ॥१
जप तप की तू छोड़ भावना, सुनो बचन चितधार।
पति सेवा से स्वर्ग मिलत है, यू भाखे करतार ॥२
तीर्थ नहावे तू मत जावे, तज अवगुण बेकार।
जो जीव का सुख चाहे तो, पति भक्ती मन धार ॥३

जहां-जहां पति करे वो सेवा, वहां तेरा अधिकार ।
'जीवाराम' कहे यह वाणी, वो ही सतवंती नार ॥४

भजन राग बहर छन्द जखड़ी

भारत की देवियो, सुनो ज्ञान चितधार ॥टेक
बिना ज्ञान बिना फिरो भटकती, सदा दुखारी रहती तुम ।
बिना ज्ञान बिन धक्का खावे, हरदम बिपता सहती तुम ॥
बिना ज्ञान बिन सदा फिकर में, कभी खुशी न रहती तुम ।
बिना ज्ञान बिन चलें बेढंगी, उल्टी कुबुद्ध कमाती तुम ॥
बिना ज्ञान बिन धर्म छोड़के, अधर्म सिर पर लेती तुम ।
बिना ज्ञान बिन बिरोध बढ़ावें, घर में राड़ मचाती तुम ॥
बिना ज्ञान बिन पशु से बेहतर, घट में ज्ञान बिचारो तुम ।
बिना ज्ञान बिन वृथा जिंदगी, फूहड़ पद भी पाओ तुम ॥
मानुष जन्म अमोलक हीरो, लक्ष्मी के अवतार ॥१
बालकपन में विद्या पढ़ के, उद्योग-धन्धा सीखो तुम ।
गीता ग्रन्थ पढ़ो रामायण, महाभारत भी देखो तुम ॥
इतिहासों को पढ़ो ध्यान से, जितनी बातां समझो तुम ।
घर बाहर की राख सफाई, भोजन बनाना सीखो तुम ॥
तन मन बस में राख सदा ही, कलह कुबुद्धि को छोड़ो तुम ।
अवगुण सारा छोड़ जगत में, पति धर्म निभाओ तुम ॥
तेरा सुख तेरे ही घर में, बाहर मतना ढूंढो तुम ।
पतिदेव की सेवा करके, जीवन मुक्ती पावो तुम ॥
सकल जगत में शोभा पावे, लगे न जम की बार ॥२
हीरा मोती लाल उगलती सोच समझ के देखो तुम ।
तेरी कोख में जनमे राजा, और बादशाह देखो तुम ॥
तेरी कोख में जनमे योगी, सन्त महात्मा देखो तुम ।
तेरी कोख में जनमे देवता, अवतारों तक देखो तुम ॥

तू शक्ति महालक्ष्मी जग में, अपना रूप पहिचानो तुम ।
सीता कुन्ती और द्रोपदी, अपनी कोख से जाई तुम ॥
सती होय पति को तारे, कुल तारण सती हो तुम ।
पति परिवार कुटुम्ब हो प्यारे, जग जननी कहलाती तुम ॥
पर पुरुषों की त्याग प्रीती, पति-भक्ति उर धार ॥३
आठ अवगुण तेरे घट में, इनको दिल से कर तू दूर ।
मिथ्या बचन त्याग सब मुंह से, मधुर सुशीलता रख भरपूर ।
गन्दा बदन पवित्र करले, तू ईश्वर की परिहै हूर ।
दया धर्म करो पालना, खोटी संगत जो सब कूर ॥
'जीवाराम' कथे यह वानी, सतवन्ती के मुख पर नूर ।
कुकरणी की नार करकसा, जिनके मुख पर धोवा धूर ॥
सतवन्ती की शोभा बरणें, धर्म शास्त्र कहे जरूर ।
तेरे गर्भ से निपजे दाता, तेरे जन्म से जनमे सूर ॥
सर्व सुखारी होनी चाहे तो ले शिक्षा सब धार ॥४

आठ अवगुणों के नाम

(१) असत्य बोलना, (२) बिना बिचारे झटपट काम करने लग जाना, (३) छल करना, (४) कपट करना, (५) अपवित्रता, (६) निर्दयता, (७) मूर्खता, (८) लोभ के फन्दे में आ जाना । यह आठ दोष स्त्री के स्वाभाविक हैं जो हमेशा उसके हृदय में रहते हैं । इनको आठ प्रकार के अवगुण से पुकारा जाता है ।

भजन राग कशूरी ताल

बन्दे होनहार बलवान, निखेड़ी मत मानो झूठी ॥टेक
राजा बिक्रम में सखी पड़ी, तब हार निगल गई खूंटी ।
खाली बाण अर्जुन का बहेगा, जब गोप्या लूटी ॥१

राजा दशरथ ने महलां बुला कर, डार दई बूटी ।
राम लखन दो बन को सिधाया, दशरथ देह छूटी ।।२
सीता जी ने रावण लेगो, जद आगी उलटी ।
सारा कुटम्ब को नास करायो, जद लंका छूटी ।।३
लक्ष्मण जी के बाण लग्यो, जद मंगवा लई बूटी ।
'अमरदास' की आई बीनती, चौरासी छूटी ।।४

भजन राग सागर पारवा छन्द

मत भूले नाम हरी का, दुनिया से नेह लगाया के ।।टेक
गर्भवास में भव दुःख पाया, बचन कबूल बाहर को आया ।
मूर्ख वृथा जनम गमाया, महल मकान बनाय के ।।
सुख भोगे सहज परी का ।।१
गुरु चेला और साहा करोड़ी, बिछड़त देखी सब की जोड़ी ।
काल बली ने गरदन तोड़ी, इस दुनिया में आय के ।
बस चला न मरद बली का ।।२
जोग जुगत हम करता देखा, सांस कपाली में धरता देखा ।
आखीर सबको मरता देखा, तजे मुख वायु प्राण को ।
जैसे पड़ा सुभा नगरी का ।।३
तीन पहर घर धन्दो करले, एक पहर हरी ने सुमरले,
भव सागर से पार उतरले, कहे 'पुजारी' गाय के ।
फिर बणे न खोड़ मरी का ।।४

भजन राग आसावरी

सन्तो माया तजी न जाई, नारी तज त्यागी कहलावे ।
मानुष बुद्धि न पाई ।। टेक
मैथुनादि षट धर्म देहन के, सो कैसे छुट जाई ।
देह रहे तक सब में बरतें, समझ देख मन माहीं ।।१

पुत्र पुत्री तज साधु लोग, सब निर उपाधि बन जाई ।
तो चेला चेलीन की उपाधि में, सहज सहज फसजाई ।।२
इतने धन की आसा छूटी, उन चेलन की उर आई ।
घर तज के मठ गुफा बनावे, गृहस्थीन के घर जाई ।।३
त्याग पदार्थन को नर करते, पुनः आसक्ति हो जाई ।
बिना आसक्ति त्यागे कैसे, मन में समझत नाहीं ।।४
गृहस्थ विरक्त को मर्म न जाने, भ्रष्ट भया जग माहीं ।
अखंडानन्द' होय थिर कैसे, भटक भटक मरजाई ।।५

भजन राग आसावरी

अब हम मानुष धर्म विचारा, सर्वोच्च पद मनुष्य धर्म है,
सो हमने उर धारा ।।टेक
खट पशु धर्म सुधार किया सब, पशुता दीन निकारा ।
दया सतशील विचार अरु धीरज, लक्षण नरके हैं सारा ।।१
धर्म ही लोक धर्म ही ईश्वर, धर्म ही योग हमारा ।
आशक्ति रहित बरतु या जग में, छलछिद्र से हूं मैं न्यारा ।।२
धर्म से बरतु सदा या जगमें, धर्म से होव है पारा ।
नर पुरुष मानुष पद में दोऊ, पावे मुक्ति द्वारा ।।३
धर्म धर्म सब ही चिल्लावें, धर्म का मरम है न्यारा ।
'अखंडानन्द' खोजो या पद को, याही में सुख तुम्हारा ।।४

भजन राग बहर सताई व राधेश्याम

जो तू बात घमंड की करता, मेरा सुन प्रश्न बानो ।
इस बानी का भेद बताना, समझो पूरा ज्ञानी ।। टेक
प्रथम कहो एक क्या कहिये, दूजा कौन लगा है साथ ।
तीजा त्रिगुण कैसे उत्पन्न, यह भी भेद बताना भ्रात ।।

चारों खानी चारों बानी चार अवस्था जुग हैं चार ।
चार वेद पद अंतःकर्ण है, चार पदार्थ कहे समझार ।।
भिन्न करके भेद बताना, सहज ही मिटे ऐंचातानी ।।१
पांच तत्व रंग पांच कहीजे, पांच कोष का कह विस्तार ।
पाँचों मुद्रा बता कौनसी, पांच विषय कहो ततसार ।।
पांचों प्राण मुखे कहिजे, उप प्राण हैं पांच ।
मय प्रमाण अर्थ बतलावे, जद आवे मेरे मन सांच ।।
पांचों मुक्ति प्रकट जग में, कहो कौनसी तुम मानी ।।२
छऊ अंग वेद का कहिजे, छः भृकुटि छऊ विकार ।
छऊ लिंग और छः दर्शन हैं, और बताना छऊ आकार ।।
सात धात और सात समुद्र, सप्त भौम का करो बयान ।
सात शून्य का भेद बताना, जो तू पूरा है विद्वान् ।।
जो तू भेदी है निरगुन का, तुम से बात नहीं छानी ।।३
आठ कर्म और आठ कमल हैं, आगे कौन बता भाई ।
नौ नाड़ी का बता ठिकाना, कहां रहती काया माई ।।
दस देवी और दसों देवता, दसों कहीजे दोय दुवार ।
कितनी अंग पर रोम कहीजे, और बताना आरमपार ।।
हद बेहद क्या वस्तु है, सन्त सुरत कहां पे तानी ।।४
गाल गपेड़ा बाग बिन घोड़ा, ऐसे काम चले नाहीं ।
पहले इनका भेद बताना, तब आगे गाना गाई ।।
ताल खंजरी साज बाज, और चौतारा रखजा भाई ।
गाना बजाना बन्द तुम्हारा, सत्संग और मंडल्या मांई ।।
'जीवारामजी' प्रश्न करता, कितना पवन कितना पानी ।।५

दोहा

कौन ज्ञान का ध्यान है, कौन शब्द की धार
कौन पुरुष का देश है, कैसे करें दीदार ।।

सिहल ज्ञान को ध्यान हैं, सहस्त्र शब्द की धार ।
गगन पुरुष का देश है, सन्त करें दीदार ।।

भजन राग छन्द बहर जकड़ी उत्तर

धरके सुनो अब ध्यान, बानी का अर्थ बताऊं तोय । टेक
प्रथम आदि पुरुष ओंकारा, दूजी संग माया भई लारा ।
माया ने तीन गुण उपजाई, सत रज तम प्रिय नाम कहाई ।।
ब्रह्मा रजो गुण जान रचे हैं जहान, अर्थ यूं आया है ।
है सतोगुण भगवान्, सर्व घट थाया ।।
तमो गुण शिव होय, कहूँ मैं तोये, मान इतबारा ।
याही से उत्पन्न प्रलय, सकल संसारा ।।
जो पिंड से भये प्रानी, वो पिंडज खानी मानी ।
जो अंडा से पैदा होई, सो अंडज खानी सोई ।।
जमीं से जंगम भई, उत्पन्न मेघ जल लार ।
जागृत सुपन सुषुप्ति तुरिया, भई अवस्था चार ।।
गुरु ने यूं समझाया मोय ।।१

ब्रह्म वाच परा भई बानी, ईश्वर वाच प्रसन्नता ठानी ।
माया वाच बिखरी जानी, जीव वाच मध्यमा मानी ।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारा चारा ।
साम अथर्व ऋग् यजुर्वेद यूं चारा ।।
तत्व तम परम ऐसी पद प्यारा प्यारा ।
चित मन बुध अहंकार लिखो ये चारा ।।
अर्थ धर्म और काम, निज मोक्ष पदार्थ धामा ।
अब पांचों तत्व सुनाऊं, तेरा मन का भर्म मिटा ।।
आकाश वायु तेज हैं चौथा नीर निहार ।
पांचवां तत्व पृथ्वी भई ऐसा अर्थ विचार ।।
यह गुरु से मालूम होय ।।२

शब्द स्पर्श रस रूप रस गन्धा, पांच जीव के यह हैं फन्दा।
अन्न मन प्राण ज्ञान आनन्दा, जाने हरिजन गुरुमुखी बन्दा ॥
कहूँ पांचों मुद्रा का भेद मिटे सब खेद सुनो तुम ज्ञानी ज्ञानी।
है जिम्या कमल पर खेंचरी मुद्रा ठानी ॥
अगोचरी स्थान समझले कान सुनो चित लाई लाई।
है भूसरी स्थान नासिका माहीं ॥
मुद्रा चाचरी नेत्रा थाई, उनमुन ब्रह्मण्ड माहीं।
अब पांचों मुक्त सुनाऊं, तोय निज मत भेद बताऊं ॥
समीप सालोक्या सायोज्या जीवन मुक्त विचार।
मुक्त बन्द में वो नहीं वो तो इन से पार ॥
वो निर्बन्धन निरमोह्या ॥३
शिक्षा व्याकरण ज्योतिष है भाई, छन्द कल्प निरुक्त कहाई।
छऊ अंग वेद के गाई, छः दर्शन अब कहुं समझाई ॥
सांख्य वैशेषिक मीमांसा भाई भाई।
और न्याय योग वेदांत सुनो चित लाइ ॥
उप कर्म अभ्यास मोक्ष दरशाई दरशाई।
अर्थवाद अपूर्वा उत्पति पाई ॥
अब छः भृकुटो गाऊं, भिन्न-भिन्न करके समझाऊं।
बलि बजे गौमती जानूं, हंस मुखी सांच कर मानूं ॥
मकर मनी और शब्द मनी एक मन्दर तत सार।
मोटा पतला छोटा आदि यह हैं छउ आकार ॥
यह अर्थ सतार्थ होय ॥४
सात समुन्दर सुनते जाओ, अपने दिल में अर्थ जमाओ।
लार छार दधि घृत कहाई, दूध ईख सुरा सुन भाई ॥
नाड़ी चमड़ी रोम मांस यूं आया आया।
रक्त बिन्द और हाड़ धात दर्शाया ॥

आंख नाक मुख कान कंठ के माहीं।
यह नौ नाड़ी का ठीक ठिकाना आहीं ॥
अब कमल आठ यह आया, खट मूल नाभ ठहराया।
और आठ कर्म है न्यारा, कोई जानेगा जानन हारा ॥
पूरब पच्छिम उत्तर दक्षिण, यह दिशा हैं चार।
नैऋत्य वायु ईशान अग्नि, यह कोन हैं चार ॥
यह आठों कोन यूं होय ॥५
दस देवी दस पवना होई, दसों देवता कहुं अब तोई।
ब्रह्मा रुद्र और महादेवा, चांद सूरज और अन्दर देवा ॥
वरुण अग्नि यमराज परजापत भाई भाई।
साढ़े तीन करोड़ हैं ये बदन पै थाई ॥
हद माया जाल करो तुम ख्याल फसो मत कोई कोई।
है बेहद ब्रह्म बिचार लिखो तत सोई ॥
यह अर्थ किया तत सारा, कर दिल में धारण प्यारा।
नहीं मूर्ख के इतबारा, वह डूबेगा मझधारा ॥
दया भई गुरुदेव को, मेटे तिमर अज्ञान।
'जीवाराम' निजस्वरूप में, सदा भया गलताना ॥
यह पद पूर्ण छन्द अब होय ॥६

भजन तीन ताल ठेका

तुम साहब करतार हो, अन्तर्गत पाई।
निरगुण सुरगुण कैसे भई, निबला रहा बुझाई ॥टेक
निज आत्म किस ठौर है, लिखता कैसे पाई।
चार खान में निज कौन है, ज्यां को कहो समझाई ॥१
उपजे मिटे फिर होत है, यह क्या है दुखदाई।
असंग जुग कैसे भया, निज काई में समाई ॥२
शुद्धस्वरूप कैसे भया, गम किम कर थाई।
निअक्षर कैसे भया, कैसे पारख पाई ॥३

मन भया माया भई, चेतन कोन रहाई ।
'बनानाथ' आगे कहो, निवलो रहा बुझाई ॥४

भजन राग तीन ताल ठेका

नाथ तुम सबकी कहो निशानी ।
थाप अथाप निगु'ण सगुण नाहीं, किस विध सूरत जगानी ॥टेक
धरती नहीं गगन नहीं था, नहीं था पवन और पानी ।
हिन्दू तुरका का जनम नहीं था, तब की कहो सहनानी ॥१
सात समुन्दर अटकुली पर्वत, नहीं खानी नहीं बानी ।
चार वेद पुराण नहीं थे, आलस कांई में समानी ॥२
जाप अजपा जोग नहीं जुगती, नहीं अवतार निशानी ।
निराधार आधार नहीं था, जब शर्म थी कहां समानी ॥३
धुंधुकार में आप कहां थे, गुरु शिष्य की नहीं बानी ।
कहे 'निवला' आकार नहीं था, निराकार कहां रहानी ॥४

भजन राग आसावरी

ईश्वर का सुनो स्वभाव यह प्यारा ।
सत् चित् आनन्द हैं अविनाशी, सब देसी इकसारा ॥टेक
अजन्मा अनादि केवल सर्वाधार निराकारा ।
अजर अनन्त अन्त नहीं ताको, न कोई वार न पारा ॥१
सर्वेश्वर सर्व में व्यापक, नहीं आकार विकारा ।
स्वतः प्रकाश सदा परिपूर्ण, जन्म-मरण से न्यारा ॥२
अखण्ड अकाल सर्व का दृष्टा, शुद्ध ब्रह्म तत्सारा ।
मुक्तस्वरूप सदा सुखरासी, जाने जाननहारा ॥३
अन्तर्यामी सबका स्वामी, सहज स्वरूप विस्तारा ।
कहे 'जीवाराम' भेद हुआ दूरा एक अरूप निज सारा ॥४

भजन राग आसावरी

आत्म का सुनो स्वरूप चितधारा ।
अमर अनादि आदि जुगादि, जन्म-मरण से न्यारा ॥टेक

देश काल वस्तु नहीं लागे, नहीं अवस्था चारा ।
अवस्था अतीत गुणों से आगे, निराकार निरधारा ॥१
सत् चित्त आनन्द सदा निर-बन्धन, माया प्रकृति बारा ।
अखंड अकाल चेतन सुखरासी, काल मौत से न्यारा ॥२
नाम रूप वाणी नहीं खाणी, नहीं आचार विचारा ।
धर्म अधर्म कर्म नहीं करिया, साखो शब्द सब बारा ॥३
असंग अभोक्ता है अकरता, कूटस्थ है तत्सारा ।
कहे 'जीवादास' सो हो निज आत्म, मेरा में हूं प्यारा ॥४

भजन राग आसावरी

हमने गुरु गम आत्म चीना ।
आवे न जावे मरे न जन्मे, ऐसा निश्चय कीना ॥टेक
देख लिया जब सुख दुःख त्यागा, राम नाम रंग लीना ।
मेरा साहिब सब घट में बोले, तसन्त हरीजन लिख लीना ॥१
वेष फकीरी सब कोई धारे, ज्ञान फकीरी पद झीना ।
जिनके चोट लगी सत्गुरु की, शीश काट धर दीना ॥२
फेरी देऊं न मांगन जाऊं, सवाल किसी से नहीं कीना ।
अजगर इधर उधर नहीं हिलता, चुन हरी ने लिख दीना ॥३
घायल होय फिरूं जग माहीं, जीयाराम गुरु कीना ।
धन्य 'सुखराम' आतम मुख दरसे, निरख परख के लीना ॥४

भजन राग आसावरी

साधो भाई हम निरगुण निराकार ।
जीवों के हेतु वपु धर आये, सगुण रूप अवतारा ॥टेक
जिन्होंने हमारा मर्म जाना, ताको किया भव पारा ।
मूर्ख जीव समझा नाहीं, कहीं भर्म रहा संसारा ॥१
मूर्ख जीव स्थूल जाण कर, किया नहीं इतवारा ।
या कारण जग माहीं वृथा, समझे नहीं गंवारा ॥२

समझे कोई हंस विवेकी, जिनका किया उद्धारा।
अनुभव ज्ञान दिया हम उनको, प्रकट कृत पुकारा ।।३
नित अवतार सन्त का धरके, आवत हूं कई बारा।
कहे 'जीवाराम' सुनो भाई साधो, हम त्रिगुण से न्यारा ।।४

भजन राग भारतीय सोरठ

जोगा रम को मारग बांको रे, जोगा रम को ।।टेक
खांडे की धार छुरी की अणियां, भक्ति सुई को नाको रे ।।१
गिरवर चढ़ता गिर मत जाजो, इधर उधर कांई झांको रे ।।२
खार समुद्र में अमृत बेरी, भर भर प्याला चाखो रे ।।३
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, मूंड मुंडाया जोगी क्याको रे।।४

भजन राग गीतक छन्द

डर लागे और हांसी आवे, अजब जमाना आया रे ।।टेक
धन दौलत ले माल खजाना, वेश्या नाच नचावे रे।
मुट्ठी अन्न साधु कोई मांगे, कहे नाज नहीं आया रे ।।१
कथा होय श्रोता सोवें, वक्ता मूंड पचाया रे।
होय जहां कहीं स्वांग तमाशा, तनिक नींद नहीं आवे रे ।।२
भंग तंबाखू सुल्फा गांजा, सुक्कां खूब उड़ावे रे।
गुरु चरणों चित नेम न धारे, मदवा चाखन आवे रे ।।३
उल्टी चलन चले सब दुनिया, तासो जी घबरावे रे।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, फेर पीछे पछतावे रे ।।४

भजन राग छन्द पारवी

गम खाना चीज बड़ी है, नर देखो जरा गम खायके ।।टेक
गम खाई प्रहलाद पियारा, असुरदन्त कर लीने सारे।
खम्भ फोड़ हिरनाकुश मारे, नरसिंह रूप बनायके ।।
जिनकी छिन में विपति हड़ी है ।।१
गम खाई धुरु बालकपन में, करी तपस्या जाकर बन में।
क्षत्री डोले इकला बन में, करी तपस्या मन लायके ।।
जाकी अब तक भुजा खड़ी है ।।२

राजा जनक ने यज्ञ रचाया, देश देश का भूप बुलाया।
राम-लखन पीछे से आया, अपना मन समझायके ।।
जाके गल बरमाल पड़ी है ।।३
'सुखीराम' साधु को गावे, असुरदल्ल का छन्द बनावे।
तोड़ जोड़ गुनियों में गावे, सुनियों चित्त लगायके ।।
जाको आवागवन हड़ी है ।।४

भजन राग विनोदी

तुम्हारे बिना कौन बंधावे धीर ।।टेक
काशीपुर से विप्र बुलाया, लिख लिख भेजे तीर।
दोज पूनों को जीमन कही है, जगत रचा है कबीर ।।१
भाई न बन्धु पल्ले हमारे, पड़ी भगत पै भीर।
बनखंड-बनखंड भटकत-भटकत, व्याकुल भयो शरीर ।।२
अपने भक्त की सुधि लई, रलो समन्दरा सीर।
आप हरी जीवण बणजारो, बादल कर दी भीर ।।३
अनन्त कढ़ाई अनन्त भंडारा, अनन्त भरा जल नीर।
कहे 'कबीर' सुनो मेरे साहिब, मैं तेरो मस्त फकीर ।।४

भजन राग रामकली राग विनोदी

तुम्हारे बिना बिगड़ी नै कौन सुधारे।।टेक
एक दिन बिगड़ी पिता पुत्र में, बांध खम्भ से मारे।
अपने भगत के कारणे, रूप नरसिंह धारे ।।१
एक दिन बिगड़ी ध्रुव भगत की, मात गोद से डारे।
ऐसी महर भई ईश्वर की, राज अचलदे डारे ।।२
एक दिन बिगड़ी राज सभा में, द्रोपदी को चीर उतारे।
खींचत-खींचत अनन्त बढ़ाओ, दुष्ट भुजा बल हारे ।।३
एक दिन बिगड़ी नरसी भगत की, समधीजी के द्वारे।
आप कृष्णजी भयो माहेरो, राधा रुकमण लारे ।।४

एक दिन बिगड़ो मीरा बाई की, राणो विष दे डारे।
ऐसी मेहर भई ईश्वर की, विष अमृत कर डारे ॥५
'तुलसीदास' आस रघुवर की, हरि चरणों चित धारे।
ऐसी लीला है ईश्वर की, नारी को नर कर डारे ॥६

भजन राग मांज

कहो जी कैसे त्यारोगे, मारो अवगुण भरा है शरीर ॥टेक
अंका तारी बंका तारी, तारे सदन कसाई।
सुवा पढ़ावत गणका तारो, तारी है मीराबाई ॥१
करणी-करणी सब ही कहें, करणी न जाणे सार।
अपनी करणी तार उतरणी, तर गये धुरु प्रहलाद ॥२
करणी-करणी सब कहे, करणी से गत होय।
तेरो भरोसो जब ही जाणो, बिन करणी गत होय ॥३
मन करणी के घाट पै भई राम से भेंट।
अब तो प्रभो त्यारे सरसी, लीनी 'कबीरान' टेक ॥४

दोहा

सुरत करो मेरे सांवरा, ईं भव जल के मायं।
आपहि बहि जायेंगे, जो नहीं पकड़ोगे बाहं ॥
ईश्वर तुमसे विनती, तुम लग मेरी दौर।
जैसे कंवा जहाज ज्यूं सूझे और न ठौर ॥

भजन राग केदारो

ऐजी म्हारा नटवर नागरिया, भगतां रे क्यों नहीं आयो रे ॥टेक
धना भगत की भगत पूर्वली, जिनको खेत निपजायो रे।
बीज लेर साधां ने बांटौ, बिना बीज निपजायो रे ॥१
नामदेव थारो नानू लागे, ज्यांरो छपरो छायो रे।
मार मंडासो छावण लागो, लक्ष्मी बंध लगायो रे ॥२

सैन भगत थारो सुसरो लागे, ज्यांरो कारज सारो रे।
बगलर छोड़ी नाई बणगो, नृप को सीस संवारो रे ॥३
पुरषो खाती पुरुषों हूं तो, ज्यां को पैड़ो पूटो रे।
बिना बुलाया आप ही आयो, रात्युं लकड़ो काटो रे ॥४
कबीर कांई थारो काकोजी लागे, ज्यांघर बालद ल्यायोरे।
खांड खोपरा गरी छुवारा, आप लदावन आयो रे ॥५
भिलनी कांई थारी भूवाजी लागे, जिणरो झूटण खायो रे।
ऊंच नीच की शंका न मानी, रुचरुच भोग लगायो रे ॥६
कर्मां कांई थारी काकीजी लगे, जिणरो खीचड़ खायो रे।
धावलियारो पड़दो करती, रुच रुच भोग लगायो रे ॥७
मीरा कांई थारी मांवसी हूती, जिणरो विप्रणों जारियो रे।
राणा विष का प्याला भेज्या, अमृत कर डारौ रे ॥८
बाल भोग को भूखो बाला, खोश खा गयो बोर रे।
ननीवाईरो माहेरो भरतां, तनै आवे जोर रे ॥९
जीमण के जीमण रौ तू तो, फिर सारे काम रे।
ननीबाईरो माहेरो भरतां, थारों लागे दाम रे ॥१०
कहे 'नरसी' लो सुन सांवलिया, आंणो है तो आओ रे।
ब्याई सगां में भुंडा लागां, यू कांई लाज गुमाओ रे ॥११

भजन

सांवरा किसोरे दिसावर नाटौ ॥टेक
आगे तो तू आवतो रे बाला, अब काई पड़ गयो घाटौ ॥१
नामदेव थारी 'अंगरे धोवति, जिण से छायो टाटौ ॥२
कर्मा के घर नित के जातो, खातो खीचड़ खाटौ ॥३
बामण का चावल खा गयो, बिदुर के सागर बांटौ ॥४
थारी जीभ चटोकड़ी रे बाला, मारे नहीं छै चाटौ ॥५
बक बक कर म्हारी जीभ दुखाई, ते ढलवा होय न भाटो॥६

म्हारी बेल्यां आंख खुजाई, पग के बांध्यों पाटो ॥७
भगत बछल झूठा म्हारा वाला, थारा तो जीवड़ा काटो ॥८
जे थारो बिड़द बंधायो चावें, खोल कान को डाटो ॥९
हूं तो सिमरूं तू भर [illegible]हेरो, करल्या आटो साटो ॥१०
बणे 'नरसी' लो सुन सांवरिया, यो जैसे क्योंने निखाटो ॥११

भजन राग गौड़ मलार

लेजा गांठ तिहारी, गांठ तिहारी गिरवर धारी ।
मोड़ो कैसे आयो, लजा गांठ तिहारो ॥टेक
और सगाने महल महलिया, ऊपर बनी अटारी ॥
नरसी ने फूटी हंडिया, वो भी विना किवारी ॥१
और सगा ने लाडू पेड़ा, ऊपर बरफी न्यारी ।
नरसी ला न ठंडा भोजन, बिना साग तरकारी ॥२
और सगा ने सौड़ गींदवा, ऊपर चादर न्यारी ।
नरसीला ने फाटी गूदड़ी, तार तार कर न्यारी ॥३
'नरसीलो' तो अरज करे है, सुन जो टेर हमारी ।
ननीबाई को भरजा माहेरो, अबके बेर हमारी ॥४

दोहा

अवगुण हूँ में सांवरा, बगस गरीब नवाज ।
जो मैं पूत कपूत हूं, तो ये पिता को लाज ॥

भजन राग बनजारा बारामासी

मोय दे दर्शन भगवान्, जीवड़ो क्यों तरसावे रे ।
मोय बिन दर्शन नहीं चैन बिरह ये बहुत सतावे रे ॥टेक
भक्तवत्सल प्रभो आप हो, सबका सरजन हार ।
जो जन शरण लई तुम्हारी, सहज हुआ भवपार ॥
लार जम डांण चुकावे रे ॥१

चैत में चेतन भया खोल्या नैन विचार ।
भव जल बहतो जीवड़ो, हरी से करें पुकार ॥
पार भव धार लगावे रे ॥२

बैसाख में बिसरो नहीं, पलका रहा निहार ।
कह तो दर्शन देव दे, नहीं मरूं कटारी खार ॥
और दिल धीर बंधावे रे ॥३

जेठ महीना लागया, झट पट लाठी डोर ।
मैं सुमरूं नित पीव को, जग ध्यावत है और ॥
और ना मेरे मन भावे रे ॥४

आसाढ़ महीना लागया, और सवर बांधिया धीर ।
जग जाने पिंड रोग है, तू ही जाणे मेरी पीर ॥
दूजो कोई वैद्य न पावे रे ॥५

सावण महीना लागिया, तीजा भया तैयार ।
जग झूलन को जात है, अन्दर करें उलार ॥
धार अमृत की चूबे रे ॥६

भादू महीना लागियो, बरे बादल का जोर ।
मल्हल चमके बीजली, गाज रह्यो घनघोर ॥
सोर म्हारी सुरत मचावे रे ॥७

आसौज महीना लागिया, आस लगी भरपूर ।
दे दर्शन दुविधा हरो, करो कल्पना दूर ॥
रोग अब नाहीं सतावेरे ॥८

मगसर महीना लागिया, मङ्गल गाऊं रोज ।
जग उलझे जगजाल में, मैं लगाऊं खोज ॥
सांवरो कहीं तो पावेरे ॥९

पौष महीना लाग्या, पाला पड़े बेप्रीत ।
लख आवे लख जावता, यह ही जगत की रीत ॥
अमर कोई नहीं रहावे ॥१०

माघ महीना लागिया, महर भई मुझमाई।
भेद मिले भ्रम जाल का, हरी हमें अन्तर नाहिं ॥
सर्व सुख सेज समावेरे ॥११
फागुन महीना लागीया, फरक रहा कुछ नाहीं।
अब फगवां खेलों कौन से, दूजो दरसे नाहीं ॥
शब्द 'जीवाराम' सुनावेरे ॥१२

इन्दव छन्द

जा दिन ते गर्भवास तज्यो नर, आई अहार लियो तब ही को।
खातई खात भये इतने दिन, जानत नाहिं भूख कही को ॥
दौरत ध्यावत पेट दिखावत, तू शठ कीट सदा अनही को।
सुन्दर क्यों बिसवास न राखत, सो प्रभु विश्व भरै सबही को ॥

भजन राग पूर्वोक्त चार

भगवान तुम्हारे चरणों में, नित ध्यान हमारा बना रहे ।।टक
सुबह शाम हर वक्त सदाही, हरी नाम हृदय में जमा रहे ॥१
विघ्न विरोध बुराइयों से, हमें सदा बचाते आप रहें ॥२
ऐसी दया करो हम ऊपर, सदा भजन में लगे रहें ॥३
'जीवादास' शरण में तेरी, भक्ति पद अधिकार रहे ॥४

भजन राग पूर्वोक्त चार

यह अर्ज हमारी सुनने की, भगवान बाल हम तेरे हैं ।।टेक
रात दिवस और श्याम सदाही, हम पर कृपा बनी रहे ॥१
त्रिविध ताप अति दुख भारी, इनसे हमें बचाते रहे ॥२
परमानन्द सुख नाम तिहारो, नित हृदय में जपते रहे ॥३
'जीवादास' दास प्रभो तेरा, स्वयं सिर पै आप रहे ॥४

भजन राग मांझ

प्रभो शरना तेरा मेरे मन भाया ओ ।।टेक
सैन भगत की संशय मिटी, आप बना हरि नाई ओ ॥१

गणिका की महा कुड़ी कुमाती, उनको सुरग पठाई ओ ॥२
गजराज टेरे जल अन्दर, पल मांई ज्यान बचाई ओ ॥३
'जीवानन्द' शरण तेरी आया, सब दुःख हटाई ओ ॥४

भजन राग मांझ

प्रभो महिमा तेरी अजब सराउओ ।।टेक
धरन गगन प्रभो आप ही बनाया, क्या मैं मन्दिर चुनाऊं ओ ॥१
बाग बगीचा प्रभो आप बनाया, क्या मैं फूल चढ़ाऊं ओ ॥२
अन्न रस भोजन प्रभो आप बनाया, क्या मैं भोग लगाऊं ओ ॥३
'जीवादास' प्रभो महिमा तेरी गावे, गावत पार नहीं पाऊं ओ ॥४

भजन राग राशटरी

ऐजी माने भूल बिसर मत जाओ, पार लगाजो सा ।।टेक
स्वारथ का मैं बण्या पूतला, करणी न मत जाजो सा।
सारा अवगुण टाल के, चरणों का दास बनाजो ॥१
नेम धर्म जाणा कोनेछा, थे ही आर सिखा जोसा।
कठिन तपस्या नमणी कौने, थे हो आर निभाजो ॥२
चौका-चौका भगत घैणा है, दाह में मत रमजाजो सा।
दौड़ा-दौड़ा आजो जी, भगतों की लाज बचाजो ॥३
दर्शन के ताहीं तरसां छां, आंखों में रमजाजो सा।
कदे छोड़ जाओ तो, ईं हंसा ने लार लगाजो ॥४
'युगलनैन' दर्शन का बेली, मोह जंजाल छुड़ाजो सा।
करुणा जल बरसा करके, हंस-हंस के कंठ लगाजो सा ॥५

भजन राग श्याम कल्याण व छन्द पारबी

मैं लिखूं अरजी किस नाम से, तेरा नाम ही नाम अनंत है ।।टेर
सतयुग में सरियादे कुम्हारी, राम-नाम की महिमा उचारी।
अनंत झाल से बच्चा उभारी, भया राम-नाम निज तन्त है ॥१

ओ३म् नाम की तीन हैं धारा, ब्रह्मा विष्णु और शिव प्यारा।
जिन्होंने जगत रच दिया सारा, यूं कहते वेद और संत हैं।।२
सत् नाम कबीर जी ने ध्याया, बाल-भर बणजारा आया।
मेवा मिष्ठान मिठाई ल्याया, किया यश बेअन्त है।।३
मीरा भज्या गिरधर गोपाला, विष जहर हुवा अमृत प्याला।
सुवरण हार हुआ सर्प काला, पति भया शरमन्द है।।४
सहस्त्र नाम सबों एकसारा, ज्यों सुमरण में एक हो तारा।
'जीवाराम' हृदय में ही धारा, भया राम नाम निज मन्न है।।५

भजन पद

राम नाम राम नाम राम नाम लीजे,
राम नाम रट रट राम रस पीजे ।।टेक
राम नाम राम नाम गुरु ते पाया,
राम नाम मेरे हृदय में आया ।।१
राम नाम राम नाम भजरे भाई,
राम नाम पटतर तुल्य न कोई ।।२
राम नाम राम नाम है अति नीका,
राम नाम सब साधन का टीका ।।३
राम नाम राम नाम अति मोहि भावे,
राम नाम निशदिन 'सुन्दर' गावे ।।४

भजन पद

सफल हो जावो रे, भजो हरि का नाम ।।टेक
प्रहलाद हरि का प्यारा, वे राम भजे इकसारा।
गिरवर से गिरता झेल्या रे ।।१
पांडु हरि का प्यारा, वे राम भजो इकसारा।
[illegible] आम [illegible] ।।२

नरसोला हरि का प्यारा, वे राम भजो इकसारा।
नैंनी को माहेरो ल्यायो ।।३
करमां हरि की प्यारी, वे राम भजो इकसारी।
करमां को खीचड़ खायो ।।४
'मीरा' हरि की प्यारी, वे राम भजो इकसारी।
सन्ता में हरि ने पायो रे ।।५

भजन पद

भजन बिना रहगो रे, पशु के समान ।।टेक
नैन दिया रे दर्शन करले कान दिया सुन ज्ञान ।।१
दांत दिया मुखडारो माडन, जीभ दई भज राम ।।२
पांव दिया रे तीर्थ करले, हाथ दिया कर दान ।।३
कहत 'कबीर' सुनो भाई सोधो, लाग्यो हरि चरणों में ध्यान ।।४

भजन पद

जिनके हिय में सियाराम बसे,
तिन और का नाम लिया न लिया ।।टेक
जिनके द्वारे श्री गंग बहे,
तिन कूप का नीर पिया न पिया ।।१
जिन मात-पिता गुरु की सेवा करी,
तिन तीरथ व्रत किया न किया ।।२
जिन सेवा टहल करी सन्तों की,
तिन योग और ध्यान किया न किया ।।३
'तुलसीदास' बिचार कहे,
कपटी को मन्त्र किया न किया ।।४

भजन राग परज ताल

श्रीराम कहने का मजा जिसकी जबां पर आ गया।
वो मुक्त जीवन हो गया, चारों पदारथ पा गया ।।टेक

लूटे मजे धुरु भक्त ने उस नाम के प्रताप से ।
सन्मुख प्रभु के जा बसे, तिरलोक में जस छा गया ।।१
प्रहलाद को लागी लगन उस परब्रह्म के नाम की ।
नरसिंह को दर्शन दिया, हृदय अपने से लगा लिया ।।२
शबरी थी जाति की भीलनी, राम का सुमिरन किया ।
परमात्मा घर आन के, उसके हाथ से फल खा गया ।।३
कलिकाल के जो भक्त हैं उनका तो रुतबा है बड़ा ।
नरसी की हुण्डी द्वारकानाथ, सांवरो दिलवा गया ।।४
योगी मुनीश्वर देवता, उस रूप को खोजत फिरे ।
जब हुई उसकी कृपा, सत्गुरु उन्हें दरसा गया ।।५
कपटी को कभी मिलता नहीं वो श्याम सुन्दर सांवरा।
प्रेम से जिसने जपा, दर्शन उसे दिखला गया ।।६
कहां तलक वर्णन करूं, हरिनाम के गुणगान का ।
अम्बर के मानिन्द 'तुलसीदास' रस बरसा गया ।।७

भजन पद

अंखियां हरि दर्शन की प्यासी ।।
देखन चाहवे कमल-नैन को, निशदिन रहत उदासी ।।१
केसर तिलक मोतियन माला, बृन्दावन के वासी ।।२
जे तन लागी वही तन जाने, लोगन के मन हांसी ।।३
'सूरदास' प्रभो तुमरे भजन बिन, लेउ करवत अरु कासी ।।४

भजन राग परज ताल

मुझको क्या ढूंढ़े बन-बन में, मैं तो खेल रहा हर फन में ।।टेक
आकाश आयु तेज पृथ्वी इन पांचों भूतन में ।
पिंड ब्रह्मांड में व्याप रहा हूं, चौदह लोक भवन में ।।१
सूर्य चंद्रमा बिजली तारा में, मेरा प्रकाश है इनमें ।
सारे जगत को करूं उजारा, मेरा प्रकाश सबन में ।।२

सर्व में पूरण एक बराबर, पहाड़ और राई तिल में ।
कमती ज्यादा नहीं किसी में, इकसार हूं सबनमें ।।३
रोम-रोम रग-रग में ईश्वर, इन्द्रियां तन है मन में ।
'अचलराम' सत्गुरु कृपा बिन, नहीं आता लिखन में।।४

भजन राग परज ताल

मुझको कहां तू ढूंढे बंदे, मैं तो तेरे पास में ।।टेक
न तीर्थ में न मूर्ति में, एकान्त निवास में ।
न मन्दिर में न मस्जिद में, न काशी कैलाश में ।।१
न मैं जप में न मैं तप में, न हूं व्रत उपवास में ।
नहीं मैं किया कर्म में रहता, नहीं हूं जोग संन्यास में ।।२
न मैं पिंड में न मैं प्राण में, न ब्रह्मांड आकाश में ।
न मैं भ्रकुटी भंवर गुफा में, सब श्वासन के श्वास में ।।३
खोजी होय तुरन्त मिल जाऊं, पल-भर की उल्लास में।
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो, मैं तो हूं विश्वास में ।।४

भजन राग छन्द पारवी

तू खुद मिलनो नही चाहवे, वो हरदम तेरे मकान पैं ।।टेक
म ा फिरे तू ऋषी मुनी पैं, मारा फिरे तू किसी गुनी पैं।
मारा फिरे तू देश दुनी पैं, जाके देख तमाम पैं ।।
तुझे कोई कहा बतलावे ।।१
कोई कहे द्वारकावासी, कोई कहे बनारस काशी ।
घट-घट की करो तलाशी, लख चौरासी धाम पैं ।।
हर जगह खड़ा तोय पावे ।।२
खोलो जरा ब्रह्म का पट जी, सुरती से जरा ढूंढो घट जी ।
खोटा कर्म छोड़के हट जी, खाक डाल आराम पैं ।।
तोय जब वो दरस दिखावे ।।३

गोकुल कहे कठिन है मिलना, निशदिन पड़े खाक में रिलना ।
'रामबक्स' कहे दुःख नहीं झिलना, तेरी तो इस चाम पै ॥
क्यों वृथा गाल बजावे ॥४

भजन राग पारबी

लग गई आंख किसी कंगाल की, सोते को सुपना आया है ॥टेक
सपने में राजा भया छत्रधारी, ऊंचे महल और बनी अटारी ।
हुक्म लगा तब सजी असवारी, गज रथ घोड़ा पालकी ॥
बड़ा अटल राज्य पाया है ॥१

घर में रानी चन्द्रमुखी है, बेटे पोते सभी सुखी हैं ।
दुश्मन मेरा सभी दुःखी है, सब राजों पै माल की ॥
बड़ी अरब खरब माया है ॥२

सपने में वर्ष हजारों बीते, चले तोप और पड़े पलीते ।
दुश्मन मैंने सारे जीते, मनसा सुख और पालकी ॥
सिर अटल छत्र छाया है ॥३

खुलगी आंख गई प्रभुताई, टूटो छान नजर घर आई ।
'गंगादास' कहे फटोसो पाई, पगड़ी सोलह साल की ॥
शठ जाग के पछताया है ॥४

दोहा

सोये सोये क्या करे, सोये आवे निंद ।
काल सिराहने यूं फिरे, जिमि तोरण आयो बिंद ॥
सोऊं सोऊं क्या करे, सोये होत अकाज ।
ब्रह्मा का आसन डिगे, सुनके काल की गाज ॥

भजन राग बहर जकड़ी

भारत के वीरो करो भारत को सुधार ॥टेक
जो जो जुल्म हुये भारत में उनको दूर निकालो तुम ।
भारी जुल्म फूट का देखा, इनको दूर निकालो तुम ॥

फूट से बरबादी जग में, सोच समझकर देखो तुम ।
फूट पड़ी हरनाकुश अन्दर, पिता पुत्र में देखो तुम ॥
बहुत सताया पुत्र ने, नजर खोल के देखो तुम ।
राम बिरोधी कुटिल करोधी, सतजुग अन्दर देखो तुम ॥
कुबुध बिसारो शुद्ध विचारो, सांची समझ विचारो तुम ।
हिलमिल चलो सभी नरनारी, दिलमें प्रेम बढ़ाओ तुम ।
कौरव कंस मरे फूट में, डूब गये मझधार ॥१
छूवाछूत का बुरा मामला, इनको दूर निकालो तुम ।
गन्दगी को दूर हटा के, स्वयं शुद्धि फैलाओ तुम ॥
चोरी चुगली मिथ्याचारी, इनसे मन हटालो तुम ।
मद्य मांस का खाना छोड़ो, दया धर्म घट धारो तुम ॥
झूंठ पाखंड को दूर हटाओ, सतवृत्ति बनजाओ तुम ।
हिंसा अधर्म पाप को छोड़ो, परमो धर्म विचारो तुम ॥
आपसरी में मान बढ़ाओ, अभिमान को त्यागो तुम ।
विद्या पढ़ो अविद्या भागे, नर तन का फल पाओ तुम ॥
मनुष्य मती राख उर अन्दर सब से मिलाओ प्यार ॥२
गऊ गरीब की रक्षा कीजे, हिंदू धर्म निभाओ तुम ।
साधू विप्र की सेवा करके, विद्यार्थी बनजाओ तुम ॥
छल-कपट और धोखाबाजी, इनको बुरे समझो तुम ।
सट्टा-बाजी जूवाबाजी गुंडाबाजी छोड़ो तुम ॥
बदफेलों को दूर हटाओ, न्याय निगाह में राखो तुम ।
हरिजन होके भजो रामको, ॐका ध्यान लगाओ तुम ॥
सज्जन बनो सभी नर-नारी, घमंड गरूरी छोड़ो तुम ।
धर्म-कर्म की सीमा सुधारो, [illegible]
मुंहजोरो और मान-[illegible]
बैरभाव की छो[illegible]
वृथा खरच[illegible]

गोकुल कहे कठिन है मिलना, निशदिन पड़े खाक में रिलना ।
'रामबखस' कहे दुःख नहीं झिलना, तेरी तो इस चाम पैं ॥
क्यों वृथा गाल बजावे ॥४

भजन राग पारवी

लग गई आंख किसी कंगाल की, सोते को सुपना आया है ॥टेक
सपने में राजा भया छत्रधारी, ऊंचे महल और बनी अटारी ।
हुक्म लगा तब सजी असवारी, गज रथ घोड़ा पालकी ॥
बड़ा अटल राज्य पाया है ॥१
घर में रानी चन्द्रमुखी है, बेटे पोते सभी सुखी हैं ।
दुश्मन मेरा सभी दुःखी है, सब राजों पें माल की ॥
बड़ी अरब खरब माया है ॥२
सपने में वर्ष हजारों बीते, चले तोप और पड़े पलीते ।
दुश्मन मैंने सारे जीते, मनसा सुख और पालकी ॥
सिर अटल छत्र छाया है ॥३
खुलगी आंख गई प्रभुताई, टूटो छान नजर घर आई ।
'गंगादास' कहे फटीसो पाई, पगड़ी सोलह साल की ॥
शठ जाग के पछताया है ॥४

दोहा

सोये सोये क्या करे, सोये आवे निंद ।
काल सिराहने यूं फिरे, जिमि तोरण आयो बिंद ॥
सोऊं सोऊं क्या करे, सोये होत अकाज ।
ब्रह्मा का आसन डिगे, सुनके काल की गाज ॥

भजन राग बहर जकड़ी

भारत के वीरो करो भारत को सुधार ॥टेक
जो जो जुल्म हुये भारत में उनको दूर निकालो तुम ।
भारी जुल्म फूट का देखा, इनको दूर निकालो तुम ॥

फूट से बरबादी जग में, सोच समझकर देखो तुम ।
फूट पड़ी हरनाकुश अन्दर, पिता पुत्र में देखो तुम ॥
बहुत सताया पुत्र ने, नजर खोल के देखो तुम ।
राम बिरोधी कुटिल करोधी, सतजुग अन्दर देखो तुम ॥
कुबुध विसारो शुद्ध विचारो, सांची समझ विचारो तुम ।
हिलमिल चलो सभी नरनारी, दिलमें प्रेम बढ़ाओ तुम ।
कौरव कंस मरे फूट में, डूब गये मझधार ॥१
छूवाछूत का बुरा मामला, इनको दूर निकालो तुम ।
गन्दगी को दूर हटा के, स्वयं शुद्धि फैलाओ तुम ॥
चोरी चुगली मिथ्याचारी, इनसे मन हटालो तुम ।
मद्य मांस का खाना छोड़ो, दया धर्म घट धारो तुम ॥
झूंठ पाखंड को दूर हटाओ, सतवृत्ति बनजाओ तुम ।
हिंसा अधर्म पाप को छोड़ो, परमो धर्म विचारो तुम ॥
आपसरी में मान बढ़ाओ, अभिमान को त्यागो तुम ।
विद्या पढ़ो अविद्या भागे, नर तन का फल पाओ तुम ॥
मनुष्य मती राख उर अन्दर सब से मिलाओ प्यार ॥२
गऊ गरीब की रक्षा कीजे, हिंदू धर्म निभाओ तुम ।
साधू विप्र की सेवा करके, विद्यार्थी बनजाओ तुम ॥
छल-कपट और धोखाबाजी, इनको बुरे समझो तुम ।
सट्टा-बाजी जूवाबाजी गुंडाबाजी छोड़ो तुम ॥
बदफेलों को दूर हटाओ, न्याय निगाह में राखो तुम ।
हरिजन होके भजो रामको, ॐका ध्यान लगाओ तुम ॥
सज्जन बनो सभी नर-नारी, घमंड गरूरी छोड़ो तुम ।
धर्म-कर्म की सीमा सुधारो, मानुष धर्म संभालो तुम ॥
मुंहजोरी और मान-बड़ाई भारत से करदो बाहर ॥३
बैरभाव की छोड़ भावना, रार मुकद्दमा छोड़ो तुम ।
वृथा खरचा करना छोड़ो, धन कमाना सीखो तुम ॥

बीड़ी सिगरेट और तंबाखू, इनका पीना छोड़ो तुम ।
देख-देख पग धरो धरापै, कभी न ठोकर खाओ तुम ।।
जो मैंने बातें गाईं भजन में, हरदम राखो हृदय तुम ।
बेड़ा पार होय तुम्हारा, घट विश्वास जमाओ तुम ।।
नर-नारी मिल होश संभालो, झगड़ा करना छोड़ो तुम ।
'जीवाराम' भारत सेवा में, गांधी महात्मा देखो तुम ।।
ऋषि दयानन्द ने भारत में किया समाज सुधार ।।४

दोहा

आग लगी असमान में, जल जल पड़े अंगार ।
सन्त न होते जगत में, झुलस मरता संसार ।।

भजन राग पद

धर्म पर डट जाना कोई बड़ी बात नहीं है ।।टेक
धर्म पै डटे भगत प्रहलाद, पिता ने दिया अग्नि में डाल ।
जले तो जल जाना कोई बड़ी बात नहीं है ।।१
धर्म पर डटे हरिश्चन्द्र ज्ञानी, बिकगये आप कंवर और रानी।
बिके तो बिकजाना, कोई बड़ी बात नहीं है ।।२
धर्म पै डटे मोरध्वज वीर, धर्म पै दियो कंवर को चीर ।
चीर तो चीर जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ।।३
भजन यह कहता दास कबीर, धर्म पे डटो हटो मत बीर ।
मुक्ति-पद मिल जाना, कोई बड़ी बात नहीं है ।।४

भजन राग पद

दान करने का मजा, दुनिया में जिसको आगया ।
जो कुछ उसके हाथ लगा, धनमाल को लुटा गया ।।टेक
आया मजा हरिश्चन्द्र को, दान सर्वस कर दिया ।
फिर भी कमती देखके, चांडाल के घर बिक गया ।।१
बलि को आया मजा, वसुधा बावन को सौंपदी ।
तीन चरणों में हुई कम, पीठ को नपवा गया ।।२

रंतिदेव एक राजा हुआ, दानी बड़ा संसार में ।
राज पाट सब दान कर, जंगल के बीच चला गया ।।३
छप्पन करोड़ लुटा दिया, एकदम महता नरसी ने ।
फकत माला रखी, हरि के भजन में लग गया ।।४
तिलोकचन्द साहूकार ने, दान का लूटा मजा ।
निर अभिमान सेवा करी, सन्तों को सर्व खिला गया ।।५
'अचलूराम' कहां तक कहे, दानी हजारों होगया ।
जिसने दान किया नहीं, वो खाली हाथों चला गया ।।६

भजन राग आसावरी

मन तू मत कर धोखा हमसे ।
बार बार रोको तोय हरदम, झीणों होके निकसे ।।टेक
भक्ति बेल बड़ी म्हारे उर में, पकड़ पात सब नासे ।
विषय बेल से है तू राजी, जीव जाल में फांसे ।।१
क्रूर कपट छल मल के मांही, खावे फल पत्ता से ।
धर्म अधर्म कछु नहीं देखे, कूद पड़े धमका से ।।२
सत का खूंटा है मजबूती, बांधूं ज्ञान रसा से ।
बन्धण में आता नहीं जालिम, सदा आंतरे भासे ।।३
हमने सतगुरु पूरा मिलिया, प्रीत लगी चरणों से ।
'जीवानन्द' पोल तेरी जाणे, नहीं छुटता मन तुम से ।।४

भजन राग पद

मान मान बेईमान मन तोय मान्या सरसी रे,
मन तू मान रे ।।टेक
ये संसार ओस को मोती, धूप पड़े ढल जासी रे ।
मृग तृष्णा का नीर भलां, थारे हाथ आवे रे ।।१
यह संसार आवे और जावे, आंखां आगे दीखे रे ।
यह तो बातां हैं सुपने की, गया न आवे रे ।।२

जमराज का दूत जबर है, फांसो लेकर आसी रे ।
उनके आगे जोर न चाले, भुजा पकड़ ले जासी रे ।।३
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, दुनिया कपटभरी है रे ।
अब तो शरणों ले सत गुरु को, लेयाई सरसी रे ।।४

भजन राग पद

मैं तो उन सन्तन का हूं दास, जिन्होंने मन मार लिया ।।टेक
आपा मार जगत में डाले, नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं, संत कहो चाहे राम ।।१
मन मारे तन बस किया, उर अन्दर भरपूर ।
बाहर तो कुछ सूझत नाहीं, अन्दर भभकत नूर ।।२
प्याला पिया निज नाम का, छोड़ जगत का मोह ।
ऐसा सतगुरु कीजिये, सहज ही मुक्ति होय ।।३
'नरसी' ने सतगुरु भिल्या, दिया अमीरस पाय ।
एक बूंद समुद्र में मिलगी, कांई करे जम राह ।।४

भजन राग पद

मन आजा रे राम अभोला में,
खोदियो जमारो जामर झोला में ।।टेक
साधु सन्त की बन्दा संगत करलें, गुरुजी मेटेगा सब दुखड़ा नैं।।१
तैरनो चाहे तो बंदा आजा भजन में, गुरुजी तारेगा इन झगड़ा में।।२
जगत जाल से बंदा अलग रहीजे, हरष होजावे हरि के भजना में।।३
कहे 'मीराबाई' गिरधर नागर, चित लाग्यो गुरु के चरणा में।।४

दोहा

राम झरोके बैठ के, सबका मुजरा लेत ।
जैसी जिनकी चाकरी, तैसा ही फल देत ।।

भजन राग पद

सुदामा जी नै देखताई, राम जी हंसे ।।टेक
फाटी पगड़िया पगा उबांणा, चलते चरण घसे ।।१

बालपने का मित्र सुदामा, अब क्यों प्रभो दूर बसे ।।२
कहा भौजाई रसाल पठाई, तां तदुलन तीन पसे ।।३
कहां गई मेरी टूटी टपरिया, हीरा मोती जवाहर कसे ।।४
कहां गई मेरी गऊ बछिया, दरवाजा नें हाथी पसे ।।५
कहे 'मीराबाई' गिरधर नागर, हम तो प्रभो शरण तेरी बसे।।६

भजन राग पद

सुन नारद मेरा सन्तों से अन्तर नाहीं ।
जो सन्तों से अन्तर राखे वा घर मूल सदाई ।।टेक
माया मेरी अरध शरीरी, सो सन्तां की दासी ।
अड़सठ तीर्थ सन्त चरण में, करोड़ गया और कासी ।।१
सन्त जिमावे सामल जीमो, मोये सन्त की आसा ।
जहां जहां संत मेरा भजन करत है, वांहो वांहो मेरा बासा।।२
सन्त चले आगे उठ ध्याऊं, सन्त जागे मैं सोऊं ।।
जो कोई मेरा सन्त सतावे, जड़ा मूल से खोऊं ।।३
मोय भजे भजूं मैं उनको, सो मेरे मन भावे ।
कहत 'कबीर' संत की महिमा, आप हरी मुख गावे ।।४

भजन राग पद

धर्मराय आदर करें, कोई म्हारे संत पधारे ।
वा का तो दर्शन करूं, वही म्हारो जनम सुधारे ।।टेक
अच्छा करूं बिछावणां, चित चरणों में ल्याऊं ।
देवण लायक कुछ नहीं, अपना शीश नवाऊं ।।१
विध-विध से सेवा करूं, अरु पकवान बनाऊं ।
कंचन थाल परोस के, अपने हाथ जिमाऊं ।।२
ज्यां घट नौबत नाम की, सो घट खाली नाई ।
आठ पहर लाग्या रहे, गुरु चरणों के माहीं ।।३
थाह नहीं दरियाव को, भर ल्याऊं जल झारी ।
'सूरदास' की बिनती, उतरे भव पारी ।।४

दोहा

साधू माई बाप है, साधू भाई बन्ध।
साध मिलावे राम से, काटे जम का फंद ॥

भजन राग आसावरी

साधो भाई सत्संगत गंग धारा।
जो कोई नहावे पीवे प्रेम जल, सफल होय जमारा ॥टेक
नहाया पाप धुये सब मनका, छूटे मैल विकारा।
पीवत प्राण परम सुख पावे, मिट जाय संकट सारा ॥१
सत्संगत भव त्यारण गंगा, पतित पावन धारा।
संसे शोक मिटे सब दुविध्या, उपजे आनन्द अपारा ॥२
सत्संगत का महात्म भारी, वेद वेदांत पुकारा।
कर सत्संगत अनंत जन तर गये, भवसिंधु से पारा ॥३
सत्संगत सम कोई तीर्थ नहीं, देखो समझ विचारा।
कहे 'जीवाराम' सत्संग सत्य गंग है, करोड़ों पापी तारा ॥४

भजन राग आसावरी

साधो भाई सत की संगत सुख धारा।
जो कोई आवे इन साध की संगत में हो जावे भव जलपारा ॥टेक
सत की संगत में भाव प्रेम जल, करते कलोल अपारा।
लेके बचन अंग अपनावे, नाम वचन तत सारा ॥१
एक बृक्ष खड़ा भूमि पै, तरवर सुधरे सारा।
उनमें वास सुगन्धि आवे, चन्दन हो जावे सारा ॥२
लोहा चोट सहै निज घन की, बणता कसी कुदारा।
पारस अंग संग ज्यां के लागे, कन्चन हो जावे सारा ॥३
घिस्यां फिरे पेट भूमि पै, कर्म कीट का भारा।
ले सिर भृंग घाल टपारे, शब्द सुनावे गुंजारा ॥४

अमृत बूंद पड़े आसोजा, बरसे अमृत धारा।
सीपां में मोती सर्प मुख बिष है, बरतन जैसा वेहारा ॥५
कर सत्संग हरी रंग लाग्या, भाग्या भर्म अंधियारा।
'आसा भारती' संगत नित गंग है, ऊंच नीच सब त्यारा ॥६

भजन राग ध्रुपद

ऊधो माधो को समझावे, जग में सत्संग बड़ी बतावे ॥टेक
सत्संगत से प्रीत लगावे, करोड़ विघ्न टल जावे।
जैसे आग पड़े दारू में, पापों का पहाड़ उड़ावे ॥१
तप का वर्ष हजार बतावे, सत्संग लव कहावे।
कांटे घाल बराबर तोली, सत्संग अधिक कहावे ॥२
साधु संगत बिना गति न तरन की, भावे ज्यां फिर आवे।
जैसे लोहा तप अग्नि में, बिन तप नरमी आवे ॥३
सन्त समागम हरि कथा, यह मेरे मन भावे।
कहे 'कबीर' करे कोई सत्संग, तुरत मुकत हो जावे ॥४

भजन राग पद

हरी ने नइया बनाई, सत्संग की ॥टेक
ध्रुव बैठे प्रह्लाद बैठे, बैठे हरिचन्द से दानी।
वा नौका में बैठे मोरध्वज, संग में सदन कसाई ॥१
नामदेव और धन्ना बैठे, विषकर्मा संग माई।
वा नौका में बैठी भिलनी, संग में मीराबाई ॥२
अजामेल और गणिका, सूरदास संग माहीं।
वा नौका में बैठे कबीरा, संग में सैना नाई ॥३
जो जो भगत नौका में बैठे, भव से पार तर जाई।
'तुलसीदास' आस रघुबर की, नइया को पार लगाई ॥४

भजन राग आसावरी

हरी ने भजे जकां रो सांई, मिट गया भर्म कुबध।
जाहांरा लक्षण, कुल को कारण काई ॥टेक

भगति में वर्ण छतीसौ ही त्यारे, गुरु मुखी सन्ता पाई ।
भूल्या जीव भटकता डोले, जिनको थोगा नाई ।।१
सतयुग में सरीयादे कुम्हारी से आज्ञा प्रह्लाद जी ने पाई ।
मार्जारो का बच्चा उभारे, अगन झाल के माई ।।२
भुध्या आंम भेज्या दुरजोधन, घर पैंडवा के ताईं ।
पंडवां की प्रीत राम से लागी, छिन्न में आंम लगाई ।।३
राणा जी गुरु करे पंडित ने, कुल ऊंचा के मांई ।
कुल ऊंचा ज्यां सुमरण नीचा, सदा ही नीच कहाई ।।४
मीरा गुरु रैदास जी नै कीना, कुल नीचा के मांई ।
कुल नीचा ज्यां का समरण ऊंचा, सदाई ऊंच कहाई ।।५
हरीचन्द गुरु केंचा जी ने करिया, कुल नीचे के मांही ।
कुल नीचा ज्यां का सुमरण ऊंचा, सदाई ऊंच कहाई ।।६
आगे सन्त अनेक जन त्यारा और त्यारो मारो सांई ।
कहे 'रैदास' सबल ज्यां की सेवा, सांचो श्याम सदाई ।।७

भजन राग पूर्वी

समझ मन मेरा, भक्ति को प्रमाण ।।टेक
सैन सदन अजामिल नामदे, करमां कुबरी वैश्या जाण ।
हरी भक्ति से भये उजागर, पाया पद निरवाण ।।१
वेद व्यास नारद अक्षत मुनी, पारासर भंगन सै जाण ।
बैल से गण से गधी से गौतम, गोकर्ण गऊ से आण ।।२
बालमीक रैदास कबीरा, नाभा भक्ति लीनी जाण ।
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण, विदुर जी लीनी मौजां माण ।।३
जिन जिन पन्थ भगत पद पकड़े, उनको उभरा जाण ।
'जीवाराम' आनन्द पद भेला, दरस्या मुकत निसाण ।।४

भजन राग सोरठ

राम रंग गहरो लाग्यो रे, भजन रंग गहरो लाग्यो रे ।
माहाने सत गुरु मिला सुजान, भर्म सब मनको भाग्योरे ।।टेक

असंख जुगां की नींद में, सोता जीव भरपूर,
सतगुरु मारी शब्द की, भई नींद सब दूर ।
माहिलो बड़देणी जाग्यो रे ।।१
नाभ दुवा दस त्रकुंटी गगना प्रकट सब घट नूर,
जोत दसों दस जागहिं, उगियो अनुभव सूर ।
भजन गढ़ इन विध थाग्यो रे ।।२
सुरत पीव मेला भया, सुन महल की सेज,
उड़े फंवारा नाम का, परम पुरुष का तेज ।
सखी ने प्रीतम पाग्यो रे ।।३
कई जनम का पुन्न सै, भयो समुन्दरां सोर,
कृपा भई गुरु देव की, कंचन भयो शरीर ।
'जीवा आनन्द' घर पाग्यो रे ।।४

भजन राग चलती चौपाई मेवाती ताल

मैंने अनुभव तोप झुकाई, किला तेरा छण में तोडूंगा ।।टेक
बेहद धार तोप धरवाई, भर्म किले की धूल उड़ाई ।
मोह दल फौज की करी सफाई, बुर्ज अब भय की तोडूंगा ।।१
चलते तोप गगन गरणाई, चौदह लोक परे चलत हवाई ।
काल बली को दिया भगाई, कोट अब हद का तोडूंगा ।।२
चलती तोप करे निस्तारा, मेरु मंडल तोड़ दिया सारा ।
कुबुधि कंस को धर-धर मारा, दर्जा अब सबका ही तोडूंगा ।।३
अटल बादशाही अब हम पाई, आनन्द रूप में रहा समाई ।
'जीवाराम' ये कथ के गाई, हाथ सतगुरु ने जोडूंगा ।।४

भजन राग चौपाई मेवाती ताल

मैंने धरी तोप भरपूर, किला तेरा किस विधि ठहरेगा ।।टेक
अभिमान राव बलकारी, संग में मोह दल फौजा भारी ।
धर-धर मार भगाई सारी, झंडा निज पद में रोपूंगा ।।१

कर्म दल फौज किला के माई, भर्म बादशाह की फिरे दुहाई।
सबको दिया छण में भगाई, किला अब पल में तोडूंगा ।।२
इस विधि किला तोड़ दिया बंका, अभय जीत कालगा दिया डंका।
काल बली की मेटदी शंका, निशाना भय का फोडूंगा ।।३
भदुराम जी सतगुरु पाई, 'जीवाराम' ये कथ के गाई ।
चौदह लोक परे चक्कर चलाई, पता अब सबका तोडूंगा ।।४

भजन ठेका तीन ताल

ऐवा ऐवा ज्ञान विचारिये, सुणो भाई आत्म ज्ञानी ।
सत्गुरु ने शब्दा परखिये ।।टेक
संस्कार से सत्गुरु मिल्या, मिल गया काया केरा बासी ।
सूक्ष्म वेद दीपक जोया, ज्या से बुद्ध प्रकाशी ।।१
पांच तत्वरी गुदड़ी, मांही पवना का तागा ।
चित्त मन बुद्धि भेला हुवा, रस इन्द्रियां लागा ।।२
जीव पीव भेला हुआ, दोनों शून्य केरा बासी ।
तत तुरिया साखा भरे, कट गई जम केरी फांसी ।।३
जाग्रत देश सुहावना, सब जग रंचनारा भोगी ।
स्वप्न सुषुप्ति मेट के, निर्भय झूले एक जोगी ।।४
आदि अन्त चौथी अवस्था, गुरु बिन कौन लखावे ।
'रूड़दास' उण देशरा, भोर जन्म नहीं आवे ।।५

भजन राग पद

सूक्ष्म वेद अवला पत मारग, बिन कागज बिन स्याही जी ।
गवन करो सत्गुरुजी ने बूझो, बिन सत्गुरु गम नाहीं जी ।।टेक
बावन शुषमा वेद रचाया, उपत खपत दो स्याई जी ।
धरण गगन परले पत मार्ग, ज्याने अधर सदर ठहराई जी ।।१
चार पुरुष बेअंगा कहिये, बेअंग तीन नारी जी ।।
ज्ञानकरोऔर भजन विचारो, सातों में देह कौन धारी जी ।।२

चार राम चौबीस तत्त्व हैं, ज्यापे अविगत माई जी ।
जिनके आगे स्वप्न सुषुप्ति, जिन पर रचना राई जी ।।३
पल-पल में अवतार धारिया, वहां में लिखता वोई जी ।
ये लिखता का पार न पाया, क्यों भटको म्हारा भाई जी ।।४
धर सूक्ष्मा दुरबीन लगाई, लाल नजर जद आई जी ।
गुरु बिहारी कहे पद 'रूड़ा' पारख बिरला पाई जी ।।५

भजन राग आसावरी

बंगला यह मेरे मन भाया, जाली झरोखा महल महलिया,
पचरंग रंग ढुलाया ।।टेक
कारीगर करतार साहबो, गहरी नीम लगाया ।
भली भींत और बावन खंभा, एक सहतीर डलाया ।।१
चित्र विचित्र किया बहुभांति, तेरह खिड़की रखाया ।
खिड़की खोल देखा दिव्य-दृष्टि, सन्मुख सांई आया ।।२
रात छत्तीसों बाजा बाजे, सुन करके सुख पाया ।
सुनकर राग भया मतवारा, दुरमत दुःख बिसराया ।।३
भद्रूरामजी सामर्थ मिलिया, जिन मोय भेद बताया ।
कहे 'जीवाराम' कृपा सतगुरु की, आनंदरूप समाया ।।४

भजन राग आसावरी

बंगला भला समझ में आया, दसों दिशा माहीं फिरकर देखा
हीरा रतन जड़ाया ।।टेक
सात धात की नीम लगाई, त्रिगुण ईंट जमाया ।
दसों प्रान खंभ धर दीना, चेतन छान छवाया ।।१
दस दरवाजा चौदह चौकी, अनुभव आसन लगाया ।
अजब रास रचे बंगला में, सन्त तमासे आया ।।२
जगह-जगह पर जाली झरोखा, बारी अनेक रखाया ।
चाँद सूरज दो लगी चिरागी, संयम उजाला छाया ।।३

जो कोई इस बंगला को खोजे, मनवांछित फल पाया।
'जीवाराम' पूर्ण ईश-कृपा, सदा आनन्द सुख पाया ॥४

भजन राग पूर्वी वा कशुरी ताल रसिया

बंगला सचमुच मजेदार, जिसमें जड़ी है लाल जवाहर ॥टेक
इस बंगला में अजब चौक है चौदह बने द्वार।
द्वार-द्वार पै फिरके देखो, ठाड़े पहरेदार ॥१
जाजम डार जुगत से बैठे, सागे सरजन हार।
कर्म गति का खेल रचाया, नाचे सब संसार ॥२
जोगी जती संन्यासी मुनि, कीन्हों बहुत विचार।
कोई-कोई सैर करे बंगला की, उतरे भव जल पार ॥३
भद्रूरामजी भेद बताओ, जद पायो दीदार।
'जीवाराम' कृपा सतगुरु की आनन्द रूप अपार ॥४

भजन राग पूर्वी वा कशुरी ताल

बंगला देखा नजर पसार, जिसमें आनन्द रूप अपार ॥टेक
अजब झरोखे आप बिराजें, सागे सिरजन हार।
आपा उलट आपमांहि देखो, अरस परस दीदार ॥१
बिना बादली अमृत झरता, लग रही एकण धार।
पीवत प्राण प्रेम सुख पावे, उतरे भव जल पार ॥२
आसण मांड़ जुगत से बैठो, रोको सभी द्वार।
सम दम सार सरोदे ल्यावो, डाटो सुरता नार ॥३
भद्रूरामजी सतगुरु मिल्या, मेट भर्म अन्धार।
'जीवनराम' कृपा सतगुरु की, सहज कियो निस्तार ॥४

भजन राग पहाड़ी

हरि की माया का भेद, कोई नहीं पाता ॥टेक
पल में राजा करे भिखारी, महा प्रलय कर देता।
आग लगाके बाग लगादे, तुरन्त हरा हो जाता ॥१

ब्रह्म वेद अन्त कई रचिया, बांच-बांच थक जाता।
शायर सन्त महिमा नित गावे, गाय-गाय थक जाता ॥२
भवसागर की भंवर-धार में, गाफिल गोता खाता।
सब जग डूब रहा भव जलमें, कोई कोई मुक्ति पाता ॥३
सदाचार सत सुकृत जग में, ये ही अमर हो जाता।
'जीवानन्द' आनंद के पुष्प, होय मगन बरसाता ॥४

भजन गौड़ मल्हार

सकल हंस में राम हमारा राम बिना कोई धाम नहीं।
खंड ब्रह्मांड जोत का बासा, रामने सुमरो दूजा नहीं ॥टेक
तीन गुण पर तेज हमारा, पांच तत्व पर जोत जले।
उनका उजाला चौदह भुवन में, सूरत दौड़ असमान चढ़े ॥१
नाभि कमल पर निरखत लेना, हृदय कमलमें फिरे मनी।
त्रकुटी महलकी खिड़की खुलगी, गगन महलमें आवाज पड़ी ॥२
हीरा मोती लाल जवाहर, पदम पदार्थ पुर्षोन्नति।
सांचा मोती निरखत लेणा, श्याम धणीसे म्हारी धुन लगी ॥३
हरिजन है सो घट में हरो, बाहर शहर में फिरो मती।
गुरु प्रताप बने 'नानकशाह' बोल है और दूजा नती ॥४

भजन राग गजल कब्बाली

हम सेवक प्रभो पुकार रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे।
प्रभो चरणों में सिर धार रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ॥टेक
प्रभो घट घट के बासी तुम हो, इस दुखके दुखनासी तुमहो।
अब प्रभो का हम पर ध्यान रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ॥१
तेरा कोई भेद नहीं पाता है, संसार तुम्हीं को न्याता है।
सब कृपा दृष्टि बलिहार रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ॥२
तुम पाप धर्म लिख लेते हो, नरों को जीवन तुम देते हो।
मम बुद्धि शुद्धि हर बार रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ॥३

भगतों पर करते प्यार सदा, शिशु सेवक सुन्दरलाल सदा।
मेरा भी कुछ ख्याल रहे, ओंकार हरे ओंकार हरे ।।४

भजन पूर्वोक्त (चार)

यह ओ३म् अक्षर परब्रह्म सदा, सब नामों का सितारा है।
ओंकार बिना सिद्ध होत नहीं, तप योग यज्ञ आचार है ।।टेक
यह सकल काम सिद्ध-दाता, प्रभु ने निज नाम निकारा है।
ओंकार से निकले मन्त्र सभी, गायती आदि सारा है ।।१
धर्म विद्या चतुर्दश है जग में, सब ओंकार बिस्तारा है।
वर्ण-मंत्र सभी ओ३म्से निकले, ओ३म् करके होत उचारा है ।।२
ओंकार सकल घट व्यापक है, सब नाम रूप आधारा है।
इन्हें जान भजे मनमांहि मुनि, तिन्हें प्राणोंसे अति प्यारा है ।।३
ओ३म् मंत्र का है अधिकार उसे, जिसने ब्रह्मचर्य धारा है।
'अचलराम' तभी कल्याण होवे, ये वेद वेदांत पुकारा है ।।४

भजन राग पूर्वोक्त चार

धिक है जग में जीना तिनका, जिन राम का नाम विसारा है।
जिन नाम प्रताप सिला तर गई, तिस नाम को नाहिं संभारा है ।।टेक
ले रामनाम कपि भालु तरे, पशु योनि जिन्होंने धारा है।
नर जन्म पाय बिसराय राम, जिन्हें धिक् बारम्बारा है ।।१
नल नील गीध बायस पक्षी, भज राम नाम हुये पारा है।
देवों दुर्लभ तन पाय भूले, तिनका जग धूल जमारा है ।।२
महापापी चाण्डाल तिरे कई राम नाम का पकड़ सहारा है।
जो होय कुलीन नहीं राम भजे, उस जैसा कौन गंवारा है ।।३
यह पतित पावन नाम जग में, इस नाम से अधम उधारा है।
'अचलराम' तारक मंत्र है यह, इस नाम की महिमा अपारा है ।।४

भजन राग पूर्वोक्त चार गजल कव्वाली

धन्य है जग में जीना तिनका, निज तत्व जिन्होंने जाना है।
पंचकोश अतीत निज आत्मा को, सत् चेतन रूप पिछाना है ।।टेक

इस जग में पंथ अनेक चले, मत भेद जिन्हों का नाना है।
मजहबी झगड़ों में जीव फंसे, सब अपनी अपनी गाना है ।।१
सच्चिदानन्द हैं जीव यह, सब ब्रह्म के हंस कहाना है।
निज स्वरूप भूल अविद्या में फंसे, पंच कोशों बीच उलझाना है ।।२
बिन स्वरूप लख नहीं भर्म मिटे, नहीं छूटे आना जाना है।
जिसने निज तत्व जान लिया, तिसका सब भर्म बिलाना है ।।३
वह जीवन मुक्त विचरे जग में, पंच कोशों पर ठहराना है।
'अचलराम' है जीवन मुक्त सदा, जीतेजी ब्रह्म समाना है ।।४

भजन राग गजल कव्वाली

जय राम हरे सुख धाम हरे, भगवान् हरे भगवान् हरे।
जय जय प्रभो दीनानाथ हरे, भगवान् हरे भगवान हरे ।।टेक
तुमने ध्रुव को दर्शन दीना, अरु गजराज बचा लीना।
भगतों का संकट टार दिया, भगवान् हरे भगवान हरे ।।१
जब भगत प्रह्लाद को सताया था, तब नरसिंह रूप दिखाया था।
दुष्टों का तुमने नाश किया, भगवान् हरे भगवान् हरे ।।२
तुम पतित पावन बनवारी, कृपा करो हे त्रिपुरारी।
मुझको प्रभो दर्शन आन दिये, भगवान् हरे भगवान हरे ।।३
प्रभो बहुत से पापी तारे हैं, 'सुन्दर' कवि शरण तुम्हारी हैं।
क्यों मुझसे नेह बिसार दिया, भगवान् हरे भगवान् हरे ।।४

भजन राग धमाल ताल

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है ।।टेक
हमारी मात की करनी, सकल दुनिया से न्यारी है।
विमुख जिन राम से कीना, ऐसी जननी हमारी है ।।१
लगी रघुवंश में अग्नी, अवध सारी उजारी है।
भरत सिर लोट धरनी पर, यही करता पुकारी है ।।२
सुना जब तात का मरना, मानो बरछी सी मारी है।
पड़ा व्याकुल हुआ बेसुध, दृगों से नीर जारी है ।।३

धरूं में ध्यान सुरता का, मुझे तृष्णा जो भारी है।
पड़ूं रघुनाथ के पायन, यही 'तुलसी' पुकारी है ॥४

दोहा

राधा कृष्ण सब कहें, आक ढाक और कैर।
तुलसी या बृज में है क्या, राम नाम से बैर ॥

भजन राग परज ताल

दिल तो मेरा हर लिया, गोविन्द माधव श्याम ने।
कृष्णा कृष्णा मैं पुकारूं, तेरे दर के सामने ॥टेक
बंशी वाले अपनी वंशी, तू सुनादे आन कर।
तेरी चरचा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥१
खम्भ से प्रह्लाद को, तुमने बचाया था प्रभो।
द्रोपदी की लाज राखी, कौरव दल के सामने ॥२
मेरी ख्वाहिश है फकत, मोहन तेरे दीदार की।
इस लिये धूनी रमाई, तेरे दर के सामने ॥३
कृष्ण दर्शन अब दिखा दे, 'सुन्दर' को आन कर।
हम तुम्हारे सामने हों, तुम हमारे सामने ॥४

भजन राग पद

बड़े प्यार से भजना प्यारे, भगत बछल भगवान् रे।
क्या जाने किस वेश में, श्यामा मिल जाये अनजान रे ॥टेक
सुख दुःख ही जीवन के संगी, कर्मों की बेड़ी है जंगी।
मोह ममता के चक्कर से तू, करले अब कल्यान रे ॥१
तप नेह धर्म में राखो श्रद्धा, पाप कर्म से मुंह मोड़ ले बंदा।
श्याम भजन में रखना मनवा, छोड़ सभी अभिमान रे ॥२
संग तेरे कोई न जावे, कर लेगा सो फल पावे।
घोर नींद में क्या तू सोवे, मनवा है किसका महमान रे ॥३
जग जंजाल ने घेरा डाला, मूर्ख मन मत फिर मतवाला।
लालच की पट्टी से आंखों, बांध रहा अज्ञान रे ॥४
पंचकोश अतीत निज आत्मा को, सत्चेतन रूप पिछाना है ॥टेक

'राधेश्याम' का कहना मानो, सत्य अहिंसा को उर आनो।
तब ही आवेंगे श्याम बिहारी, दुखियों के दरम्यान रे ॥५

भजन राग पूर्वोक्त चार

[illegible]र्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे, जगदीश हरे।
[illegible]ासों के स्वर झनकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥टेक
[illegible]ाकाश हिमालय सागर में, पृथ्वी पाताल चराचर में।
[illegible]ह मधुर बोल गुञ्जार रहे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥१
[illegible]ब दया दृष्टि हो जाती है, जलती खेती हरियाती है।
[illegible]त आस पै जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥२
[illegible]ख दुःखों की चिंता कोई नहीं, भय है विश्वास न जाय कहीं।
[illegible] ये न लगा यह तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥३
[illegible]न हो करुणा के धाम सदा, सेवक है 'राधेश्याम' सदा।
[illegible] इतना सदा विचार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥४

भजन राग पद

जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती पिता महादेवा ॥जै०
एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिंदूर सोहै मूसे की सवारी ॥१
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥२
मोदक को भोग लगे सन्त करे सेवा।
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ॥३
दीनन की लाज राखो, शम्भु पुत्र वारी ॥
मनोरथ को पूरा करो, जायें बलिहारी ॥४

दोहा

तीर्थ नहाये एक फल, सन्त मिले फल चार।
सत्गुरु मिले अनेक फल, कहै कबीर विचार ॥

भजन राग धुन कव्वाली

चेत है तो चेत प्राणी, यह अवसर भी जा रहा है ।।टेक
गर्भवास में बचन भजन का, वह भी बचन विसारा है ।
हरि से आज्ञा मांग भजन की, पीछे बाहर आया है ।।१
तन सुन्दर वो बालकपन में, माता प्यार सवाया है ।
बड़ा भया तब आई जवानी, कर्मों में लिपटाया है ।।२
तीन अवस्था भई बिरानी, हरि से ध्यान लगाया है ।
पूंजी थी सो सारी खोदी, फिर मूर्ख पछताया है ।।३
झूठी जग की माया कहिये, झूठा जाल पसारा है ।
यह माया निरंजन की कहिये, मेरा मन बहकाया है ।।४
भदुराम जी सत्‌गुरु दाता, हमको आन चिताया है ।
'जीवनराम' सदा गलताना, छन्द बनाकर गाया है ।।५

भजन राग मंगल ताल प्रभाती

जाग जाग नर चेत बन्दा, क्या सोवे नर चेत रे ।।टेक
जागत है तो ऐसा जागो, ज्यूं धुरुजी प्रहलाद रे ।
धुरु नै मिलगी अचल पदवी प्रह्लादा नै राज रे ।।१
के जागे कोई रोगी भोगी के जागे कोई चोर रे ।
के जागे कोई सन्त पियारा, ज्याकी लगी राम से डोर रे ।।२
तन की सराय में मन है मुसाफिर दो दिन का विश्राम रे ।
तन का चोला होय पुराना, लगे यमों का दाव रे ।।३
राम भजे सो हंस कहावे, कुबुधि क्रोध नै त्याग रे ।
रामानन्दा का बने 'कबीरा' उठ भजो प्रभात रे ।।४

भजन राग प्रभाती

जाग सखी अब हुवा सवेरा, तेरे घर प्रभो आयारी ।।टेक
काशी ढूंढी मथुरा ढूंढी, वृन्दावन सब सारा जी ।
जिसके कारण फिरी भटकती, सो तेरे घर आया री ।।१

कैलाश से शम्भु आया संग में नादो ल्याया री ।
पारवती ज्या के संग बिराजे, भैरों नाद बजाया री ।।२
ब्रह्मपुरी से ब्रह्मा आये, संग सावित्री ल्याया री ।
चारों वेद द्वारे ठाड़े, अनहद बांच सुनाया री ।।३
राम आये लक्ष्मण आया, संग में सीता ल्याया री ।
हनुमत जैसा पायेगा संग में, दर्शन मला सवाया री ।।४
उगा भान भया उजियाला, रवि ने किरण पसारी री ।
'सूरदास' प्रभाती गावे, हरि चरणों चितधारा री ।।५

भजन राग भियाणा

जागो-जागो श्री गुरुदेव, सूरज राजा उदित भयो ।
तेरे द्वारे खड़े सब दास, दर्श बिना तरसे जीयो ।।टेक
अब रात गई सब बीत, सवेरो भोर भयो ।
इत चांद गयो है आंत, तारों का तेज गयो ।।१
जागे बन पक्षी और मोर, पपैया ने शोर कियो ।
जागे जगके सब नरनार, संपत सुत को दान कियो ।।२
बिन दर्शन दुःखी प्राणी, विरह ने जोर कियो ।
दो दर्शन दीनानाथ, हुलस रह्यो बहुत हियो ।।३
मेटो भर्म विकार अन्धकार, कष्ट मैंने बहुत सह्यो ।
'जीवादास' चरण के पास, हमारो शुद्ध भयो ।।४

भजन राग भियाणा

अब जागे श्री गुरुदेव, आनन्द सब घट में भयो ।
कर दर्शन नर-नार, चरण में शीश दियो ।।टेक
भागे भ्रम विकार अन्धकार, पाप सब प्रलय गयो ।
अब खुल गया मुक्ति द्वार, कष्ट सब दूर भयो ।।१
कई जनम को पुण्य प्रकट, सखी आज भयो ।
छूटे जनम-मरण भय दूर, अभय गुरुदेव कियो ।।२

धन्य हो बारम्बार अपार, सत्गुरु योग भयो ।
घट ज्ञान कला छिटकाय, सूरज प्रकाश भयो ।।३
तम रजनी भई नष्ट, चेतन सुख स्वरूप थयो ।
'जीवादास' मिटी यमत्रास, अमर यश गुरुदेव लियो ।।४

भजन राग खम्मास

अब तो समझ सुहागिन सुरता नार,
लगन दीनानाथ से लागी ।।टेक
लगनी लहगो पहर सखीरी, बीती जाय बहार ।
धन जोवण है पावणा री, आवे न दूजी बार ।।१
राम-नाम को चूड़लो पहरो, प्रेम को सुरमो सार ।
नक बेसर हरिनाम को री, उतर चलोगे पार ।।२
मैं जाणी हरि मैं ठग्या री, हरि ठग ले गया मोय ।
लख चौरासी का मोरछारी, क्षण में राल्या खोय ।।३
ऐसे वर को क्यों वरे री, जो जनमे मर जाय ।
वर वरिये एक सांवरो री, अमर चुड़ो हो जाय ।।४
सुरत चली जहां मैं चली री, कृष्ण नाम झणकार ।
अविनाशी की पोल में री 'मीरां' करे है पुकार ।।५

भजन राग पद

तेरे ताईं जरा भेद दर्शाया, तेरे ताईं जरा भेद दर्शाया ।।टेक
कितना स्वांस पवन पृथ्वी का, कितना नीर नवाया ।
कितना स्वांस घट भीतर बोले, कितना अग्नि तपाया ।।१
खेचरी भूचरी अगम अगोचर, उनमुन नसा चढ़ाया ।
पांच भेद अनुभव का कहिये, किसकी बैठों छाया ।।२
पांच पेड़ अनुभव का कै, सत गुरु मोय लिखाया ।
धरन गगन असमान बीचमें, निर्भय छप्पर छाया ।।३
अनुभव ज्ञान बांच कर बैठे, अमर पट्टा लिखवाया ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सुन बिच बास बसाया ।।४

भजन राग लम्बी पद

ऐवा ऐवा ज्ञान बिचारो ब्रह्म ज्ञानी,
वेद किताब ज्या से गम न्यारी ।।टेक
चारों खानी चारों बानी, एकण बीज रची ओ सारी ।
जल थल बीच असंख जुग रचिया, धन मालिक कुदरत थारी ।।१
तीन नारी हैं, बेअंगा बिना पुरुष सेजां त्यारी ।
तीनों नारी अंकन कंवारी बालो जायो एक ब्रह्मचारी ।।२
उन बाला के रूप ने रेखा रुंड मुण्ड बालो अवतारी ।
उन बाला की खबर बरलां ने असंख जुगारो बालो होतारी ।।३
उन बाला से इतना जुग रचिया आदि अन्त जुग चारी ।
बिना पांव एक गबी चलता नौ खण्ड में बालो फिरता री ।।४
शौवनी शिकरमें कुटिया बनाई उन कुटिया में बालो तपतारी।
घंटा शंख पखावज बाजे बिन श्रवण सुण तार रंकारी ।।५
गुरु विशम्भर कृपा कीनो, मैं हूँ शिष्य थारो प्रण धारी ।
दो कर जोड़ 'भजन गिर' बोल्या, सुरत मोर छे जाय ठहरी ।।६

भजन राग लम्बो पद

सत गुरु दाता खरा विधाता तुम संग धुन लागी भेरी ।
लग रहो धुन शून्य में गहरी, चारों धाम किये एकसेरी ।।
कट गया कर्म भर्म सब तनका, निर्भय खेलो मौज भारी ।।टेक
सब जग रोगी कोई न निरोगी, कहो किसे लागे कारी ।
सतगुरु मेरा बन्या बैद्यजी, नाड़ी देखो तन की सारी ।।१
शब्द जड़ी मरहम मशाला, प्रेम बूंद ओषध डारी ।
सतगुरु प्याला प्याया दर्द का, देह करदी कञ्चन सारी ।।२
नौ सौ नदियां बहें घट भीतर, काया में दौड़ करे भारी ।
तलेका नीर शिखर जाय लाग्या इड़ा पिंगलाकी छबि न्यारी ।।३
गुरु विशम्भर कृपा कीनी, मैं हूं शिष्य थारो प्रणधारी ।
दो कर जोड़ 'भजनगिरी' बोला, साधु संगत ताईं देहधारी ।।४

भजन राग आसावरी

साधो भाई या बिधि तारी लागी ।
ओहं सोहं जाप अजपा ओंकार धुन छागी ।।टेक
सत गुरु मिला सैन मोय दीनो, सोती सुरता जागी ।
चित चोर को वश में कीना, मन भयो वैरागी ।।१
मूल कमल खट नाभि हृदय, कंठ त्रिकुटी थागी ।
त्रिवेनी का रंग महल में, जोत दसों दिशि जागी ।।२
कटिया कर्म भर्म सब हटिया, सुरत चली अब आगी ।
दसवां महलमें सहल कुदरत की सुरत पीव संग लागी ।।३
सूरत पीव के होगया मेला, कलह कल्पना भागी ।
कहे 'जीवाराम' हेरती बाहर, सो अपने में पागी ।।४

भजन राग आसावरी

साधो भाई सुणो निर्णय धर ध्यानां ।
ईश्वर हरे देख दिल अंदर बाहर क्यों भरमाना ।।टेक
मूल महल में धनपति देवा, खट पै ब्रह्मा बखाना ।
नाभि कमल पै विष्णु बिराजे, हृदय शिवका थाना ।।१
कंठ कमल में कला कुदरत की उलटा प्राण चढ़ाना ।
त्रिकुटी में परम जोति है, जिनका दर्शन पाना ।।२
सातों जन्म आगला सुधरे, मरम हो सो जाना ।
दसवां द्वार ईश्वर असीम पद है, तामें जाय समाना ।।३
कर नर जतन कथन सुण सांचा, जीतो आना जाना ।
कहे 'जीवाराम' कृपा सतगुरु की पाया पद निरवाना ।।४

भजन राग चौकली ताल

म्हारो भाग पूर्वलो जाग्यो, म्हारे गुरु शब्द रंग लाग्यो ।।टेक
गुरु ऐसी कृपा कीनी, ऐसी भव जल में सुध लीनी ।
म्हारो गुरु चरण चित लाग्यो, सब भ्रम जाल भय भाग्यो ।।१

गुरु ज्ञान कला छिटकाई, अब हरि हमें अन्तर नाहीं ।
म्हारो मिटो दुई को दागो, मैं सिमट एक घर आग्यो ।।२
सब जीव-जन्तु संसारा, वह डूब रहा मंझधारा ।
देखो गुरु बिना कुण जाग्यो, ज्यांके जन्म-मरण दुःख लाग्यो ।।३
मैं था बरसाती नाला, गुरु सुख-सागर में डाला ।
'जीवनराम' झखोलो लाग्यो, निज आनंद रूप समायो ।।४

भजन राग चौकली ताल

हारो भर्म जाल भय भाग्यो, म्हारे गुरु शब्द घट लाग्यो ।।टेक
दी नाला बहे समुन्दर, हरि एक रूप सब अन्दर ।
हारे बचन भरोसो आग्यो, उर अनुभव दिवलो जाग्यो ।।१
ुरु तिमिर अन्धेरा खोया, एक हीरा अनोखा जोया ।
मैं ज्यूं हरी होके जाग्यो, अब भाव अमोलक आग्यो ।।२
थी मृगा पास कस्तूरो, बिन भेद भई भव दूरी ।
तब उलट नाभि चित लाग्यो, मैं मेरा मुझ में पाग्यो ।।३
जड़-चेतन दोय ज्ञाना, गुरु समझाया कर स्याना ।
'जीवादास' शब्द रंग लाग्यो अब जन्म-मरण दुःख भाग्यो ।।४

भजन राग पंजाबी

श्री ओ३म् नाम भज भाई, श्री ओ३म् नाम भज भाई ।
संशय शोक मिटे सब मन का, भव सिंधु तरजाई ।।टेक
बड़े-बड़े ज्ञानी और ध्यानी, सबके ओ३म् नाम मनमानी ।
महिमा वेद पुराण बखानी, सरे नाम सुखदाई ।।१
असली नाम सदा सुख धारा, ओ३म् नाम से हो निस्तारा ।
सत्य बचन मान तत् सारा, नित्य नाम लवलाई ।।२
ओ३म् सुमरले हृदय प्यारा कष्ट विकार मिटे दुःख सारा ।
हटे उपाधि काल व्यवहारा, जीवत मुक्त हो जाई ।।३
'जीवाराम' ओ३म् को साखा, ब्रह्मा विष्णु और शिव बाखा ।
इनमें फर्क जरा नहीं राखा, सदा याद रख भाई ।।४

भजन राग पंजाबी

श्री ओ३म् सुमिर तत्व सारा, श्री ओ३म् सुमिर तत्व सारा।
आवागवन की संशय भागे, छूटे यम की लारा ।।टेक
निज नाम ओ३म् जग माहीं, कृष्ण कहे गीता के माहीं।
और देख वेदों के माहीं, जपो सदा ओंकारा ।।१
रोगी भोगी जोगी ध्यावे, ऋषि मुनिगण ध्यान लगावे।
ओ३म् नाम में सुरत जमावे, ओ३म् करे निस्तारा ।।२
ओ३म् सुमिर जो मुक्ति चाहवे, यम जालिम का भय मिट जावे।
भागे भरम परम पद पावे, सुरति सन्त पुकारा ।।३
'जीवनराम' ओ३म् भज भाई, जन्म सफल होवे जग माहीं।
सत्य वचन मानो चितलाई, उतरे भव जल पारा ।।४

भजन राग जिला दादरा रेखता

सुरत भर देखले, दिल में दिलदार है।
अपने में आप भूलके, क्यों फिरता बाहर है ।।टेक
प्रथम शरणा लीजिये, गुरु का जाय के।
अर्ज करो आधीन है, तन मन वार है ।।१
जो गुरु बतावे सैन बैन, ध्यान से सुने।
अभिमान सारा छोड़ के, दुई के बाहर है ।।३
आसन शुद्ध कर बैठ जा, एकांत में जाके।
अंगुलियों से सारा, रोकले द्वार बार है ।।३
ज्योति-स्वरूप श्याम वो सामने आवे।
'जीवाराम' सन्त महात्मा करते दीदार हैं ।।४

भजन राग जिला दादरा ताल

भर देखले सब में भगवान है,
पत्ते-पत्त में वो बसे रच्या जहान है ।।टेक

आकाश वायु तेज नीर वसुधा रची,
चांद और तारा रच दिया भान है ।।१
जीव योनी रचि दिया वो ठाम-ठाम है,
लख चौरासी योनि यामें चार खान है ।।२
कर बिना कर रहा सब काम काज है,
कारीगरी को देखके गुनी हैरान है ।।३
आनन्द रूप भूप वो, सबका श्याम है,
'जीवाराम' उनके चरणों में लगाया ध्यान है ।।४

●